अय्यूब

अय्यूब एक उत्तम व्यक्ति

1 ऊज नाम के प्रदेश में एक व्यक्ति रहा करता था। उसका नाम
अय्यूब था। अय्यूब एक बहुत अच्छा और विश्वासी व्यक्ति था।
अय्यूब परमेश्वर की उपासना किया करता था और अय्यूब बुरी
बातों से दूर रहा करता था। 2 उसके सात पुत्र और तीन पुत्रियाँ थीं।
3 अय्यूब सात हजार भेड़ों, तीन हजार ऊँटो, एक हजार बैलों और
पाँच सौ गधियों का स्वामी था। उसके पास बहुत से सेवक थे।
अय्यूब पूर्व का सबसे अधिक धनवान व्यक्ति था।

4 अय्यूब के पुत्र बारी—बारी से अपने घरों में एक दूसरे को खाने
पर बुलाया करते थे और वे अपनी बहनों को भी वहाँ बुलाते थे।
5 अय्यूब के बच्चे जब जेवनार दे चुकते तो अय्यूब बड़े तड़के उठता
और अपने हर बच्चे की ओर से होमबलि अर्पित करता। वह सोचता,
"हो सकता है, मेरे बच्चे अपनी जेवनार में परमेश्वर के विरुद्ध भूल से
कोई पाप कर बैठे हों।" अय्यूब इसलिये सदा ऐसा किया करता था
ताकि उसके बच्चों को उनके पापों के लिये क्षमा मिल जाये।

6 फिर स्वर्गदूतों का यहोवा से मिलने का दिन आया और यहाँ
तक कि शैतान भी उन स्वर्गदूतों के साथ था। 7 यहोवा ने शैतान से
कहा, "तू कहाँ रहा?"

शैतान ने उत्तर देते हुए यहोवा से कहा, "मैं धरती पर इधर उधर
घूम रहा था।"

8 इस पर यहोवा ने शैतान से कहा, "क्या तूने मेरे सेवक अय्यूब
को देखा पृथ्वी पर उसके जैसा कोई दूसरा व्यक्ति नहीं है। अय्यूब

एक खरा और विश्वासी व्यक्ति है। वह परमेश्वर की उपासना करता
है और बुरी बातों से सदा दूर रहता है।”

9 शैतान ने उत्तर दिया, “निश्चय ही! किन्तु अय्यूब परमेश्वर का एक
विशेष कारण से उपासना करता है! 10 तू सदा उसकी, उसके घराने
की और जो कुछ उसके पास है उसकी रक्षा करता है। जो कुछ
वह करता है, तू उसमें उसे सफल बनाता है। हाँ, तूने उसे आशीर्वाद
दिया है। वह इतना धनवान है कि उसके मवेशी और उसका रेवड़
सारे देश में हैं। 11 किन्तु जो कुछ उसके पास है, उस सब कुछ को
यदि तू नष्ट कर दे तो मैं तुझे विश्वास दिलाता हूँ कि वह तेरे मुँह पर
ही तेरे विरुद्ध बोलने लगेगा।”

12 यहोवा ने शैतान से कहा, “अच्छा, अय्यूब के पास जो कुछ
है, उसके साथ, जैसा तू चाहता है, कर किन्तु उसके शरीर को चोट
न पहुँचाना।”

इसके बाद शैतान यहोवा के पास से चला गया।

अय्यूब का सब कुछ जाता रहा

13 एक दिन, अय्यूब के पुत्र और पुत्रियाँ अपने सबसे बड़े भाई
के घर खाना खा रहे थे और दाखमधु पी रहे थे। 14 तभी अय्यूब
के पास एक सन्देशवाहक आया और बोला, “बैल हल जोत रहे थे
और पास ही गधे घास चर रहे थे 15 कि शबा के लोगों ने हम पर
धावा बोल दिया और तेरे पशुओं को ले गये! मुझे छोड़ सभी दासों
को शबा के लोगों ने मार डाला। आपको यह समाचार देने के लिये
मैं बच कर भाग निकला हूँ!”

16 अभी वह सन्देशवाहक कुछ कह ही रहा था कि अय्यूब
के पास दूसरा सन्देशवाहक आया। दूसरे सन्देशवाहक ने कहा,
“आकाश से बिजली गिरी और आपकी भेड़ें और दास जलकर
राख हो गये हैं। आपको समाचार देने के लिये केवल मैं ही वच
निकल पाया हूँ!”

17 अभी वह सन्देशवाहक अपनी बात कह ही रहा था कि एक और सन्देशवाहक आ गया। इस तीसरे सन्देशवाहक ने कहा, “कसदी के लोगों ने तीन टोलियाँ भेजी थीं जिन्होंने हम पर हमला बोल दिया और ऊँटो को छीन ले गये और उन्होंने सेवकों को मार डाला। आपको समाचार देने के लिये केवल मैं ही बच निकल पाया हूँ!”

18 यह तीसरा दूत अभी बोल ही रहा था कि एक और सन्देशवाहक आगया। इस चौथे सन्देशवाहक ने कहा, “आपके पुत्र और पुत्रियाँ सबसे बड़े भाई के घर खा रहे थे और दाखमधु पी
रहे थे। 19 तभी रेगिस्तान से अचानक एक तेज आँधी उठी और उसने
मकान को उड़ा कर ढहा दिया। मकान आपके पुत्र और पुत्रियों के ऊपर आ पड़ा और वे मर गये। आपको समाचार देने के लिये केवल मैं ही बच निकल पाया हूँ।”

20 अय्यूब ने जब यह सुना तो उसने अपने कपड़े फाड़ डाले और यह दर्शाने के लिये कि वह दु:खी और व्याकुल है, उसने अपना सिर मुँड़ा लिया। अय्यूब ने तब धरती पर गिरकर परमेश्वर को दण्डवत
किया। 21 उसने कहा:

“मेरा जब इस संसार के बीच जन्म हुआ था,
मैं तब नंगा था, मेरे पास तब कुछ भी नहीं था।
जब मैं मरूँगा और यह संसार तजूँगा,
मैं नंगा होऊँगा और मेरे पास में कुछ नहीं होगा।
यहोवा ही देता है
और यहोवा ही ले लेता,
यहोवा के नाम की प्रशंसा करो!”

22 जो कुछ घटित हुआ था, उस सब कुछ के कारण न तो अय्यूब ने कोई पाप किया और न ही उसने परमेश्वर को दोष दिया।

2

शैतान द्वारा अय्यूब को फिर दुःख देना

1 फिर एक दिन, यहोवा से मिलने के लिये स्वर्गदूत आये। शैतान
भी उनके साथ था। शैतान यहोवा से मिलने आया था। 2 यहोवा ने
शैतान से पूछा, "तू कहाँ रहा"

शैतान ने उत्तर देते हुए यहोवा से कहा, "मैं धरती पर इधर—उधर घूमता रहा हूँ।"

3 इस पर यहोवा ने शैतान से पूछा, "क्या तू मेरे सेवक अय्यूब पर ध्यान देता रहा है उसके जैसा विश्वासी धरती पर कोई नहीं है। सचमुच वह अच्छा और वह बहुत विश्वासी व्यक्ति है। वह परमेश्वर की उपासना करता है, बुरी बातें से दूर रहता है। वह अब भी आस्थावान है। यद्यपि तूने मुझे प्रेरित किया था कि मैं अकारण ही उसे नष्ट कर दूँ।"

4 शैतान ने उत्तर दिया, "खाल के बदले खाल! एक व्यक्ति जीवित
रहने के लिये, जो कुछ उसके पास है, सब कुछ दे डालता है। 5 सो
यदि तू अपनी शक्ति का प्रयोग उसके शरीर को हानि पहुँचाने में करे
तो तेरे मुँह पर ही वह तुझे कोसने लगेगा!"

6 सो यहोवा ने शैतान से कहा, "अच्छा, मैंने अय्यूब को तुझे सौंपा, किन्तु तुझे उसे मार डालने की छूट नहीं है।"

7 इसके बाद शैतान यहोवा के पास से चला गया और उसने
अय्यूब को बड़े दुःखदायी फोड़े दे दिये। ये दुःखदायी फोड़े उसके
पाँव के तलवे से लेकर उसके सिर के ऊपर तक शरीर में फैल
गये थे। 8 सो अय्यूब कूड़े की ढेरी के पास बैठ गया। उसके पास
एक ठीकरा था, जिससे वह अपने फोड़ों को खुजलाया करता था।
9 अय्यूब की पत्नी ने उससे कहा, "क्या परमेश्वर में अब भी तेरा
विश्वास है तू परमेश्वर को कोस कर मर क्यों नहीं जाता!"

10 अय्यूब ने उत्तर देते हुए अपनी पत्नी से कहा, “तू तो एक मूर्खस्त्री की तरह बातें करती है! देख, परमेश्वर जब उत्तम वस्तुएं देता है, हम उन्हें स्वीकार कर लेते हैं। सो हमें दु:ख को भी अपनाना चाहिये और शिकायत नहीं करनी चाहिये।” इस समूचे दु:ख में भी अय्यूब ने कोई पाप नहीं किया। परमेश्वर के विरोध में वह कुछ नहीं बोला।

अय्यूब के तीन मित्रों का उससे मिलने आना

11 अय्यूब के तीन मित्र थे:तेमानी का एलीपज, शूही का बिलदद
और नामाती का सोपर। इन तीनों मित्रों ने अय्यूब के साथ जो बुरी
घटनाएँ घटी थीं, उन सब के बारे में सुना। ये तीनों मित्र अपना—
अपना घर छोड़कर आपस में एक दूसरे से मिले। उन्होंने निश्चय
किया कि वे अय्यूब के पास जा कर उसके प्रति सहानुभूति प्रकट
करें और उसे ढाढस बँधायें। 12 किन्तु इन तीनों मित्रों ने जब दूर
से अय्यूब को देखा तो वे निश्चय नहीं कर पाये कि वह अय्यूब है
क्योंकि वह एकदम अलग दिखाई दे रहा था। वे दहाड़ मार कर
रोने लगे। उन्होंने अपने कपड़े फाड़ डाले। अपने दु:ख और अपनी
बेचैनी को दर्शाने के लिये उन्होंने हवा में धूल उड़ाते हुए अपने
अपने सिरों पर मिट्टी डाली। 13 फिर वे तीनों मित्र अय्यूब के साथ
सात दिन और सात रात तक भूमि पर बैठे रहे। अय्यूब से किसी ने
एक शब्द तक नहीं कहा क्योंकि वे देख रहे थे कि अय्यूब भयानक
पीड़ा में था।

3

अय्यूब का उस दिन को कोसना जब वह जन्मा था

1 तब अय्यूब ने अपना मुँह खोला और उस दिन को कोसने लगा
जब वह पैदा हुआ था। 2 उसने कहा:

3 “काश! जिस दिन मैं पैदा हुआ था, मिट जाये।
काश! वह रात कभी न आई होती जब उन्होंने कहा था कि एक लड़का पैदा हुआ है!
4 काश! वह दिन अंधकारमय होता,
काश! परमेश्वर उस दिन को भूल जाता,
काश! उस दिन प्रकाश न चमका होता।
5 काश! वह दिन अंधकारपूर्ण बना रहता जितना कि मृत्यु है।
काश! बादल उस दिन को घेरे रहते।
काश! जिस दिन मैं पैदा हुआ काले बादल प्रकाश को डरा कर भगा सकते।
6 उस रात को गहरा अंधकार जकड़ ले,
उस रात की गिनती न हो।
उस रात को किसी महीने में सम्मिलित न करो।
7 वह रात कुछ भी उत्पन्न न करे।
कोई भी आनन्द ध्वनि उस रात को सुनाई न दे।
8 जादूगरों को शाप देने दो, उस दिन को वे शापित करें जिस दिन मैं पैदा हुआ।
वे व्यक्ति हमेशा लिब्यातान (सागर का दैत्य) को जगाना चाहते हैं।
9 उस दिन को भोर का तारा काला पड़ जाये।
वह रात सुबह के प्रकाश के लिये तरसे और वह प्रकाश कभी न आये।
वह सूर्य की पहली किरण न देख सके।
10 क्यों क्योंकि उस रात ने मुझे पैदा होने से न रोका।
उस रात ने मुझे ये कष्ट झेलने से न रोका।
11 मैं क्यों न मर गया जब मैं पैदा हुआ था
जन्म के समय ही मैं क्यों न मर गया
12 क्यों मेरी माँ ने गोद में रखा
क्यों मेरी माँ की छातियों ने मुझे दूध पिलाया।

13 अगर मैं तभी मर गया होता
जब मैं पैदा हुआ था तो अब मैं शान्ति से होता।
काश! मैं सोता रहता और विश्राम पाता।
14 राजाओं और बुद्धिमान व्यक्तियों के साथ जो पृथ्वी पर पहले थे।
उन लोगों ने अपने लिये स्थान बनायें, जो अब नष्ट हो कर मिट चुके है।
15 काश! मैं उन शासकों के साथ गाड़ा जाता
जिन्होंने सोने—चाँदी से अपने घर भरे थे।
16 क्यों नहीं मैं ऐसा बालक हुआ
जो जन्म लेते ही मर गया हो।
काश! मैं एक ऐसा शिशु होता
जिसने दिन के प्रकाश को नहीं देखा।
17 दुष्ट जन दु:ख देना तब छोड़ते हैं जब वे कब्र में होते हैं
और थके जन कब्र में विश्राम पाते हैं।
18 यहाँ तक कि बंदी भी सुख से कब्र में रहते हैं।
वहाँ वे अपने पहरेदारों की आवाज नहीं सुनते हैं।
19 हर तरह के लोग कब्र में रहते हैं चाहे वे महत्वपूर्ण हो या साधारण।
वहाँ दास अपने स्वामी से छुटकारा पाता है।

20 "कोई दु:खी व्यक्ति और अधिक यातनाएँ भोगता जीवित
क्यों रहें ऐसे व्यक्ति को जिस का मन कड़वाहट से भरा रहता है क्यों जीवन दिया जाता है
21 ऐसा व्यक्ति मरना चाहता है लेकिन उसे मौत नहीं आती हैं।
ऐसा दु:खी व्यक्ति मृत्यु पाने को उसी प्रकार तरसता है जैसे कोई छिपे खजाने के लिये।
22 ऐसे व्यक्ति कब्र पाकर प्रसन्न होते हैं
और आनन्द मनाते हैं।
23 परमेश्वर उनके भविष्य को रहस्यपूर्ण बनाये रखता है

और उनकी सुरक्षा के लिये उनके चारों ओर दीवार खड़ी करता है।
24 मैं भोजन के समयप्रसन्न होने के बजाय दु:खी आहें भरता हूँ।
मेरा विलाप जलधारा की भाँति बाहर फूट पड़ता है।
25 मैं जिस डरावनी बात से डरता रहा कि कहीं वहीं मेरे साथ न घट जाये, वही मेरे साथ घट गई।
और जिस बात से मैं सबसे अधिक डरा, वही मेरे साथ हो गई।
26 न ही मैं शान्त हो सकता हूँ, न ही मैं विश्राम कर सकता हूँ।
मैं बहुत ही विपदा में हूँ।”

4

एलीपज का कथन

1 फिर तेमान के एलीपज ने उत्तर दिया:

2 “यदि कोई व्यक्ति तुझसे कुछ कहना चाहे तो
क्या उससे तू बेचैन होगा मुझे कहना ही होगा!
3 हे अय्यूब, तूने बहुत से लोगों को शिक्षा दी
और दुर्बल हाथों को तूने शक्ति दी।
4 जो लोग लड़खड़ा रहे थे तेरे शब्दों ने उन्हें ढाढ़स बंधाया था।
तूने निर्बल पैरों को अपने प्रोत्साहन से सबल किया।
5 किन्तु अब तुझ पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा है
और तेरा साहस टूट गया है।
विपदा की मार तुझ पर पड़ी
और तू व्याकुल हो उठा।
6 तू परमेश्वर की उपासना करता है,
सो उस पर भरोसा रख।
तू एक भला व्यक्ति है

सो इसी को तू अपनी आशा बना ले।
7 अय्यूब, इस बात को ध्यान में रख कि कोई भी सज्जन कभी नहीं नष्ट किये गये।
निर्दोष कभी भी नष्ट नहीं किया गया है।
8 मैंने ऐसे लोगों को देखा है जो कष्टों को बढ़ाते हैं और जो जीवन को कठिन करते हैं।
किन्तु वे सदा ही दण्ड भोगते हैं।
9 परमेश्वर का दण्ड उन लोगों को मार डालता है
और उसका क्रोध उन्हें नष्ट करता है।
10 दुर्जन सिंह की तरह गुर्राते और दहाड़ते हैं,
किन्तु परमेश्वर उन दुर्जनों को चुप कराता है।
परमेश्वर उनके दाँत तोड़ देता है।
11 बुरे लोग उन सिंहों के समान होते हैं जिन के पास शिकार के लिये कुछ भी नहीं होता।
वे मर जाते हैं और उनके बच्चे इधर—उधर बिखर जाते है, और वे मिट जाते हैं।

12 "मेरे पास एक सन्देश चुपचाप पहुँचाया गया,
और मेरे कानों में उसकी भनक पड़ी।
13 जिस तरह रात का बुरा स्वप्न नींद उड़ा देता हैं,
ठीक उसी प्रकार मेरे साथ में हुआ है।
14 मैं भयभीत हुआ और काँपने लगा।
मेरी सब हड्डियाँ हिल गई।
15 मेरे सामने से एक आत्मा जैसी गुजरी
जिससे मेरे शरीर में रोंगटे खड़े हो गये।
16 वह आत्मा चुपचाप ठहर गया
किन्तु मैं नहीं जान सका कि वह क्या था।
मेरी आँखों के सामने एक आकृति खड़ी थी,
और वहाँ सन्नाटा सा छाया था।

फिर मैंने एक बहुत ही शान्त ध्वनि सुनी।
17 “मनुष्य परमेश्वर से अधिक उचित नहीं हो सकता।
अपने रचयिता से मनुष्य अधिक पवित्र नहीं हो सकता।
18 परमेश्वर अपने स्वर्गीय सेवकों तक पर भरोसा नहीं कर सकता।
परमेश्वर को अपने दूतों तक में दोष मिल जातें हैं।
19 सो मनुष्य तो और भी अधिक गया गुजरा है।
मनुष्य तो कच्चे मिट्टी के घरौंदों में रहते हैं।
इन मिट्टी के घरौंदों की नींव धूल में रखी गई हैं।
इन लोगों को उससे भी अधिक आसानी से मसल कर मार दिया जाता है,
जिस तरह भुनगों को मसल कर मारा जाता है।
20 लोग भोर से सांझ के बीच में मर जाते हैं किन्तु उन पर ध्यान तक कोई नहीं देता है।
वे मर जाते हैं और सदा के लिये चले जाते हैं।
21 उनके तम्बूओं की रस्सियाँ उखाड़ दी जाती हैं,
और ये लोग विवेक के बिना मर जाते हैं।”

5

1 “अय्यूब, यदि तू चाहे तो पुकार कर देख ले किन्तु तुझे कोई भी उत्तर नहीं देगा।
तू किसी भी स्वर्गदूत की ओर मुड़ नहीं सकता है।
2 मूर्ख का क्रोध उसी को नष्ट कर देगा।
मूर्ख की तीव्र भावनायें उसी को नष्ट कर डालेंगी।
3 मैंने एक मूर्ख को देखा जो सोचता था कि वह सुरक्षित है।
किन्तु वह एकाएक मर गया।
4 ऐसे मूर्ख व्यक्ति की सन्तानों की कोई भी सहायता न कर सका।
न्यायालय में उनको बचाने वाला कोई न था।

5 उसकी फसल को भूखे लोग खा गये, यहाँ तक कि वे भूखे लोग काँटों की झाड़ियों के बीच उगे अन्न कण को भी उठा ले गये।
जो कुछ भी उसके पास था उसे लालची लोग उठा ले गये।
6 बुरा समय मिट्टी से नहीं निकलता है,
न ही विपदा मैदानों में उगती है।
7 मनुष्य का जन्म दु:ख भोगने के लिये हुआ है।
यह उतना ही सत्य है जितना सत्य है कि आग से चिंगारी ऊपर उठती है।
8 किन्तु अय्यूब, यदि तुम्हारी जगह मैं होता
तो मैं परमेश्वर के पास जाकर अपना दुखड़ा कह डालता।
9 लोग उन अद्भुत भरी बातों को जिन्हें परमेश्वर करता है, नहीं समझते हैं।
ऐसे उन अद्भुत कर्मो का जिसे परमेश्वर करता है, कोई अन्त नहीं है।
10 परमेश्वर धरती पर वर्षा को भेजता है,
और वही खेतों में पानी पहुँचाया करता है।
11 परमेश्वर विनम्र लोगों को ऊपर उठाता है,
और दु:खी जन को अति प्रसन्न बनाता है।
12 परमेश्वर चालाक व दुष्ट लोगों के कुचक्र को रोक देता है।
इसलिये उनको सफलता नहीं मिला करती।
13 परमेश्वर चतुर को उसी की चतुराई भरी योजना में पकड़ता है।
इसलिए उनके चतुराई भरी योजनाएं सफल नहीं होती।
14 वे चालाक लोग दिन के प्रकाश में भी ठोकरें खाते फिरते हैं।
यहाँ तक कि दोपहर में भी वे रास्ते का अनुभव रात के जैसे करते हैं।
15 परमेश्वर दीन व्यक्ति को मृत्यु से बचाता है
और उन्हें शक्तिशाली चतुर लोगों की शक्ति से बचाता है।
16 इसलिए दीन व्यक्ति को भरोसा है।

परमेश्वर बुरे लोगों को नष्ट करेगा जो खरे नहीं हैं।

17 “वह मनुष्य भाग्यवान है, जिसका परमेश्वर सुधार करता है
इसलिए जब सर्वशक्तिशाली परमेश्वर तुम्हें दण्ड दे रहा तो तुम अपना दु:खड़ा मत रोओ।
18 परमेश्वर उन घावों पर पट्टी बान्धता है जिन्हें उसने दिया है।
वह चोट पहुँचाता है किन्तु उसके ही हाथ चंगा भी करते हैं।
19 वह तुझे छ: विपत्तियों से बचायेगा।
हाँ! सातों विपत्तियों में तुझे कोई हानि न होगी।
20 अकाल के समय परमेश्वर
तुझे मृत्यु से बचायेगा
और परमेश्वर युद्ध में
तेरी मृत्यु से रक्षा करेगा।
21 जब लोग अपने कठोर शब्दों से तेरे लिये बुरी बात बोलेंगे,
तब परमेश्वर तेरी रक्षा करेगा।
विनाश के समय
तुझे डरने की आवश्यकता नहीं होगी।
22 विनाश और भुखमरी पर तू हँसेगा
और तू जंगली जानवरों से कभी भयभीत न होगा।
23 तेरी वाचा परमेश्वर के साथ है यहाँ तक कि मैदानों की चट्टाने भी तेरा वाचा में भाग लेती है।
जंगली पशु भी तेरे साथ शान्ति रखते हैं।
24 तू शान्ति से रहेगा
क्योंकि तेरा तम्बू सुरक्षित है।
तू अपनी सम्पत्ति को सम्भालेगा
और उसमें से कुछ भी खोया हुआ नहीं पायेगा।
25 तेरी बहुत सन्तानें होंगी और वे इतनी होंगी
जितनी घास की पत्तियाँ पृथ्वी पर हैं।

26 तू उस पके गेहूँ जैसा होगा जो कटनी के समय तक पकता रहता है।
हाँ, तू पूरी वृद्ध आयु तक जीवित रहेगा।

27 "अय्यूब, हमने ये बातें पढ़ी हैं और हम जानते हैं कि ये सच्ची है।
अत: अय्यूब सुन और तू इन्हें स्वयं अपने आप जान।"

6

Job Answers Eliphaz

1 फिर अय्यूब ने उत्तर देते हुए कहा,

2 "यदि मेरी पीड़ा को तौला जा सके
और सभी वेदनाओं को तराज़ू में रख दिया जाये, तभी तुम मेरी व्यथा को समझ सकोगे।
3 मेरी व्यथा समुद्र की समूची रेत से भी अधिक भारी होंगी।
इसलिये मेरे शब्द मूर्खतापूर्ण लगते हैं।
4 सर्वशक्तिमान परमेश्वर के बाण मुझ में बिधे हैं और
मेरा प्राण उन बाणों के विष को पिया करता है।
परमेश्वर के वे भयानक शस्त्र मेरे विरुद्ध एक साथ रखी हुई हैं।
5 तेरे शब्द कहने के लिये आसान हैं जब कुछ भी बुरा नहीं घटित हुआ है।
यहाँ तक कि बनैला गधा भी नहीं रेंकता यदि उसके पास घास खाने को रहे
और कोई भी गाय तब तक नहीं रम्भाती जब तक उस के पास चरने के लिये चारा है।
6 भोजन बिना नमक के बेस्वाद होता है
और अण्डे की सफेदी में स्वाद नहीं आता है।
7 इस भोजन को छूने से मैं इन्कार करता हूँ।

इस प्रकार का भोजन मुझे तंग कर डालता है।
मेरे लिये तुम्हारे शब्द ठीक उसी प्रकार के हैं।

8 “काश! मुझे वह मिल पाता जो मैंने माँगा है।
काश! परमेश्वर मुझे दे देता जिसकी मुझे कामना है।
9 काश! परमेश्वर मुझे कुचल डालता
और मुझे आगे बढ़ कर मार डालता।
10 यदि वह मुझे मारता है तो एक बात का चैन मुझे रहेगा,
अपनी अनन्त पीड़ा में भी मुझे एक बात की प्रसन्नता रहेगा कि मैंने कभी भी अपने पवित्र के आदेशों पर चलने से इन्कार नहीं किया।

11 “मेरी शक्ति क्षीण हो चुकी है अत: जीते रहने की आशा मुझे नहीं है।
मुझ को पता नहीं कि अंत में मेरे साथ क्या होगा इसलिये धीरज धरने का मेरे पास कोई कारण नहीं है।
12 मैं चट्टान की भाँति सुदृढ़ नहीं हूँ।
न ही मेरा शरीर काँसे से रचा गया है।
13 अब तो मुझमें इतनी भी शक्ति नहीं कि मैं स्वयं को बचा लूँ।
क्यों क्योंकि मुझ से सफलता छीन ली गई है।

14 “क्योंकि वह जो अपने मित्रों के प्रति निष्ठा दिखाने से इन्कार करता है।
वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर का भी अपमान करता है।
15 किन्तु मेरे बन्धुओं, तुम विश्वासयोग्य नहीं रहे।
मैं तुम पर निर्भर नहीं रह सकता हूँ।
तुम ऐसी जलधाराओं के सामान हो जो कभी बहती है और कभी नहीं बहती है।
तुम ऐसी जलधाराओं के समान हो जो उफनती रहती है।

16 जब वे बर्फ से और पिघलते हुए हिम सा रूँध जाती है।
17 और जब मौसम गर्म और सूखा होता है
तब पानी बहना बन्द हो जाता है,
और जलधाराऐं सूख जाती हैं।
18 व्यापारियों के दल मरुभूमि में अपनी राहों से भटक जाते हैं
और वे लुप्त हो जाते हैं।
19 तेमा के व्यापारी दल जल को खोजते रहे
और शबा के यात्री आशा के साथ देखते रहे।
20 वे आश्वत थे कि उन्हें जल मिलेगा
किन्तु उन्हें निराशा मिली।
21 अब तुम उन जलधाराओं के समान हो।
तुम मेरी यातनाओं को देखते हो और भयभीत हो।
22 क्या मैंने तुमसे सहायता माँगी नहीं।
किन्तु तुमने मुझे अपनी सम्मति स्वतंत्रता पूर्वक दी।
23 क्या मैंने तुमसे कहा कि शत्रुओं से मुझे बचा लो
और क्रूर व्यक्तियों से मेरी रक्षा करो।

24 "अत: अब मुझे शिक्षा दो और मैं शान्त हो जाऊँगा।
मुझे दिखा दो कि मैंने क्या बुरा किया है।
25 सच्चे शब्द सशक्त होते हैं
किन्तु तुम्हारे तर्क कुछ भी नहीं सिद्ध करते।
26 क्या तुम मेरी आलोचना करने की योजनाऐं बनाते हो
क्या तुम इससे भी अधिक निराशापूर्ण शब्द बोलोगे
27 यहाँ तक कि तुम जुऐ में उन बच्चों की वस्तुओं को छीनना चाहते हो,
जिनके पिता नहीं हैं।
तुम तो अपने निज मित्र को भी बेच डालोगे।
28 किन्तु अब मेरे मुख को पढ़ो।

मैं तुमसे झूठ नहीं बोलूँगा।
29 अत:, अपने मन को अब परिवर्तित करो।
अन्यायी मत बनो, फिर से जरा सोचो कि मैंने कोई बुरा काम नहीं किया है।
30 मैं झूठ नहीं कह रहा हूँ। मुझको भले
और बुरे लोगों की पहचान है।”

7

1 अय्यूब ने कहा,

“मनुष्य को धरती पर कठिन संघर्ष करना पड़ता है।
उसका जीवन भाड़े के श्रमिक के जीवन जैसा होता है।
2 मनुष्य उस भाड़े के श्रमिक जैसा है जो तपते हुए दिन में मेहनत करने के बाद शीतल छाया चाहता है
और मजदूरी मिलने के दिन की बाट जोहता रहता है।
3 महीने दर महीने बेचैनी के गुजर गये हैं
और पीड़ा भरी रात दर रात मुझे दे दी गई है।
4 जब मैं लेटता हूँ, मैं सोचा करता हूँ कि
अभी और कितनी देर है मेरे उठने का
यह रात घसीटती चली जा रही है।
मैं छटपटाता और करवट बदलता हूँ, जब तक सूरज नहीं निकल आता।
5 मेरा शरीर कीड़ों और धूल से ढका हुआ है।
मेरी त्वचा चिटक गई है और इसमें रिसते हुए फोड़े भर गये हैं।

6 “मेरे दिन जुलाहे की फिरकी से भी अधिक तीव्र गति से बीत रहें हैं।
मेरे जीवन का अन्त बिना किसी आशा के हो रहा है।

7 हे परमेश्वर, याद रख, मेरा जीवन एक फूँक मात्र है।
अब मेरी आँखें कुछ भी अच्छा नहीं देखेंगी।
8 अभी तू मुझको देख रहा है किन्तु फिर तू मुझको नहीं देख पायेगा।
तू मुझको ढूँढेगा किन्तु तब तक मैं जा चुका होऊँगा।
9 एक बादल छुप जाता है और लुप्त हो जाता है।
इसी प्रकार एक व्यक्ति जो मर जाता है और कब्र में गाड़ दिया जाता है, वह फिर वापस नहीं आता है।
10 वह अपने पुराने घर को वापस कभी भी नहीं लौटेगा।
उसका घर उसको फिर कभी भी नहीं जानेगा।

11 "अत: मैं चुप नहीं रहूँगा। मैं सब कह डालूँगा।
मेरी आत्मा दु:खित है और मेरा मन कटुता से भरा है,
अत: मैं अपना दुखड़ा रोऊँगा।
12 हे परमेश्वर, तू मेरी रखवाली क्यों करता है
क्या मैं समुद्र हूँ, अथवा समुद्र का कोई दैत्य
13 जब मुझ को लगता है कि मेरी खाट मुझे शान्ति देगी
और मेरा पलंग मुझे विश्राम व चैन देगा।
14 हे परमेश्वर, तभी तू मुझे स्वप्न में डराता है,
और तू दर्शन से मुझे घबरा देता है।
15 इसलिए जीवित रहने से अच्छा
मुझे मर जाना ज्यादा पसन्द है।
16 मैं अपने जीवन से घृणा करता हूँ।
मेरी आशा टूट चुकी है।
मैं सदैव जीवित रहना नहीं चाहता।
मुझे अकेला छोड़ दे। मेरा जीवन व्यर्थ है।
17 हे परमेश्वर, मनुष्य तेरे लिये क्यों इतना महत्वपूर्ण है
क्यों तुझे उसका आदर करना चाहिये क्यों मनुष्य पर तुझे इतना ध्यान देना चाहिये

18 हर प्रात: क्यों तू मनुष्य के पास आता है
और हर क्षण तू क्यों उसे परखा करता है
19 हे परमेश्वर, तू मुझसे कभी भी दृष्टि नहीं फेरता है
और मुझे एक क्षण के लिये भी अकेला नहीं छोड़ता है।
20 हे परमेश्वर, तू लोगों पर दृष्टि रखता है।
यदि मैंने पाप किया, तब मैं क्या कर सकता हूँ
तूने मुझको क्यों निशाना बनाया है
क्या मैं तेरे लिये कोई समस्या बना हूँ
21 क्यों तू मेरी गलतियों को क्षमा नहीं करता और मेरे पापों को
क्यों तू माफ नहीं करता है
मैं शीघ्र ही मर जाऊँगा और कब्र में चला जाऊँगा।
जब तू मुझे ढूँढेगा किन्तु तब तक मैं जा चुका होऊँगा।”

8

1 इसके बाद शूह प्रदेश के बिलदद ने उत्तर देते हुए कहा,

2 “तू कब तक ऐसी बातें करता रहेगा
तेरे शब्द तेज आँधी की तरह बह रहे हैं।
3 परमेश्वर सदा निष्पक्ष है।
न्यायपूर्ण बातों को सर्वशक्तिशाली परमेश्वर कभी नहीं बदलता है।
4 अत: यदि तेरी सन्तानों ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है तो, उसने उन्हें दण्डित या है।
अपने पापों के लिये उन्हें भुगतना पड़ा है।
5 किन्तु अब अय्यूब, परमेश्वर की ओर दृष्टि कर
और सर्वशक्तिमान परमेश्वर से उस की दया पाने के लिये विनती कर।
6 यदि तू पवित्र है, और उत्तम है तो वह शीघ्र आकर तुझे सहारा

और तुझे तेरा परिवार और वस्तुऐं तुझे लौटायेगा।
7 जो कुछ भी तूने खोया वह तुझे छोटी सी बात लगेगी।
क्यों क्योंकि तेरा भविष्य बड़ा ही सफल होगा।

8 “उन वृद्ध लोगों से पूछ और पता कर कि
उनके पूर्वजों ने क्या सीखा था।
9 क्योंकि ऐसा लगता है जैसे हम तो बस कल ही पैदा हुए हैं,
हम कुछ नहीं जानते।
परछाई की भाँति हमारी आयु पृथ्वी पर बहुत छोटी है।
10 हो सकता है कि वृद्ध लोग तुझे कुछ सिखा सकें।
हो सकता है जो उन्होंने सीखा है वे तुझे सिखा सकें।

11 “बिलदद ने कहा, “क्या सूखी भूमि में भोजपत्र का वृक्ष बढ़ कर लम्बा हो सकता है
नरकुल बिना जल के बढ़ सकता है
12 नहीं, यदि पानी सूख जाता है तो वे भी मुरझा जायेंगे।
उन्हें काटे जाने के योग्य काट कर काम में लाने को वे बहुत छोटे रह जायेंगे।
13 वह व्यक्ति जो परमेश्वर को भूल जाता है, नरकुल की भाँति होता है।
वह व्यक्ति जो परमेश्वर को भूल जाता है कभी आशावान नहीं होगा।
14 उस व्यक्ति का विश्वास बहुत दुर्बल होता है।
वह व्यक्ति मकड़ी के जाले के सहारे रहता है।
15 यदि कोई व्यक्ति मकड़ी के जाले को पकड़ता है
किन्तु वह जाला उस को सहारा नहीं देगा।
16 वह व्यक्ति उस पौधे के समान है जिसके पास पानी और सूर्य का प्रकाश बहुतायात से है।

उसकी शाखाऐं बगीचे में हर तरफ फैलती हैं।
17 वह पत्थर के टीले के चारों ओर अपनी जड़े फैलाता है
और चट्टान में उगने के लिये कोई स्थान ढूँढता है।
18 किन्तु जब वह पौधा अपने स्थान से उखाड़ दिया जाता है,
तो कोई नहीं जान पाता कि वह कभी वहाँ था।
19 किन्तु वह पौधा प्रसन्न था, अब दूसरे पौधे वहाँ उगेंगे,
जहाँ कभी वह पौधा था।
20 किन्तु परमेश्वर किसी भी निर्दोष व्यक्ति को नहीं त्यागेगा
और वह बुरे व्यक्ति को सहारा नहीं देगा।
21 परमेश्वर अभी भी तेरे मुख को हँसी से भर देगा
और तेरे ओठों को खुशी से चहकायेगा।
22 और परमेश्वर तेरे शत्रुओं को लज्जित करेगा
और वह तेरे शत्रुओं के घरों को नष्ट कर देगा।”

9

1 फिर अय्यूब ने उत्तर दिया:

2 “हाँ, मैं जानता हूँ कि तू सत्य कहता है
किन्तु मनुष्य परमेश्वर के सामने निर्दोष कैसे हो सकता है
3 मनुष्य परमेश्वर से तर्क नहीं कर सकता।
परमेश्वर मनुष्य से हजारों प्रश्न पूछ सकता है और कोई उनमें से एक का भी उत्तर नहीं दे सकता है।
4 परमेश्वर का विवेक गहन है, उसकी शक्ति महान है।
ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो परमेश्वर से झगड़े और हानि न उठाये।
5 जब परमेश्वर क्रोधित होता है, वह पर्वतों को हटा देता है और वे जान तक नहीं पाते।
6 परमेश्वर पृथ्वी को कँपाने के लिये भूकम्प भेजता है।

परमेश्वर पृथ्वी की नींव को हिला देता है।
7 परमेश्वर सूर्य को आज्ञा दे सकता है और उसे उगने से रोक सकता हैं।
वह तारों को बन्द कर सकता है ताकि वे न चमकें।
8 केवल परमेश्वर ने आकाशों की रचना की।
वह सागर की लहरों पर विचरण कर सकता है।

9 “परमेश्वर ने सप्तर्षी, मृगशिरा और कचपचिया तारों को बनाया है।
उसने उन ग्रहों को बनाया जो दक्षिण का आकाश पार करते हैं।
10 परमेश्वर ऐसे अद्भुत कर्म करता है जिन्हें मनुष्य नहीं समझ सकता।
परमेश्वर के महान आश्चर्यकर्मों का कोई अन्त नहीं है।
11 परमेश्वर जब मेरे पास से निकलता है, मैं उसे देख नहीं पाता हूँ।
परमेश्वर जब मेरी बगल से निकल जाता है। मैं उसकी महानता को समझ नहीं पाता।
12 यदि परमेश्वर छीनने लगता है तो
कोई भी उसे रोक नहीं सकता।
कोई भी उससे कह नहीं सकता,
‘तू क्या कर रहा है।’
13 अपने क्रोध को नहीं रोकेगा।
यहाँ तक कि राहाब दानव (सागर का दैत्य) के सहायक भी परमेश्वर से डरते हैं।
14 अत: परमेश्वर से मैं तर्क नहीं कर सकता।
मैं नहीं जानता कि उससे क्या कहा जाये।
15 मैं यद्यपि निर्दोष हूँ किन्तु मैं परमेश्वर को एक उत्तर नहीं दे सकता।
मैं बस अपने न्यायकर्ता (परमेश्वर)से दया की याचना कर सकता हूँ।
16 यदि मैं उसे पुकारुँ और वह उत्तर दे, तब भी मुझे विश्वास नहीं होगा कि वह सचमुच मेरी सुनता है।
17 परमेश्वर मुझे कुचलने के लिये तूफान भेजेगा

और वह मुझे अकारण ही और अधिक घावों को देगा।
18 परमेश्वर मुझे फिर साँस नहीं लेने देगा।
वह मुझे और अधिक यातना देगा।
19 मैं परमेश्वर को पराजित नहीं कर सकता।
परमेश्वर शक्तिशाली है।
मैं परमेश्वर को न्यायालय में नहीं ले जा सकता और उसे अपने प्रति मैं निष्पक्ष नहीं बना सकता।
परमेश्वर को न्यायालय में आने के लिये कौन विवश कर सकता है
20 मैं निर्दोष हूँ किन्तु मेरा भयभीत मुख मुझे अपराधी कहेगा।
अत: यद्यपि मैं निरपराधी हूँ किन्तु मेरा मुख मुझे अपराधी घोषित करता है।
21 मैं पाप रहित हूँ किन्तु मुझे अपनी ही परवाह नहीं है।
मैं स्वयं अपने ही जीवन से घृणा करता हूँ।
22 मैं स्वयं से कहता हूँ हर किसी के साथ एक सा ही घटित होता है।
निरपराध लोग भी वैसे ही मरते हैं जैसे अपराधी मरते हैं।
परमेश्वर उन सबके जीवन का अन्त करता है।
23 जब कोई भयंकर बात घटती है और कोई निर्दोष व्यक्ति मारा जाता है तो क्या परमेश्वर उसके दु:ख पर हँसता है
24 जब धरती दुष्ट जन को दी जाती है तो क्या मुखिया को परमेश्वर अंधा कर देता है
यदि यह परमेश्वर ने नहीं किया तो फिर किसने किया है

25 “किसी तेज धावक से तेज मेरे दिन भाग रहे हैं।
मेरे दिन उड़ कर बीत रहे हैं और उनमें कोई प्रसन्नता नहीं है।
26 वेग से मेरे दिन बीत रहे हैं जैसे श्री—पत्र की नाव बही चली जाती है,
मेरे दिन टूट पड़ते है ऐसे जैसे उकाब अपने शिकार पर टूट पड़ता हो!

27 “यदि मैं कहूँ कि मैं अपना दुखड़ा रोऊँगा,
अपना दु:ख भूल जाऊँगा और उदासी छोड़कर हँसने लगूँगा।
28 इससे वास्तव में कोई भी परिवर्तन नहीं होता है।
पीड़ा मुझे अभी भी भयभीत करती है।
29 मुझे तो पहले से ही अपराधी ठहराया जा चुका है,
सो मैं क्यों जतन करता रहूँ मैं तो कहता हूँ, “भूल जाओ इसे।”
30 चाहे मैं अपने आपको हिम से धो लूँ
और यहाँ तक की अपने हाथ साबुन से साफ कर लूँ!
31 फिर भी परमेश्वर मुझे घिनौने गर्त में धकेल देगा
जहाँ मेरे वस्त्र तक मुझसे घृणा करेंगे।
32 परमेश्वर, मुझ जैसा मनुष्य नहीं है। इसलिए उसको मैं उत्तर नहीं दे सकता।
हम दोनों न्यायालय में एक दूसरे से मिल नहीं सकते।
33 काश! कोई बिचौलिया होता जो दोनों तरफ की बातें सुनता।
काश! कोई ऐसा होता जो हम दोनों का न्याय निष्पक्ष रूप से करता।
34 काश! कोई जो परमेश्वर से उस की दण्ड की छड़ी को ले।
तब परमेश्वर मुझे और अधिक भयभीत नहीं करेगा।
35 तब मैं बिना डरे परमेश्वर से वह सब कह सकूँगा,
जो मैं कहना चाहता हूँ।

10

1 “किन्तु हाय, अब मैं वैसा नहीं कर सकता। मुझ को स्वयं अपने जीवन से घृणा हैं अत:
मैं मुक्त भाव से अपना दुखड़ा रोऊँगा। मेरे मन में कड़वाहट भरी है अत: मैं अबबोलूँगा।
2 मैं परमेश्वर से कहूँगा “मुझ पर दोष मत लगा।

मुझे बता दे, मैंने तेरा क्या बुरा किया मेरे विरुद्ध तेरे पास क्या है
3 हे परमेश्वर, क्या तू मुझे चोट पहुँचा कर प्रसन्न होता है
ऐसा लगता है जैसे तुझे अपनी सृष्टि की चिंता नहीं है और शायद तू दुष्टों के कुचक्रों का पक्ष लेता है।
4 हे परमेश्वर, क्या तेरी आँखें मनुष्य समान है
क्या तू वस्तुओं को ऐसे ही देखता है, जैसे मनुष्य की आँखे देखा करती हैं।
5 तेरी आयु हम मनुष्यों जैसे छोटी नहीं है।
तेरे वर्ष कम नहीं हैं जैसे मनुष्य के कम होते हैं।
6 तू मेरी गलतियों को ढूढ़ता है,
और मेरे पापों को खोजता है।
7 तू जानता है कि मैं निरपराध हूँ।
किन्तु मुझे कोई भी तेरी शक्ति से बचा नही सकता।
8 परमेश्वर, तूने मुझको रचा
और तेरे हाथों ने मेरी देह को सँवारा,
किन्तु अब तू ही मुझ से विमुख हुआ
और मुझे नष्ट कर रहा है।
9 हे परमेश्वर, याद कर कि तूने मुझे मिट्टी से मढ़ा,
किन्तु अब तू ही मुझे फिर से मिट्टी में मिलायेगा।
10 तू दूध के समान मुझ को उडेंलता है,
दूध की तरह तू मुझे उबालता है और तू मुझे दूध से पनीर में बदलता है।
11 तूने मुझे हड्डियों और माँस पेशियों से बुना
और फिर तूने मुझ पर माँस और त्वचा चढ़ा दी।
12 तूने मुझे जीवन का दान दिया और मेरे प्रति दयालु रहा।
तूने मेरा ध्यान रखा और तूने मेरे प्राणों की रखवाली की।
13 किन्तु यह वह है जिसे तूने अपने मन में छिपाये रखा

और मैं जानता हूँ, यह वह है जिसकी तूने अपने मन में गुप्त रूप से योजना बनाई।

14 यदि मैंने पाप किया तो तू मुझे देखता था।
सो मेरे बुरे काम का दण्ड तू दे सकता था।

15 जब मैं पाप करता हूँ तो
मैं अपराधी होता हूँ और यह मेरे लिये बहुत ही बुरा होगा।

किन्तु मैं यदि निरपराध भी हूँ
तो भी अपना सिर नहीं उठा पाता
क्योंकि मैं लज्जा और पीड़ा से भरा हुआ हूँ।

16 यदि मुझको कोई सफलता मिल जाये और मैं अभिमानी हो जाऊँ,
तो तू मेरा पीछा वैसे करेगा जैसे सिंह के पीछे कोई शिकारी पड़ता है
और फिर तू मेरे विरुद्ध अपनी शक्ति दिखायेगा।

17 तू मेरे विरुद्ध सदैव किसी न किसी को नया साक्षी बनाता है।
तेरा क्रोध मेरे विरुद्ध और अधिक भड़केगा तथा मेरे विरुद्ध तू नई शत्रु सेना लायेगा।

18 सो हे परमेश्वर, तूने मुझको क्यों जन्म दिया इससे पहले की कोई मुझे देखता
काश! मैं मर गया होता।

19 काश! मैं जीवित न रहता।
काश! माता के गर्भ से सीधे ही कब्र में उतारा जाता।

20 मेरा जीवन लगभग समाप्त हो चुका है
सो मुझे अकेला छोड़ दो।
मेरा थोड़ा सा समय जो बचा है उसे मुझे चैन से जी लेने दो।

21 इससे पहले की मैं वहाँ चला जाऊँ जहाँ से कभी कोई वापस नहीं आता हैं।
जहाँ अंधकार है और मृत्यु का स्थान है।

22 जो थोड़ा समय मेरा बचा है उसे मुझको जी लेने दो, इससे पहले
कि मैं वहाँ चला जाऊँ जिस स्थान को कोई नहीं देख पाता
अर्थात् अधंकार, विप्लव और गड़बड़ी का स्थान।
उस स्थान में यहाँ तक कि प्रकाश भी अंधकारपूर्ण होता है।”

11

सोपर का अय्यूब से कथन

1 इस पर नामात नामक प्रदेश के सोपर ने अय्यूब को उत्तर देते
हुये कहा,

2 “इस शब्दों के प्रवाह का उत्तर देना चाहिये।
क्या यह सब कहना अय्यूब को निर्दोष ठहराता है नहीं!
3 अय्यूब, क्या तुम सोचते हो कि
हमारे पास तुम्हारे लिये उत्तर नहीं है
क्या तुम सोचते हो कि जब तुम परमेश्वर पर
हंसते हो तो कोई तुम्हें चेतावनी नहीं देगा।
4 अय्यूब, तुम परमेश्वर से कहते रहे कि,
‘मेरा विश्वास सत्य है
और तू देख सकता है कि मैं निष्कलंक हूँ!’
5 अय्यूब, मेरी ये इच्छा है कि परमेश्वर तुझे उत्तर दे,
यह बताते हुए कि तू दोषपूर्ण है!
6 काश! परमेश्वर तुझे बुद्धि के छिपे रहस्य बताता
और वह सचमुच तुझे उनको बतायेगा! हर कहानी के दो पक्ष
होते हैं,
अय्यूब, मेरी सुन परमेश्वर तुझे कम दण्डित कर रहा है,
अपेक्षाकृत जितना उसे सचमुच तुझे दण्डित करना चाहिये।

7 “अय्यूब, क्या तुम सर्वशक्तिमान परमेश्वर के रहस्यपूर्ण सत्य समझ सकते हो
क्या तुम उसके विवेक की सीमा मर्यादा समझ सकते हो
8 उसकी सीमायें आकाश से ऊँची है,
इसलिये तुम नहीं समझ सकते हो!
सीमायें नर्क की गहराईयों से गहरी है,
सो तू उनको समझ नहीं सकता है!
9 वे सीमायें धरती से व्यापक हैं,
और सागर से विस्तृत हैं।

10 “यदि परमेश्वर तुझे बंदी बनाये और तुझको न्यायालय में ले जाये,
तो कोई भी व्यक्ति उसे रोक नहीं सकता है।
11 परमेश्वर सचमुच जानता है कि कौन पाखण्डी है।
परमेश्वर जब बुराई को देखता है, तो उसे याद रखता है।
12 किन्तु कोई मूढ़ जन कभी बुद्धिमान नहीं होगा,
जैसे बनैला गधा कभी मनुष्य को जन्म नहीं दे सकता है।
13 सो अय्यूब, तुझको अपना मन तैयार करना चाहिये, परमेश्वर की सेवा करने के लिये।
तुझे अपने निज हाथों को प्रार्थना करने को ऊपर उठाना चाहिये।
14 वह पाप जो तेरे हाथों में बसा है, उसको तू दूर कर।
अपने तम्बू में बुराई को मत रहने दे।
15 तभी तू निश्चय ही बिना किसी लज्जा के आँख ऊपर उठा कर परमेश्वर को देख सकता है।
तू दृढ़ता से खड़ा रहेगा और नहीं डरेगा।
16 अय्यूब, तब तू अपनी विपदा को भूल पायेगा।
तू अपने दुखड़ो को बस उस पानी सा याद करेगा जो तेरे पास से बह कर चला गया।
17 तेरा जीवन दोपहर के सूरज से भी अधिक उज्जवल होगा।

जीवन की अँधेरी घड़ियाँ ऐसे चमकेगी जैसे सुबह का सूरज।
18 अय्यूब, तू सुरक्षित अनुभव करेगा क्योंकि वहाँ आशा होगी।
परमेश्वर तेरी रखवाली करेगा और तुझे आराम देगा।
19 चैन से तू सोयेगा, कोई तुझे नहीं डरायेगा
और बहुत से लोग तुझ से सहायता माँगेंगे!
20 किन्तु जब बुरे लोग आसरा ढूढेंगे तब उनको नहीं मिलेगा।
उनके पास कोई आस नहीं होगी।
वे अपनी विपत्तियों से बच कर निकल नहीं पायेंगे।
मृत्यु ही उनकी आशा मात्र होगी।”

12

सोपर को अय्यूब का उत्तर

1 फिर अय्यूब ने सोपर को उत्तर दिया:

2 “निःसन्देह तुम सोचते हो कि मात्र
तुम ही लोग बुद्धिमान हो,
तुम सोचते हो कि जब तुम मरोगे तो
विवेक मर जायेगा तुम्हारे साथ।
3 किन्तु तुम्हारे जितनी मेरी बुद्धि भी उत्तम है,
मैं तुम से कुछ घट कर नहीं हूँ।
ऐसी बातों को जैसी तुम कहते हो,
हर कोई जानता है।

4 “अब मेरे मित्र मेरी हँसी उड़ाते हैं,
वह कहते है: ‘हाँ, वह परमेश्वर से विनती किया करता था,
और वह उसे उत्तर देता था।
इसलिए यह सब बुरी बातें उसके साथ घटित हो रही है।’

यद्यपि मैं दोषरहित और खरा हूँ, लेकिन वे मेरी हँसी उड़ाते हैं।
5 ऐसे लोग जिन पर विपदा नहीं पड़ी, विपदाग्रस्त लोगों की हँसी किया करते हैं।
ऐसे लोग गिरते हुये व्यक्ति को धक्का दिया करते हैं।
6 डाकुओं के डेरे निश्चिंत रहते हैं,
ऐसे लोग जो परमेश्वर को रुष्ट करते हैं, शांति से रहते हैं।
स्वयं अपने बल को वह अपना परमेश्वर मानते हैं।

7 "चाहे तू पशु से पूछ कर देख,
वे तुझे सिखादेंगे,
अथवा हवा के पक्षियों से पूछ
वे तुझे बता देंगे।
8 अथवा तू धरती से पूछ ले
वह तुझको सिखा देगी
या सागर की मछलियों को
अपना ज्ञान तुझे बताने दे।
9 हर कोई जानता है कि परमेश्वर ने इन सब वस्तुओं को रचा है।
10 हर जीवित पशु और हर एक प्राणी जो साँस लेता है,
परमेश्वर की शक्ति के अधीन है।
11 जैसे जीभ भोजन का स्वाद चखती है,
वैसी ही कानों को शब्दों को परखना भाता है।
12 हम कहते है, "ऐसे ही बूढ़ों के पास विवेक रहता है और लम्बी आयु समझ बूझ देती है।"
13 विवेक और सामर्थ्य परमेश्वर के साथ रहते है, सम्मति और सूझ–बूझ उसी की ही होती है।
14 यदि परमेश्वर किसी वस्तु को ढा गिराये तो, फिर लोग उसे नहीं बना सकते।

यदि परमेश्वर किसी व्यक्ति को बन्दी बनाये, तो लोग उसे मुक्त नहीं कर सकते।
15 यदि परमेश्वर वर्षा को रोके तो धरती सूख जायेगी।
यदि परमेश्वर वर्षा को छूट दे दे, तो वह धरती पर बाढ़ ले आयेगी।
16 परमेश्वर समर्थ है और वह सदा विजयी होता है।
वह व्यक्ति जो छलता है और वह व्यक्ति जो छला जाता है दोनो परमेश्वर के हैं।
17 परमेश्वर मन्त्रियों को बुद्धि से वंचित कर देता है,
और वह प्रमुखों को ऐसा बना देता है कि वे मूर्ख जनों जैसा व्यवहार करने लगते हैं।
18 राजा बन्दियों पर जंजीर डालते हैं किन्तु उन्हें परमेश्वर खोल देता है।
फिर परमेश्वर उन राजाओं पर एक कमरबन्द बांध देता है।
19 परमेश्वर याजकों को बन्दी बना कर, पद से हटाता है और तुच्छ बना कर ले जाता है।
वह बलि और शक्तिशाली लोगों को शक्तिहीन कर देता है।
20 परमेश्वर विश्वासपात्र सलाह देनेवाले को चुप करा देता है।
वह वृद्ध लोगों का विवेक छीन लेता है।
21 परमेश्वर महत्वपूर्ण हाकिमों पर घृणा उंडेल देता है।
वह शासकों की शक्ति छीन लिया करता है।
22 गहन अंधकार से रहस्यपूर्ण सत्य को प्रगट करता है।
ऐसे स्थानों में जहाँ मृत्यु सा अंधेरा है वह प्रकाश भेजता है।
23 परमेश्वर राष्ट्रों को विशाल और शक्तिशाली होने देता है,
और फिर उनको वह नष्ट कर डालता है।
वह राष्ट्रों को विकसित कर विशाल बनने देता है,
फिर उनके लोगों को वह तितर—बितर कर देता है।
24 परमेश्वर धरती के प्रमुखों को मूर्ख बना देता है, और उन्हें नासमझ बना देता है।

वह उनको मरुभूमि में जहाँ कोई राह नहीं भटकने को भेज
देता है।
25 वे प्रमुख अंधकार के बीच टटोलते हैं, कोई भी प्रकाश उनके
पास नहीं होता है।
परमेश्वर उनको ऐसे चलाता है, जैसे पी कर धुत्त हुये लोग
चलते हैं।

13

1 अय्यूब ने कहा:

“मेरी आँखों ने यह सब पहले देखा है
और पहले ही मैं सुन चुका हूँ जो कुछ तुम कहा करते हो।
इस सब की समझ बूझ मुझे है।
2 मैं भी उतना ही जानता हूँ जितना तू जानता है,
मैं तुझ से कम नहीं हूँ।
3 किन्तु मुझे इच्छा नहीं है कि मैं तुझ से तर्क करूँ,
मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर से बोलना चाहता हूँ।
अपने संकट के बारे में, मैं परमेश्वर से तर्क करना चाहता हूँ।
4 किन्तु तुम तीनो लोग अपने अज्ञान को मिथ्या विचारों से ढकना
चाहते हो।
तुम वो बेकार के चिकित्सक हो जो किसी को अच्छा नहीं
कर सकता।
5 मेरी यह कामना है कि तुम पूरी तरह चुप हो जाओ,
यह तुम्हारे लिये बुद्धिमत्ता की बात होगी जिसको तुम कर
सकते हो!

6 “अब, मेरी युक्ति सुनो!
सुनो जब मैं अपनी सफाई दूँ।
7 क्या तुम परमेश्वर के हेतु झूठ बोलोगे

क्या यह तुमको सचमुच विश्वास है कि ये तुम्हारे झूठ परमेश्वर
तुमसे बुलवाना चाहता है
8 क्या तुम मेरे विरुद्ध परमेश्वर का पक्ष लोगे
check क्या तुम न्यायालय में परमेश्वर को बचाने जा रहे हो
9 यदि परमेश्वर ने तुमको अति निकटता से जाँच लिया तो
क्या वह कुछ भी अच्छी बातपायेगा
क्या तुम सोचते हो कि तुम परमेश्वर को छल पाओगे,
ठीक उसी तरह जैसे तुम लोगों को छलते हो
10 यदि तुम न्यायालय में छिपे छिपे किसी का पक्ष लोगे
तो परमेश्वर निश्चय ही तुमको लताड़ेगा।
11 भव्य तेज तुमको डरायेगा
और तुम भयभीत हो जाओगे।
12 तुम सोचते हो कि तुम चतुराई भरी और बुद्धिमत्तापूर्ण बातें करते
हो, किन्तु तुम्हारे कथन राख जैसे व्यर्थ हैं।
तुम्हारी युक्तियाँ माटी सी दुर्बल हैं।

13 "चुप रहो और मुझको कह लेने दो।
फिर जो भी होना है मेरे साथ हो जाने दो।
14 मैं स्वयं को संकट में डाल रहा हूँ
और मैं स्वयं अपना जीवन अपने हाथों में ले रहा हूँ।
15 चाहे परमेश्वर मुझे मार दे।
मुझे कुछ आशा नहीं है, तो भी मैं अपना मुकदमा उसके सामने
लड़ूँगा।
16 किन्तु सम्भव है कि परमेश्वर मुझे बचा ले, क्योंकि मैं उसके सामने
निडर हूँ।
कोई भी बुरा व्यक्ति परमेश्वर से आमने सामने मिलने का
साहस नहीं कर सकता।

17 उसे ध्यान से सुन जिसे मैं कहता हूँ,
उस पर कान दे जिसकी व्याख्या मैं करता हूँ।
18 अब मैं अपना बचाव करने को तैयार हूँ।
यह मुझे पता है कि
मुझको निर्दोष सिद्ध किया जायेगा।
19 कोई भी व्यक्ति यह प्रमाणित नहीं कर सकता कि मैं गलत हूँ।
यदि कोई व्यक्ति यह सिद्ध कर दे तो मैं चुप हो जाऊँगा और प्राण दे दूँगा।

20 “हे परमेश्वर, तू मुझे दो बाते दे दे,
फिर मैं तुझ से नहीं छिपूँगा।
21 मुझे दण्ड देना और डराना छोड़ दे,
अपने आतंको से मुझे छोड़ दे।
22 फिर तू मुझे पुकार और मैं तुझे उत्तर दूँगा,
अथवा मुझको बोलने दे और तू मुझको उत्तर दे।
23 कितने पाप मैंने किये हैं
कौन सा अपराध मुझसे बन पड़ा
मुझे मेरे पाप और अपराध दिखा।
24 हे परमेश्वर, तू मुझसे क्यों बचता है
और मेरे साथ शत्रु जैसा व्यवहार क्यों करता है
25 क्या तू मुझको डरायेगा
मैं (अय्यूब) एक पत्ता हूँ जिसके पवन उड़ाती है।
एक सूखे तिनके पर तू प्रहार कर रहा है।
26 हे परमेश्वर, तू मेरे विरोध में कड़वी बात बोलता है।
तू मुझे ऐसे पापों के लिये दु:ख देता है जो मैंने लड़कपन में किये थे।

27 मेरे पैरों में तूने काठ डाल दिया है, तू मेरे हर कदम पर आँख गड़ाये रखता है।
मेरे कदमों की तूने सीमायें बाँध दी हैं।
28 मैं सड़ी वस्तु सा क्षीण होता जाता हूँ
कीड़ें से खाये हुये
कपड़े के टुकड़े जैसा।"

14

1 अय्यूब ने कहा,

"हम सभी मानव है
हमारा जीवन छोटा और दु:खमय है!
2 मनुष्य का जीवन एक फूल के समान है
जो शीघ्र उगता है और फिर समाप्त हो जाता है।
मनुष्य का जीवन है जैसे कोई छाया जो थोड़ी देर टिकती है और बनी नहीं रहती।
3 हे परमेश्वर, क्या तू मेरे जैसे मनुष्य पर ध्यान देगा
क्या तू मेरा न्याय करने मुझे सामने लायेगा

4 "किसी ऐसी वस्तु से जो स्वयं अस्वच्छ है स्वच्छ वस्तु कौन पा सकता है कोई नहीं।
5 मनुष्य का जीवन सीमित है।
मनुष्य के महीनों की संख्या परमेश्वर ने निश्चित कर दी है।
तूने मनुष्य के लिये जो सीमा बांधी है, उसे कोई भी नहीं बदल सकता।
6 सो परमेश्वर, तू हम पर आँख रखना छोड़ दे। हम लोगों को अकेला छोड़ दे।
हमें अपने कठिन जीवन का मजा लेने दे, जब तक हमारा समय नहीं समाप्त हो जाता।

7 “किन्तु यदि वृक्ष को काट गिराया जाये तो भी आशा उसे रहती है कि
वह फिर से पनप सकता है,
क्योंकि उसमें नई नई शाखाऐं निकलती रहेंगी।
8 चाहे उसकी जड़े धरती में पुरानी क्यों न हो जायें
और उसका तना चाहे मिट्टी में गल जाये।
9 किन्तु जल की गंध मात्र से ही वह नई बढ़त देता है
और एक पौधे की तरह उससे शाखाऐं फूटती हैं।
10 किन्तु जब बलशाली मनुष्य मर जाता है
उसकी सारी शक्ति खत्म हो जाती है। जब मनुष्य मरता है वह चला जाता है।
11 जैसे सागर के तट से जल शीघ्र लौट कर खो जाता है
और जल नदी का उतरता है, और नदी सूख जाती है।
12 उसी तरह जब कोई व्यक्ति मर जाता है
वह नीचे लेट जाता है
और वह महानिद्रा से फिर खड़ा नहीं होता।
वैसे ही वह व्यक्ति जो प्राण त्यागता है
कभी खड़ा नहीं होता अथवा चिर निद्रा नहीं त्यागता
जब तक आकाश विलुप्त नहीं होंगे।

13 “काश! तू मुझे मेरी कब्र में मुझे छुपा लेता
जब तक तेरा क्रोध न बीत जाता।
फिर कोई समय मेरे लिये नियुक्त करके तू मुझे याद करता।
14 यदि कोई मनुष्य मर जाये तो क्या जीवन कभी पायेगा
मैं तब तक बाट जोहूँगा, जब तक मेरा कर्तव्य पूरा नहीं हो जाता और जब तक मैं मुक्त न हो जाऊँ।
15 हे परमेश्वर, तू मुझे बुलायेगा
और मैं तुझे उत्तर दूँगा।
तूने मुझे रचा है,

सो तू मुझे चाहेगा।
16 फिर तू मेरे हर चरण का जिसे मैं उठाता हूँ, ध्यान रखेगा
और फिर तू मेरे उन पापों पर आँख रखेगा, जिसे मैंने किये हैं।
17 काश! मेरे पाप दूर हो जाएँ। किसी थैले में उन्हें बन्द कर दिया जाये
और फिर तू मेरे पापों को ढक दे।

18 “जैसे पर्वत गिरा करता है और नष्ट हो जाता है
और कोई चट्टान अपना स्थान छोड़ देती है।
19 जल पत्थरों के ऊपर से बहता है और उन को घिस डालता है
तथा धरती की मिट्टी को जल बहाकर ले जाती है।
हे परमेश्वर, उसी तरह व्यक्ति की आशा को तू बहा ले जाता है।
20 तू एक बार व्यक्ति को हराता है
और वह समाप्त हो जाता है।
तू मृत्यु के रूप सा उसका मुख बिगाड़ देता है,
और सदा सदा के लिये कहीं भेज देता है।
21 यदि उसके पुत्र कभी सम्मान पाते हैं तो उसे कभी उसका पता नहीं चल पाता।
यदि उसके पुत्र कभी अपमान भोगतें हैं, जो वह उसे कभी देख नहीं पाता है।
22 वह मनुष्य अपने शरीर में पीड़ा भोगता है
और वह केवल अपने लिये ऊँचे पुकारता है।”

15

1 इस पर तेमान नगर के निवासी एलीपज ने अय्यूब को उत्तर देते हुए कहा:

2 “अय्यूब, य़दि तू सचमुच बुद्धिमान होता तो रोते शब्दों से तू उत्तर न देता।
क्या तू सोचता है कि कोई विवेकी पुरुष पूर्व की लू की तरह उत्तर देता है
3 क्या तू सोचता है कि कोई बुद्धिमान पुरुष व्यर्थ के शब्दों से
और उन भाषणों से तर्क करेगा जिनका कोई लाभ नहीं
4 अय्यूब, यदि तू मनमानी करता है
तो कोई भी व्यक्ति परमेश्वर की न तो आदर करेगा, न ही उससे प्रार्थना करेगा।
5 तू जिन बातों को कहता है वह तेरा पाप साफ साफ दिखाती हैं।
अय्यूब, तू चतुराई भरे शब्दों का प्रयोग करके अपने पाप को छिपाने का प्रयत्न कर रहा है।
6 तू उचित नहीं यह प्रमाणित करने की मुझे आवश्यकता नहीं है।
क्योंकि तू स्वयं अपने मुख से जो बातें कहता है,
वह दिखाती हैं कि तू बुरा है और तेरे ओंठ स्वयं तेरे विरुद्ध बोलते हैं।

7 “अय्यूब, क्या तू सोचता है कि जन्म लेने वाला पहला व्यक्ति तू ही है?
और पहाड़ों की रचना से भी पहले तेरा जन्म हुआ।
8 क्या तूने परमेश्वर की रहस्यपूर्ण योजनाऐं सुनी थी
क्या तू सोचा करता है कि एक मात्र तू ही बुद्धिमान है?
9 अय्यूब, तू हम से अधिक कुछ नहीं जानता है।
वे सभी बातें हम समझते हैं, जिनकी तुझको समझ है।
10 वे लोग जिनके बाल सफेद हैं और वृद्ध पुरुष हैं वे हमसे सहमत रहते हैं।
हाँ, तेरे पिता से भी वृद्ध लोग हमारे पक्ष में हैं।
11 परमेश्वर तुझको सुख देने का प्रयत्न करता है,
किन्तु यह तेरे लिये पर्याप्त नहीं है।

परमेश्वर का सुसन्देश बड़ी नम्रता के साथ हमने तुझे सुनाया।
12 अय्यूब, क्यों तेरा हृदय तुझे खींच ले जाता है
तू क्रोध में क्यों हम पर आँखें तरेरता है?
13 जब तू इन क्रोध भरे वचनों को कहता है,
तो तू परमेश्वर के विरुद्ध होता है।

14 "सचमुच कोई मनुष्य पवित्र नहीं हो सकता।
मनुष्य स्त्री से पैदा हुआ है, और धरती पर रहता है, अत: वह उचित नहीं हो सकता।
15 यहाँ तक कि परमेश्वर अपने दूतों तक का विश्वास नहीं करता है।
यहाँ तक कि स्वर्ग जहाँ स्वर्गदूत रहते हैं पवित्र नहीं है।
16 मनुष्य तो और अधिक पापी है।
वह मनुष्य मलिन और घिनौना है
वह बुराई को जल की तरह गटकता है।

17 "अय्यूब, मेरी बात तू सुन और मैं उसकी व्याख्या तुझसे करूँगा।
मैं तुझे बताऊँगा, जो मैं जानता हूँ।
18 मैं तुझको वे बातें बताऊँगा,
जिन्हें विवेकी पुरुषों ने मुझको बताया है
और विवेकी पुरुषों को उनके पूर्वजों ने बताई थी।
उन विवेकी पुरुषों ने कुछ भी मुझसे नहीं छिपाया।
19 केवल उनके पूर्वजों को ही देश दिया गया था।
उनके देश में कोई परदेशी नहीं था।
20 दुष्ट जन जीवन भर पीड़ा झेलेगा और क्रूर जन
उन सभी वर्षों में जो उसके लिये निश्चित किये गये है, दु:ख उठाता रहेगा।
21 उसके कानों में भयंकर ध्वनियाँ होगी।

जब वह सोचेगा कि वह सुरक्षित है तभी उसके शत्रु उस पर हमला करेंगे।
22 दुष्ट जन बहुत अधिक निराश रहता है और उसके लिये कोई आशा नहीं है, कि वह अंधकार से बच निकल पाये।
कहीं एक ऐसी तलवार है जो उसको मार डालने की प्रतिज्ञा कर रही है।
23 वह इधर—उधर भटकता हुआ फिरता है किन्तु उसकी देह गिद्धों का भोजन बनेगी।
उसको यह पता है कि उसकी मृत्यु बहुत निकट है।
24 चिंता और यातनाऐं उसे डरपोक बनाती है और ये बातें उस पर ऐसे वार करती है,
जैसे कोई राजा उसके नष्ट कर डालने को तत्पर हो।
25 क्यो क्योंकि दुष्ट जन परमेश्वर की आज्ञा मानने से इन्कार करता है, वह परमेश्वर को घूसा दिखाता हैय?
और सर्वशक्तिमान परमेश्वर को पराजित करने का प्रयास करता है।
26 वह दुष्ट जन बहुत हठी है।
वह परमेश्वर पर एक मोटी मजबूत ढाल से वार करना चाहता है।
27 दुष्ट जन के मुख पर चर्बी चढ़ी रहती है।
उसकी कमर माँस भर जाने से मोटी हो जाती है।
28 किन्तु वह उजड़े हुये नगरों में रहेगा।
वह ऐसे घरों में रहेगा जहाँ कोई नहीं रहता है।
जो घर कमजोर हैं और जो शीघ्र ही खण्डहर बन जायेंगे।
29 दुष्ट जन अधिक समय तक
धनी नहीं रहेगा
उसकी सम्पत्तियाँ नहीं बढ़ती रहेंगी।
30 दुष्ट जन अन्धेरे से नहीं बच पायेगा।
वह उस वृक्ष सा होगा जिसकी शाखाऐं आग से झुलस गई हैं।

परमेश्वर की फूँक दुष्टों को उड़ा देगी।
31 दुष्ट जन व्यर्थ वस्तुओं के भरोसे रह कर अपने को मूर्ख न बनाये
क्योंकि उसे कुछ नहीं प्राप्त होगा।
32 दुष्ट जन अपनी आयु के पूरा होने से पहले ही बूढ़ा हो जायेगा
और सूख जायेगा।
वह एक सूखी हुई डाली सा हो जायेगा जो फिर कभी भी हरी
नहीं होगी।
33 दुष्ट जन उस अंगूर की बेल सा होता है जिस के फल पकने से
पहले ही झड़ जाते हैं।
ऐसा व्यक्ति जैतून के पेड़ सा होता है, जिसके फूल झड़ जाते
हैं।
34 क्यों क्योंकि परमेश्वर विहीन लोग खाली हाथ रहेंगे।
ऐसे लोग जिनको पैसों से प्यार है, घूस लेते हैं। उनके घर आग
से नष्ट हो जायेंगे।
35 वे पीड़ा का कुचक्र रचते हैं और बुरे काम करते हैं।
वे लोगों को छलने के ढंगों की योजना बनाते हैं।"

16

1 इस पर अय्यूब ने उत्तर देते हुए कहा:

2 "मैंने पहले ही ये बातें सुनी हैं।
तुम तीनों मुझे दुःख देते हो, चैन नहीं।
3 तुम्हारी व्यर्थ की लम्बी बातें कभी समाप्त नहीं होती।
तुम क्यों तर्क करते ही रहते हो?
4 जैसे तुम कहते हो वैसी बातें तो मैं भी कर सकता हूँ,
यदि तुम्हें मेरे दुःख झेलने पड़ते।
तुम्हारे विरोध में बुद्धिमत्ता की बातें मैं भी बना सकता हूँ
और अपना सिर तुम पर नचा सकता हूँ।

5 किन्तु मैं अपने वचनों से तुम्हारा साहस बढ़ा सकता हूँ और तुम्हारे
लिये आशा बन्धा सकता हूँ?

6 “किन्तु जो कुछ मैं कहता हूँ उससे मेरा दुःख दूर नहीं हो सकता।
किन्तु यदि मैं कुछ भी न कहूँ तो भी मुझे चैन नहीं पड़ता।
7 सचमुच हे परमेश्वर तूने मेरी शक्ति को हर लिया है।
तूने मेरे सारे घराने को नष्ट कर दिया है।
8 तूने मुझे बांध दिया और हर कोई मुझे देख सकता है। मेरी देह
दुर्बल है,
मैं भयानक दिखता हूँ और लोग ऐसा सोचते हैं जिस का
तात्पर्य है कि मैं अपराधी हूँ।

9 “परमेश्वर मुझ पर प्रहार करता है।
वह मुझ पर कुपित है और वह मेरी देह को फाड़ कर अलग
कर देता है,
तथा परमेश्वर मेरे ऊपर दाँत पीसता है।
मुझे शत्रु घृणा भरी दृष्टि से घूरते हैं।
10 लोग मेरी हँसी करते हैं।
वे सभी भीड़ बना कर मुझे घेरने को और मेरे मुँह पर थप्पड़
मारने को सहमत हैं।
11 परमेश्वर ने मुझे दुष्ट लोगों के हाथ में अर्पित कर दिया है।
उसने मुझे पापी लोगों के द्वारा दुःख दिया है।
12 मेरे साथ सब कुछ भला चंगा था
किन्तु तभी परमेश्वर ने मुझे कुचल दिया। हाँ,
उसने मुझे पकड़ लिया गर्दन से
और मेरे चिथड़े चिथड़े कर डाले।
परमेश्वर ने मुझको निशाना बना लिया।
13 परमेश्वर के तीरंदाज मेरे चारों तरफ है।

वह मेरे गुर्दों को बाणों से बेधता है।
वह दया नहीं दिखाता है।
वह मेरे पित्त को धरती पर बिखेरता है।
14 परमेश्वर मुझ पर बार बार वार करता है।
वह मुझ पर ऐसे झपटता है जैसे कोई सैनिक युद्ध में झपटता है।

15 “मैं बहुत ही दु:खी हूँ
इसलिये मैं टाट के वस्त्र पहनता हूँ।
यहाँ मिट्टी और राख में मैं बैठा रहता हूँ
और सोचा करता हूँ कि मैं पराजित हूँ।
16 मेरा मुख रोते—बिलखते लाल हुआ।
मेरी आँखों के नीचे काले घेरे हैं।
17 मैंने किसी के साथ कभी भी क्रूरता नहीं की।
किन्तु ये बुरी बातें मेरे साथ घटित हुई।
मेरी प्रार्थनाऐं सही और सच्चे हैं।

18 “हे पृथ्वी, तू कभी उन अत्याचारों को मत छिपाना जो मेरे साथ किये गये हैं।
मेरी न्याय की विनती को तू कभी रूकने मत देना।
19 अब तक भी सम्भव है कि वहाँ आकाश में कोई तो मेरे पक्ष में हो।
कोई ऊपर है जो मुझे दोषरहित सिद्ध करेगा।
20 मेरे मित्र मेरे विरोधी हो गये हैं
किन्तु परमेश्वर के लिये मेरी आँखें आँसू बहाती हैं।
21 मुझे कोई ऐसा व्यक्ति चाहिये जो परमेश्वर से मेरा मुकदमा लड़े।
एक ऐसा व्यक्ति जो ऐसे तर्क करे जैसे निज मित्र के लिये करता हो।

22 “कुछ ही वर्ष बाद मैं वहाँ चला जाऊँगा
जहाँ से फिर मैं कभी वापस न आऊँगा (मृत्यु)।

17

1 “मेरा मन टूट चुका है।
मेरा मन निराश है।
मेरा प्राण लगभग जा चुका है।
कब्र मेरी बाट जोह रही है।
2 लोग मुझे घेरते हैं और मुझ पर हँसते हैं।
जब लोग मुझे सताते हैं और मेरा अपमान करते है, मैं उन्हें देखता हूँ।

3 “परमेश्वर, मेरे निरपराध होने का शपथ—पत्र मेरा स्वीकार कर।
मेरी निर्दोषता की साक्षी देने के लिये कोई तैयार नहीं होगा।
4 मेरे मित्रों का मन तूने मूँदा अत:
वे मुझे कुछ नहीं समझते हैं।
कृपा कर उन को मत जीतने दे।
5 लोगों की कहावत को तू जानता है।
मनुष्य जो ईनाम पाने को मित्र के विषय में गलत सूचना देते हैं,
उनके बच्चे अन्धे हो जाया करते हैं।
6 परमेश्वर ने मेरा नाम हर किसी के लिये अपशब्द बनाया है
और लोग मेरे मुँह पर थूका करते हैं।
7 मेरी आँख लगभग अन्धी हो चुकी है क्योंकि मैं बहुत दु:खी और बहुत पीड़ा में हूँ।
मेरी देह एक छाया की भाँति दुर्बल हो चुकी है।
8 मेरी इस दुर्दशा से सज्जन बहुत व्याकुल हैं।

निरपराधी लोग भी उन लोगों से परेशान हैं जिनको परमेश्वर की चिन्ता नहीं है।
9 किन्तु सज्जन नेकी का जीवन जीते रहेंगे।
निरपराधी लोग शक्तिशाली हो जायेंगे।

10 "किन्तु तुम सभी आओ और फिर मुझ को दिखाने का यत्न करो कि सब दोष मेरा है।
तुममें से कोई भी विवेकी नहीं।
11 मेरा जीवन यूँ ही बात रहा है।
मेरी याजनाऐं टूट गई है और आशा चली गई है।
12 किन्तु मेरे मित्र रात को दिन सोचा करते हैं।
जब अन्धेरा होता है, वे लोग कहा करते हैं, 'प्रकाश पास ही है।'

13 "यदि मैं आशा करूँ कि अन्धकारपूर्ण कब्र
मेरा घर और बिस्तर होगा।
14 यदि मैं कब्र से कहूँ 'तू मेरा पिता है'
और कीड़े से 'तू मेरी माता है अथवा तू मेरी बहन है।'
15 किन्तु यदि वह मेरी एकमात्र आशा है तब तो कोई आशा मुझे नहीं हैं
और कोई भी व्यक्ति मेरे लिये कोई आशा नहीं देख सकता है।
16 क्या मेरी आशा भी मेरे साथ मृत्यु के द्वार तक जायेगी
क्या मैं और मेरी आशा एक साथ धूल में मिलेंगे"

18

अय्यूब को बिल्दद का उत्तर

1 फिर शूही प्रदेश के बिल्दद ने उत्तर देते हूए कहा:

2 “अय्यूब, इस तरह की बातें करना तू कब छोड़ेगा
तुझे चुप होना चाहिये और फिर सुनना चाहिये।
तब हम बातें कर सकते हैं।
3 तू क्यों यह सोचता हैं कि हम उतने मूर्ख हैं जितनी मूर्ख गायें।
4 अय्यूब, तू अपने क्रोध से अपनी ही हानि कर रहा है।
क्या लोग धरती बस तेरे लिये छोड़ दे क्या तू यह सोचता है कि
बस तुझे तृप्त करने को परमेश्वर धरती को हिला देगा?

5 “हाँ, बुरे जन का प्रकाश बुझेगा
और उसकी आग जलना छोड़ेगी।
6 उस के तम्बू का प्रकाश काला पड़ जायेगा
और जो दीपक उसके पास है वह बुझ जायेगा।
7 उस मनुष्य के कदम फिर कभी मजबूत और तेज नहीं होंगे।
किन्तु वह धीरे चलेगा और दुर्बल हो जायेगा।
अपने ही कुचक्रों से उसका पतन होगा।
8 उसके अपने ही कदम उसे एक जाल के फन्दे में गिरा देंगे।
वह चल कर जाल में जायेगा और फंस जायेगा।
9 कोई जाल उसकी एड़ी को पकड़ लेगा।
एक जाल उसको कसकर जकड़ लेगा।
10 एक रस्सा उसके लिये धरती में छिपा होगा।
कोई जाल राह में उसकी प्रतीक्षा में है।
11 उसके तरफ आतंक उसकी टोह में हैं।
उसके हर कदम का भय पीछा करता रहेगा।
12 भयानक विपत्तियाँ उसके लिये भूखी हैं।
जब वह गिरेगा, विनाश और विध्वंस उसके लिये तत्पर रहेंगे।
13 महाव्याधि उसके चर्म के भागों को निगल जायेगी।
वह उसकी बाहों और उसकी टाँगों को सड़ा देगी।
14 अपने घर की सुरक्षा से दुर्जन को दूर किया जायेगा

और आतंक के राजा से मिलाने के लिये उसको चलाकर ले जाया जायेगा।
15 उसके घर में कुछ भी न बचेगा
क्योंकि उसके समूचे घर में धधकती हुई गन्धक बिखेरी जायेगी।
16 नीचे गई जड़ें उसकी सूख जायेंगी
और उसके ऊपर की शाखाएं मुरझा जायेंगी।
17 धरती के लोग उसको याद नहीं करेंगे।
बस अब कोई भी उसको याद नहीं करेगा।
18 प्रकाश से उसको हटा दिया जायेगा और वह अंधकार में ढकेल जायेगा।
वे उसको दुनियां से दूर भाग देंगे।
19 उसकी कोई सन्तान नहीं होगी अथवा उसके लोगों के कोई वंशज नहीं होंगे।
उसके घर में कोई भी जीवित नहीं बचेगा।
20 पश्चिम के लोग सहमें रह जायेंगे जब वे सुनेंगे कि उस दुर्जन के साथ क्या घटी।
लोग पूर्व के आतंकित हो सुन्न रह जायेंगे।
21 सचमुच दुर्जन के घर के साथ ऐसा ही घटेगा।
ऐसी ही घटेगा उस व्यक्ति के साथ जो परमेश्वर की परवाह नहीं करते।”

19

अय्यूब का उत्तर

1 तब अय्यूब ने उत्तर देते हुए कहा:

2 “कब तक तुम मुझे सताते रहोगे
और शब्दों से मुझको तोड़ते रहोगे
3 अब देखों, तुमने दसियों बार मुझे अपमानित किया है।

मुझ पर वार करते तुम्हें शर्म नहीं आती है।
4 यदि मैंने पाप किया तो यह मेरी समस्या है।
यह तुम्हें हानि नहीं पहुँचाता।
5 तुम बस यह चाहते हो कि तुम मुझसे उत्तम दिखो।
तुम कहते हो कि मेरे कष्ट मुझ को दोषी प्रमाणित करते हैं।
6 किन्तु वह तो परमेश्वर है जिसने मेरे साथ बुरा किया है
और जिसने मेरे चारों तरफ अपना फंदा फैलाया है।
7 मैं पुकारा करता हूँ, 'मेरे संग बुरा किया है।'
लेकिन मुझे कोई उत्तर नहीं मिलता हूँ।
चाहे मैं न्याय की पुकार पुकारा करुँ मेरी कोई नहीं सुनता है।
8 मेरा मार्ग परमेश्वर ने रोका है, इसलिये उसको मैं पार नहीं कर सकता।
उसने अंधकार में मेरा मार्ग छुपा दिया है।
9 मेरा सम्मान परमेश्वर ने छीना है।
उसने मेरे सिर से मुकुट छीन लिया है।
10 जब तक मेरा प्राण नहीं निकल जाता, परमेश्वर मुझ को करवट दर करवट पटकियाँ देता है।
वह मेरी आशा को ऐसे उखाड़ता है
जैसे कोई जड़ से वृक्ष को उखाड़ दे।
11 मेरे विरुद्ध परमेश्वर का क्रोध भड़क रहा है।
वह मुझे अपना शत्रु कहता है।
12 परमेश्वर अपनी सेना मुझ पर प्रहार करने को भेजता है।
वे मेरे चारों और बुर्जियाँ बनाते हैं।
मेरे तम्बू के चारों ओर वे आक्रमण करने के लिये छावनी बनाते हैं।

13 "मेरे बन्धुओं को परमेश्वर ने बैरी बनाया।
अपने मित्रों के लिये मैं पराया हो गया।
14 मेरे सम्बन्धियों ने मुझको त्याग दिया।

मेरे मित्रों ने मुझको भुला दिया।
15 मेरे घर के अतिथि और मेरी दासियाँ
मुझे ऐसे दिखते हैं मानों अन्जाना या परदेशी हूँ।
16 मैं अपने दास को बुलाता हूँ पर वह मेरी नहीं सुनता है।
यहाँ तक कि यदि मैं सहायता माँगू तो मेरा दास मुझको उत्तर नहीं देता।
17 मेरी ही पत्नी मेरे श्वास की गंध से घृणा करती है।
मेरे अपनी ही भाई मुझ से घृणा करते हैं।
18 छोटे बच्चे तक मेरी हँसी उड़ाते है।
जब मैं उनके पास जाता हूँ तो वे मेरे विरुद्ध बातें करते हैं।
19 मेरे अपने मित्र मुझ से घृणा करते हैं।
यहाँ तक कि ऐसे लोग जो मेरे प्रिय हैं, मेरे विरोधी बन गये हैं।

20 "मैं इतना दुर्बल हूँ कि मेरी खाल मेरी हड्डियों पर लटक गई।
अब मुझ में कुछ भी प्राण नहीं बचा है।

21 "हे मेरे मित्रों मुझ पर दया करो, दया करो मुझ पर
क्योंकि परमेश्वर का हाथ मुझ को छू गया है।
22 क्यों मुझे तुम भी सताते हो जैसे मुझको परमेश्वर ने सताया है
क्यों मुझ को तुम दु:ख देते और कभी तृप्त नहीं होते हो

23 "मेरी यह कामना है, कि जो मैं कहता हूँ उसे कोई याद रखे और किसी पुस्तक में लिखे।
मेरी यह कामना है, कि काश! मेरे शब्द किसी गोल पत्रक पर लिखी जाती।
24 मेरी यह कामना है काश! मैं जिन बातों को कहता उन्हें किसी लोहे की टाँकी से सीसे पर लिखा जाता,
अथवा उनको चट्टान पर खोद दिया जाता, ताकि वे सदा के लिये अमर हो जाती।

25 मुझको यह पता है कि कोई एक ऐसा है, जो मुझको बचाता है।
मैं जानता हूँ अंत में वह धरती पर खड़ा होगा और मुझे बचायेगा।
26 यहाँ तक कि मेरी चमड़ी नष्ट हो जाये, किन्तु काश,
मैं अपने जीते जी परमेश्वर को देख सकूँ।
27 अपने लिये मैं परमेश्वर को स्वयं देखना चाहता हूँ।
मैं चाहता हूँ कि स्वयं उसको अपनी आँखों से देखूँ न कि किसी दूसरे की आँखों से।
मेरा मन मुझ में ही उतावला हो रहा है।

28 “सम्भव है तुम कहो, “हम अय्यूब को तंग करेंगे।
उस पर दोष मढ़ने का हम को कोई कारण मिल जायेगा।”
29 किन्तु तुम्हें स्वयं तलवार से डरना चाहिये क्योंकि पापी के विरुद्ध परमेश्वर का क्रोध दण्ड लायेगा।
तुम्हें दण्ड देने को परमेश्वर तलवार काम में लायेगा
तभी तुम समझोगे कि वहाँ न्याय का एक समय है।”

20

1 इस पर नामात प्रदेश के सोपर ने उत्तर दिया:

2 “अय्यूब, तेरे विचार विकल है, सो मैं तुझे निश्चय ही उत्तर दूँगा।
मुझे निश्चय ही जल्दी करनी चाहिये तुझको बताने को कि मैं क्या सोच रहा हूँ।
3 तेरे सुधान भरे उत्तर हमारा अपमान करते हैं।
किन्तु मैं विवेकी हूँ और जानता हूँ कि तुझे कैसे उत्तर दिया जाना चाहिये।

4-5 “इसे तू तब से जानता है जब बहुत पहले आदम को धरती पर
भेजा गया था, दुष्ट जन का आनन्द बहुत दिनों नहीं टिकता
हैं।
ऐसा व्यक्ति जिसे परमेश्वर की चिन्ता नहीं है
वह थोड़े समय के लिये आनन्दित होता है।
6 चाहे दुष्ट व्यक्ति का अभिमान नभ छू जाये,
और उसका सिर बादलों को छू जाये,
7 किन्तु वह सदा के लिये नष्ट हो जायेगा जैसे स्वयं उसका देहमल
नष्ट होगा।
वे लोग जो उसको जानते हैं कहेंगे, ‘वह कहाँ है’
8 वह ऐसे विलुप्त होगा जैसे स्वप्न शीघ्र ही कहीं उड़ जाता है। फिर
कभी कोई उसको देख नहीं सकेगा,
वह नष्ट हो जायेगा, उसे रात के स्वप्न की तरह हाँक दिया
जायेगा।
9 वे व्यक्ति जिन्होंने उसे देखा था फिर कभी नहीं देखेंगे।
उसका परिवार फिर कभी उसको नहीं देख पायेगा।
10 जो कुछ भी उसने (दुष्ट) गरीबों से लिया था उसकी संताने
चुकायेंगी।
उनको अपने ही हाथों से अपना धन लौटाना होगा।
11 जब वह जवान था, उसकी काया मजबूत थी,
किन्तु वह शीघ्र ही मिट्टी हो जायेगी।

12 “दुष्ट के मुख को दुष्टता बड़ी मीठी लगती है,
वह उसको अपनी जीभ के नीचे छुपा लेगा।
13 बुरा व्यक्ति उस बुराई को थामे हुये रहेगा,
उसका दूर हो जाना उसको कभी नहीं भायेगा,
सो वह उसे अपने मुँह में ही थामे रहेगा।
14 किन्तु उसके पेट में उसका भोजन जहर बन जायेगा,

वह उसके भीतर ऐसे बन जायेगा जैसे किसी नाग के विष सा कड़वा जहर।
15 दुष्ट सम्पत्तियों को निगल जाता है किन्तु वह उन्हें बाहर ही उगलेगा।
परमेश्वर दुष्ट के पेट से उनको उगलवायेगा।
16 दुष्ट जन साँपों के विष को चूस लेगा
किन्तु साँपों के विषैले दाँत उसे मार डालेंगे।
17 फिर दुष्ट जन देखने का आनन्द नहीं लेंगे
ऐसी उन नदियों का जो शहद और मलाई लिये बहा करती हैं।
18 दुष्ट को उसका लाभ वापस करने को दबाया जायेगा।
उसको उन वस्तुओं का आनन्द नहीं लेने दिया जायेगा जिनके लिये उसने परिश्रम किया है।
19 क्योंकि उस दुष्ट जन ने दीन जन से उचित व्यवहार नहीं किया।
उसने उनकी परवाह नहीं की और उसने उनकी वस्तुऐं छीन ली थी,
जो घर किसी और ने बनाये थे उसने वे हथियाये थे।

20 "दुष्ट जन कभी भी तृप्त नहीं होता है,
उसका धन उसको नहीं बचा सकता है।
21 जब वह खाता है तो कुछ नहीं छोड़ता है,
सो उसकी सफलता बनी नहीं रहेगी।
22 जब दुष्ट जन के पास भरपूर होगा
तभी दु:खों का पहाड़ उस पर टूटेगा।
23 दुष्ट जन वह सब कुछ खा चुकेगा जिसे वह खाना चाहता है।
परमेश्वर अपना धधकता क्रोध उस पर डालेगा।
उस दुष्ट व्यक्ति पर परमेश्वर दण्ड बरसायेगा।
24 सम्भव है कि वह दुष्ट लोहे की तलवार से बच निकले,
किन्तु कहीं से काँसे का बाण उसको मार गिरायेगा।

25 वह काँसे का बाण उसके शरीर के आर पार होगा और उसकी पीठ भेद कर निकल जायेगा।
उस बाण की चमचमाती हुई नोंक उसके जिगर को भेद जायेगी
और वह भय से आतंकित हो जायेगा।
26 उसके सब खजाने नष्ट हो जायेंगे,
एक ऐसी आग जिसे किसी ने नहीं जलाया उसको नष्ट करेगी,
वह आग उनको जो उसके घर में बचे हैं नष्ट कर डालेगी।
27 स्वर्ग प्रमाणित करेगा कि वह दुष्ट अपराधी है,
यह गवाही धरती उसके विरुद्ध देगी।
28 जो कुछ भी उसके घर में है,
वह परमेश्वर के क्रोध की बाढ़ में बह जायेगा।
29 यह वही है जिसे परमेश्वर दुष्टों के साथ करने की योजना रचता है।
यह वही है जैसा परमेश्वर उन्हें देने की योजना रचता है।”

21

अय्यूब का उत्तर

1 इस पर अय्यूब ने उत्तर देते हुए कहा:

2 “तू कान दे उस पर जो मैं कहता हूँ,
तेरे सुनने को तू चैन बनने दे जो तू मुझे देता है।
3 जब मैं बोलता हूँ तो तू धीरज रख,
फिर जब मैं बोल चुकूँ तब तू मेरी हँसी उड़ा सकता है।

4 “मेरी शिकायत लोगों के विरुद्ध नहीं है,
मैं क्यों सहनशील हूँ इसका एक कारण नहीं है।
5 तू मुझ को देख और तू स्तंभित हो जा,
अपना हाथ अपने मुख पर रख और मुझे देख और स्तब्ध हो।

6 जब मैं सोचता हूँ उन सब को जो कुछ मेरे साथ घटा तो
मुझको डर लगता है और मेरी देह थर थर काँपती है।
7 क्यों बुरे लोगों की उम्र लम्बी होती है
क्यों वे वृद्ध और सफल होते हैं
8 बुरे लोग अपनी संतानों को अपने साथ बढ़ते हुए देखते हैं।
बुरे लोग अपनी नाती—पोतों को देखने को जीवित रहा करते हैं।
9 उनके घर सुरक्षित रहते हैं और वे नहीं डरते हैं।
परमेश्वर दुष्टों को सजा देने के लिये अपना दण्ड काम में नहीं लाता है।
10 उनके सांड कभी भी बिना जोड़ा बांधे नहीं रहे,
उनकी गायों के बे छरे होते हैं और उनके गर्भ कभी नहीं गिरते हैं।
11 बुरे लोग बच्चों को बाहर खेलने भेजते हैं मेमनों के जैसे,
उनके बच्चें नाचते हैं चारों ओर।
12 वीणा और बाँसुरी के स्वर पर वे गाते और नाचते हैं।
13 बुरे लोग अपने जीवन भर सफलता का आनन्द लेते हैं।
फिर बिना दु:ख भोगे वे मर जाते हैं और अपनी कब्रों के बीच चले जाते हैं।
14 किन्तु बुरे लोग परमेश्वर से कहा करते है, ‘हमें अकेला छोड़ दे।
और इसकी हमें परवाह नहीं कि
तू हमसे कैसा जीवन जीना चाहता है।’

15 “दुष्ट लोग कहा करते हैं, ‘सर्वशक्तिमान परमेश्वर कौन है
हमको उसकी सेवा की जरूरत नहीं है।
उसकी प्रार्थना करने का कोई लाभ नहीं।’

16 “दुष्ट जन सोचते है कि उनको अपने ही कारण सफलताऐं मिलती हैं,

किन्तु मैं उनको विचारों को नहीं अपना सकता हूँ।
17 किन्तु क्या प्राय: ऐसा होता है कि दुष्ट जन का प्रकाश बुझ जाया करता है
कितनी बार दुष्टों को दु:ख घेरा करते हैं
क्या परमेश्वर उनसे कुपित हुआ करता है, और उन्हें दण्ड देता है
18 क्या परमेश्वर दुष्ट लोगों को ऐसे उड़ाता है जैसे हवा तिनके को उड़ाती है
और तेज हवायें अन्न का भूसा उड़ा देती हैं
19 किन्तु तू कहता है: 'परमेश्वर एक बच्चे को उसके पिता के पापों का दण्ड देता है।'
नहीं, परमेश्वर को चाहिये कि बुरे जन को दण्डित करें। तब वह बुरा व्यक्ति जानेगा कि उसे उसके निज पापों के लिये दण्ड मिल रहा है।
20 तू पापी को उसके अपने दण्ड को दिखा दे,
तब वह सर्वशक्तिशाली परमेश्वर के कोप का अनुभव करेगा।
21 जब बुरे व्यक्ति की आयु के महीने समाप्त हो जाते हैं और वह मर जाता है;
वह उस परिवार की परवाह नहीं करता जिसे वह पीछे छोड़ जाता है।

22 "कोई व्यक्ति परमेश्वर को ज्ञान नहीं दे सकता,
वह ऊँचे पदों के जनों का भी न्याय करता है।
23 एक पूरे और सफल जीवन के जीने के बाद एक व्यक्ति मरता है,
उसने एक सुरक्षित और सुखी जीवन जिया है।
24 उसकी काया को भरपूर भोजन मिला था
अब तक उस की हड्डियाँ स्वस्थ थीं।
25 किन्तु कोई एक और व्यक्ति कठिन जीवन के बाद दु:ख भरे मन से मरता है,

उसने जीवन का कभी कोई रस नहीं चखा।
26 ये दोनो व्यक्ति एक साथ माटी में गड़े सोते हैं,
कीड़े दोनों को एक जैसे ढक लेंगे।

27 “किन्तु मैं जानता हूँ कि तू क्या सोच रहा है,
और मुझको पता है कि तेरे पास मेरा बुरा करने को कुचक्र है।
28 मेरे लिये तू यह कहा करता है कि ‘अब कहाँ है उस महाव्यक्ति का घर कहाँ है
वह घर जिसमें वह दुष्ट रहता था?’

29 “किन्तु तूने कभी बटोहियों से नहीं पूछा
और उनकी कहानियों को नहीं माना।
30 कि उस दिन जब परमेश्वर कुपित हो कर दण्ड देता है
दुष्ट जन सदा बच जाता है।
31 ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो उसके मुख पर ही उसके कर्मों की बुराई करे,
उसके बुरे कर्मों का दण्ड कोई व्यक्ति उसे नहीं देता।
32 जब कोई दुष्ट व्यक्ति कब्र में ले जाया जाता है,
तो उसके कब्र के पास एक पहरेदार खड़ा रहता है।
33 उस दुष्ट जन के लिये उस घाटी की मिट्टी मधुर होगी,
उसकी शव—यात्रा में हजारों लोग होंगे।

34 “सो अपने कोरे शब्दों से तू मुझे चैन नहीं दे सकता,
तेरे उत्तर केवल झूठे हैं।”

22

एलीपज का उत्तर

1 फिर तेमान नगर के एलीपज ने उत्तर देते हुए कहा:

2 “परमेश्वर को कोई भी व्यक्ति सहारा नहीं दे सकता,
यहाँ तक की वह भी जो बहुत बुद्धिमान व्यक्ति हो परमेश्वर के लिये हितकर नहीं हो सकता।
3 यदि तूने वही किया जो उचित था तो इससे सर्वशक्तिमान परमेश्वर को आनन्द नहीं मिलेगा,
और यदि तू सदा खरा रहा तो इससे उसको कुछ नहीं मिलेगा।
4 अय्यूब, तुझको परमेश्वर क्यों दण्ड देता है और क्यों तुझ पर दोष लगाता है
क्या इसलिए कि तू उसका सम्मान नहीं करता
5 नहीं, ये इसलिए की तूने बहुत से पाप किये हैं,
अय्यूब, तेरे पाप नहीं रुकते हैं।
6 अय्यूब, सम्भव है कि तूने अपने किसी भाई को कुछ धन दिया हो,
और उसको दबाया हो कि वह कुछ गिरवी रख दे ताकि ये प्रमाणित हो सके कि वह तेरा धन वापस करेगा।
सम्भव है किसी दीन के कर्जे के बदले तूने कपड़े गिरवी रख लिये हों, सम्भव है तूने वह व्यर्थ ही किया हो।
7 तूने थके—मांदे को जल नहीं दिया,
तूने भूखों के लिये भोजन नहीं दिया।
8 अय्यूब, यद्यपि तू शक्तिशाली और धनी था,
तूने उन लोगों को सहारा नहीं दिया।
तू बड़ा जमींदार और सामर्थी पुरुष था,
9 किन्तु तूने विधवाओं को बिना कुछ दिये लौटा दिया।
अय्यूब, तूने अनाथ बच्चों को लूट लिया और उनसे बुरा व्यवहार किया।
10 इसलिए तेरे चारों तरफ जाल बिछे हुए हैं

और तुझ को अचान्क आती विपत्तियाँ डराती हैं।
11 इसलिए इतना अंधकार है कि तुझे सूझ पड़ता है
और इसलिए बाढ़ का पानी तुझे निगल रहा है।

12 “परमेश्वर आकाश के उच्चतम भाग में रहता है, वह सर्वोच्च तारों के नीचे देखता है,
तू देख सकता है कि तारे कितने ऊँचे हैं।
13 किन्तु अय्यूब, तू तो कहा करता है कि परमेश्वर कुछ नहीं जानता,
काले बादलों से कैसे परमेश्वर हमें जाँच सकता है
14 घने बादल उसे छुपा लेते हैं, इसलिये जब वह आकाश के उच्चतम भाग में विचरता है
तो हमें ऊपर आकाश से देख नहीं सकता।

15 “अय्यूब, तू उस ही पुरानी राह पर
जिन पर दुष्ट लोग चला करते हैं, चल रहा है।
16 अपनी मृत्यु के समय से पहले ही दुष्ट लोग उठा लिये गये,
बाढ़ उनको बहा कर ले गयी थी।
17 ये वही लोग है जो परमेश्वर से कहते हैं कि हमें अकेला छोड़ दो,
सर्वशक्तिमान परमेश्वर हमारा कुछ नहीं कर सकता है।
18 किन्तु परमेश्वर ने उन लोगों को सफल बनाया है और उन्हें धनवान बना दिया।
किन्तु मैं वह ढंग से जिससे दुष्ट सोचते हैं, अपना नहीं सकता हूँ।
19 सज्जन जब बुरे लोगों का नाश देखते हैं, तो वे प्रसन्न होते है।
त लोग दुष्टों पर हँसते है और कहा करते हैं,
20 ‘हमारे शत्रु सचमुच नष्ट हो गये!
आग उनके धन को जला देती है।

21 “अय्यूब, अब स्वयं को तू परमेश्वर को अर्पित कर दे, तब तू शांति पायेगा।
यदि तू ऐसा करे तो तू धन्य और सफल हो जायेगा।
22 उसकी सीख अपना ले,
और उसके शब्द निज मन में सुरक्षित रख।
23 अय्यूब, यदि तू फिर सर्वशक्तिमान परमेश्वर के पास आये तो फिर से पहले जैसा हो जायेगा।
तुझको अपने घर से पाप को बहुत दूर करना चाहिए।
24 तुझको चाहिये कि तू निज सोना धूल में
और निज ओपीर का कुन्दन नदी में चट्टानो पर फेंक दे।
25 तब सर्वशक्तिमान परमेश्वर तेरे लिये
सोना और चाँदी बन जायेगा।
26 तब तू अति प्रसन्न होगा और तुझे सुख मिलेगा।
परमेश्वर के सामने तू बिना किसी शर्म के सिर उठा सकेगा।
27 जब तू उसकी विनती करेगा तो वह तेरी सुना करेगा,
जो प्रतिज्ञा तूने उससे की थी, तू उसे पूरा कर सकेगा।
28 जो कुछ तू करेगा उसमें तुझे सफलता मिलेगी,
तेरे मार्ग पर प्रकाश चमकेगा।
29 परमेश्वर अहंकारी जन को लज्जित करेगा,
किन्तु परमेश्वर नम्र व्यक्ति की रक्षा करेगा।
30 परमेश्वर जो मनुष्य भोला नहीं है उसकी भी रक्षा करेगा,
तेरे हाथों की स्वच्छता से उसको उद्धार मिलेगा।”

23

1 फिर अय्यूब ने उत्तर देते हुये कहा:

2 “मैं आज भी बुरी तरह शिकायत करता हूँ कि परमेश्वर मुझे कड़ा दण्ड दे रहा है,
इसलिये मैं शिकायत करता रहता हूँ।

3 काश! मैं यह जान पाता कि उसे कहाँ खोजूँ!
काश! मैं जान पाता की परमेश्वर के पास कैसे जाऊँ!
4 मैं अपनी कथा परमेश्वर को सुनाता,
मेरा मुँह युक्तियों से भरा होता यह दर्शाने को कि मैं निर्दोष हूँ।
5 मैं यह जानना चाहता हूँ कि परमेश्वर कैसे मेरे तर्को का उत्तर देता है,
तब मैं परमेश्वर के उत्तर समझ पाता।
6 क्या परमेश्वर अपनी महाशक्ति के साथ मेरे विरुद्ध होता
नहीं! वह मेरी सुनेगा।
7 मैं एक नेक व्यक्ति हूँ।
परमेश्वर मुझे अपनी कहानी को कहने देगा, तब मेरा न्यायकर्ता परमेश्वर मुझे मुक्त कर देगा।

8 "किन्तु यदि मैं पूरब को जाऊँ तो परमेश्वर वहाँ नहीं है
और यदि मैं पश्चिम को जाऊँ, तो भी परमेश्वर मुझे नहीं दिखता है।
9 परमेश्वर जब उत्तर में क्रियाशील रहता है तो मैं उसे देख नहीं पाता हूँ।
जब परमेश्वर दक्षिण को मुड़ता है, तो भी वह मुझको नहीं दिखता है।
10 किन्तु परमेश्वर मेरे हर चरण को देखता है, जिसको मैं उठाता हूँ।
जब वह मेरी परीक्षा ले चुकेगा तो वह देखेगा कि मुझमें कुछ भी बुरा नहीं है, वह देखेगा कि मैं खरे सोने सा हूँ।
11 परमेश्वर जिस को चाहता है मैं सदा उस पर चला हूँ,
मैं कभी भी परमेश्वर की राह पर चलने से नहीं मुड़ा।
12 मैं सदा वही बात करता हूँ जिनकी आशा परमेश्वर देता है।
मैंने अपने मुख के भोजन से अधिक परमेश्वर के मुख के शब्दों से प्रेम किया है।

13 “किन्तु परमेश्वर कभी नहीं बदलता।
कोई भी व्यक्ति उसके विरुद्ध खड़ा नहीं रह सकता है।
परमेश्वर जो भी चाहता है, करता है।
14 परमेश्वर ने जो भी योजना मेरे विरोध में बना ली है वही करेगा,
उसके पास मेरे लिये और भी बहुत सारी योजनायें है।
15 मैं इसलिये डरता हूँ, जब इन सब बातों के बारे में सोचता हूँ।
इसलिये परमेश्वर मुझको भयभीत करता है।
16 परमेश्वर मेरे हृदय को दुर्बल करता है और मेरी हिम्मत टूटती है।
सर्वशक्तिमान परमेश्वर मुझको भयभीत करता है।
17 यद्यपि मेरा मुख सघन अंधकार ढकता है
तो भी अंधकार मुझे चुप नहीं कर सकता है।

24

1 “सर्वशक्तिमान परमेश्वर क्यों नहीं न्याय करने के लिये समय नियुक्त करता है?
लोग जो परमेश्वर को मानते हैं उन्हें क्यों न्याय के समय की व्यर्थ बाट जोहनी पड़ती है

2 “लोग अपनी सम्पत्ति के चिन्हों को, जो उसकी सीमा बताते है, सरकाते रहते हैं ताकि अपने पड़ोसी की थोड़ी और धरती हड़प लें!
लोग पशु को चुरा लेते हैं और उन्हें चरागाहों में हाँक ले जाते हैं।
3 अनाथ बच्चों के गधे को वे चुरा ले जाते हैं।
विधवा की गाय वे खोल ले जाते है। जब तक की वह उनका कर्ज नहीं चुकाती है।
4 वे दीन जन को मजबूर करते है कि वह छोड़ कर दूर हट जाने को विवश हो जाता है,
इन दुष्टों से स्वयं को छिपाने को।

5 “वे दीन जन उन जंगली गदहों जैसे हैं जो मरुभूमि में अपना चारा खोजा करते हैं।
गरीबों और उनके बच्चों को मरुभूमि भोजन दिया करता है।
6 गरीब लोग भूसा और चारा साथ साथ ऐसे उन खेतों से पाते हैं जिनके वे अब स्वामी नहीं रहे।
दुष्टों के अंगूरों के बगीचों से बचे फल वे बीना करते हैं।
7 दीन जन को बिना कपड़ों के रातें बितानी होंगी,
सर्दी में उनके पास अपने ऊपर ओढ़ने को कुछ नहीं होगा।
8 वे वर्षा से पहाड़ों में भीगें हैं, उन्हें बड़ी चट्टानों से सटे हुये रहना होगा,
क्योंकि उनके पास कुछ नहीं जो उन्हें मौसम से बचा ले।
9 बुरे लोग माता से वह बच्चा जिसका पिता नहीं है छीन लेते हैं।
गरीब का बच्चा लिया करते हैं, उसके बच्चे को, कर्ज के बदले में वे बन्धुवा बना लेते हैं।
10 गरीब लोगों के पास वस्त्र नहीं होते हैं, सो वे काम करते हुये नंगे रहा करते हैं।
दुष्टों के गट्ठर का भार वे ढोते है, किन्तु फिर भी वे भूखे रहते हैं।
11 गरीब लोग जैतून का तेल पेर कर निकालते हैं।
वे कुंडो में अंगूर रौंदते हैं फिर भी वे प्यासे रहते हैं।
12 मरते हुये लोग जो आहें भरते हैं। वे नगर में सुनाई देती हैं।
सताये हुये लोग सहारे को पुकारते हैं, किन्तु परमेश्वर नहीं सुनता है।

13 “कुछ ऐसे लोग हैं जो प्रकाश के विरुद्ध होते हैं।
वे नहीं जानना चाहते हैं कि परमेश्वर उनसे क्या करवाना चाहता है।
परमेश्वर की शह पर वे नहीं चलते हैं।

14 हत्यारा तड़के जाग जाया करता है गरीबों और जरुरत मंद लोगों
की हत्या करता है,
और रात में चोर बन जाता है।
15 वह व्यक्ति जो व्यभिचार करता है, रात आने की बाट जोहा करता
है,
वह सोचता है उस कोई नहीं देखेगा और वह अपना मुख ढक
लेता है।
16 दुष्ट जन जब रात में अंधेरा होता है, तो सेंध लगा कर घर में घुसते
हैं।
किन्तु दिन में वे अपने ही घरों में छुपे रहते हैं, वे प्रकाश से
बचते हैं।
17 उन दुष्ट लोगों का अंधकार सुबह सा होता है,
वे आतंक व अंधेरे के मित्र होते है।

18 "दुष्ट जन ऐसे वहा दिये जाते हैं, जैसे झाग बाढ़ के पानी पर।
वह धरती अभिशिप्त है जिसके वे मालिक हैं, इसलिये वे अंगूर
के बगीचों में अगूंर बिनने नहीं जाते हैं।
19 जैसे गर्म व सूखा मौसम पिघलती बर्फ के जल को सोख लेता है,
वैसे ही दुष्ट लोग कब्र द्वारा निगले जायेंगे।
20 दुष्ट मरने के बाद उसकी माँ तक उसे भूल जायेगी, दुष्ट की देह
को कीड़े खा जायेंगे।
उसको थोड़ा भी नहीं याद रखा जायेगा, दुष्ट जन गिरे हुये पेड़
से नष्ट किये जायेंगे।
21 ऐसी स्त्री को जिसके बच्चे नहीं हो सकते, दुष्ट जन उन्हें सताया
करते हैं,
वे उस स्त्री को दु:ख देते हैं, वे किसी विधवा के प्रति दया
नहीं दिखाते हैं।
22 बुरे लोग अपनी शक्ति का उपयोग बलशाली को नष्ट करने के
लिये करते है।

बुरे लोग शक्तिशाली हो जायेंगे, किन्तु अपने ही जीवन का
उन्हें भरोसा नहीं होगा कि वे अधिक दिन जी पायेंगे।
23 सम्भव है थोड़े समय के लिये परमेश्वर शक्तिशाली को सुरक्षित
रहने दे,
किन्तु परमेश्वर सदा उन पर आँख रखता है।
24 दुष्ट जन थोड़े से समय के लिये सफलता पा जाते हैं किन्तु फिर
वे नष्ट हो जाते हैं।
दूसरे लोगों की तरह वे भी समेट लिये जाते हैं। अन्न की कटी
हुई बाल के समान वे गिर जाते हैं।

25 "यदि ये बातें सत्य नहीं हैं तो
कौन प्रमाणित कर सकता है कि मैंने झूठ कहा है
कौन दिखा सकता है कि मेरे शब्द प्रलयमात्र हैं?"

25

बिल्दद का अय्यूब को उत्तर

1 फिर शूह प्रदेश के निवासी बिल्दद ने उत्तर देते हुये कहा:

2 "परमेश्वर शासक है और हर व्यक्ति को चाहिये की
परमेश्वर से डरे और उसका मान करे।
परमेश्वर अपने स्वर्ग के राज्य में शांति रखता है।
3 कोई उसकी सेनाओं को गिन नहीं सकता है,
परमेश्वर का प्रकाश सब पर चमकता है।
4 किन्तु सचमुच परमेश्वर के आगे कोई व्यक्ति उचित नहीं ठहर
सकता है।
कोई व्यक्ति जो स्त्री से उत्पन्न हुआ सचमुच निर्दोष नहीं हो
सकता है।
5 परमेश्वर की आँखों के सामने चाँद तक चमकीला नहीं है।
परमेश्वर की आँखों के सामने तारे निर्मल नहीं हैं।

6 मनुष्य तो बहुत कम भले है।
मनुष्य तो बस गिंडार है एक ऐसा कीड़ा जो बेकार का होता है।"

26

अय्यूब का बिल्दद को उत्तर:

1 तब अय्यूब ने कहा:

2 "हे बिल्दद, सोपर और एलीपज जो लोग दुर्बल हैं तुम सचमुच उनको सहारा दे सकते हो।
अरे हाँ! तुमने दुर्बल बाँहों को फिर से शक्तिशाली बनाया है।
3 हाँ, तुमने निर्बुद्धि को अद्भुत सम्मत्ति दी है।
कैसा महाज्ञान तुमने दिखाया है!
4 इन बातों को कहने में किसने तुम्हारी सहायता की
किसकी आत्मा ने तुम को प्रेरणा दी

5 "जो लोग मर गये है
उनकी आत्मायें धरती के नीचे जल में भय से प्रकंपित हैं।
6 मृत्यु का स्थान परमेश्वर की आँखों के सामने खुला है,
परमेश्वर के आगे विनाश का स्थान ढका नहीं है।
7 उत्तर के नभ को परमेश्वर फैलाता है।
परमेश्वर ने व्योम के रिक्त पर अधर में धरती लटकायी है।
8 परमेश्वर बादलों को जल से भरता है,
किन्तु जल के प्रभार से परमेश्वर बादलों को फटने नहीं देता है।
9 परमेश्वर पूरे चन्द्रमा को ढकता है,
परमेश्वर चाँद पर निज बादल फैलाता है और उसको ढक देता है।
10 परमेश्वर क्षितिज को रचता है

प्रकाश और अन्धकार की सीमा रेखा के रूप में समुद्र पर।
11 जब परमेश्वर डाँटता है तो
वे नीवें जिन पर आकाश टिका है भय से काँपने लगती है।
12 परमेश्वर की शक्ति सागर को शांत कर देती है।
परमेश्वर की बुद्धि ने राहब (सागर के दैत्य) को नष्ट किया।
13 परमेश्वर का श्वास नभ को साफ कर देता है।
परमेश्वर के हाथ ने उस साँप को मार दिया जिसमें भाग जाने का यत्न किया था।
14 ये तो परमेश्वर के आश्चर्यकर्मों की थोड़ी सी बातें हैं।
बस हम थोड़ा सा परमेश्वर के हल्की—ध्वनि भरे स्वर को सुनते हैं।
किन्तु सचमुच कोई व्यक्ति परमेश्वर के शक्ति के गर्जन को नहीं समझ सकता है।”

27

1 फिर अय्यूब ने आगे कहा:

2 “सचमुच परमेश्वर जीता है और यह जितना सत्य है कि परमेश्वर जीता है
check सचमुच वह वैसे ही मेरे प्रति अन्यायपूर्ण रहा है।
हाँ! सर्वशक्तिशाली परमेश्वर ने मेरे जीवन में कड़वाहट भरी है।
3 किन्तु जब तक मुझ में प्राण है
और परमेश्वर का साँस मेरी नाक में है।
4 तब तक मेरे होंठ बुरी बातें नहीं बोलेंगे,
और मेरी जीभ कभी झूठ नहीं बोलेगी।
5 मैं कभी नहीं मानूँगा कि तुम लोग सही हो!
जब तक मैं मरूँगा उस दिन तक कहता रहूँगा कि मैं निर्दोष हूँ!
6 मैं अपनी धार्मिकता को दृढ़ता से थामें रहूँगा।

मैं कभी उचित कर्म करना न छोड़ूँगा।
मेरी चेतना मुझे तंग नहीं करेगी जब तक मैं जीता हूँ।
7 मेरे शत्रुओं को दुष्ट जैसा बनने दे,
और उन्हें दण्डित होने दे जैसे दुष्ट जन दण्डित होते हैं।
8 ऐसे उस व्यक्ति के लिये मरते समय कोई आशा नहीं है जो परमेश्वर की परवाह नहीं करता है।
जब परमेश्वर उसके प्राण लेगा तब तक उसके लिये कोई आशा नहीं है।
9 जब वह बुरा व्यक्ति दु:खी पड़ेगा और उसको पुकारेगा,
परमेश्वर नहीं सुनेगा।
10 उसको चाहिये था कि वह उस आनन्द को चाहे जिसे केवल सर्वशक्तिमान परमेश्वर देता है।
उसको चाहिये की वह हर समय परमेश्वर से प्रार्थना करता रहा।

11 "मैं तुमको परमेश्वर की शक्ति सिखाऊँगा।
मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर की योजनायें नहीं छिपाऊँगा।
12 स्वयं तूने निज आँखों से परमेश्वर की शक्ति देखी है,
सो क्यों तू व्यर्थ बातें बनाता है

13 "दुष्ट लोगों के लिये परमेश्वर ने ऐसी योजना बनाई है,
दुष्ट लोगों को सर्वशक्तिशाली परमेश्वर से ऐसा ही मिलेगा।
14 दुष्ट की चाहे कितनी ही संताने हों, किन्तु उसकी संताने युद्ध में मारी जायेंगी।
दुष्ट की संताने कभी भरपेट खाना नहीं पायेंगी।
15 और यदि दुष्ट की संताने उसकी मृत्यु के बाद भी जीवित रहें तो महामारी उनको मार डालेंगी!
उनके पुत्रों की विधवायें उनके लिये दु:खी नहीं होंगी।
16 दुष्ट जन चाहे चाँदी के ढेर इकट्ठा करे,

इतने विशाल ढेर जितनी धूल होती है, मिट्टी के ढेरों जैसे वस्त्र हो उसके पास
17 जिन वस्त्रों को दुष्ट जन जुटाता रहा उन वस्त्रों को सज्जन पहनेगा,
दुष्ट की चाँदी निर्दोषों में बँटेगी।
18 दुष्ट का बनाया हुआ घर अधिक दिनों नहीं टिकता है,
वह मकड़ी के जाले सा अथवा किसी चौकीदार के छप्पर जैसा अस्थिर होता है।
19 दुष्ट जन अपनी निज दौलत के साथ अपने बिस्तर पर सोने जाता है,
किन्तु एक ऐसा दिन आयेगा जब वह फिर बिस्तर में वैसे ही नहीं जा पायेगा।
जब वह आँख खोलेगा तो उसकी सम्पत्ति जा चुकेगी।
20 दु:ख अचानक आई हुई बाढ़ सा उसको झपट लेंगे,
उसको रातों रात तूफान उड़ा ले जायेगा।
21 पुरवाई पवन उसको दूर उड़ा देगी,
तूफान उसको बुहार कर उसके घर के बाहर करेगा।
22 दुष्ट जन तूफान की शक्ति से बाहर निकलने का जतन करेगा
किन्तु तूफान उस पर बिना दया किये हुए चपेट मारेगा।
23 जब दुष्ट जन भागेगा, लोग उस पर तालियाँ बजायेंगे, दुष्ट जन जब निकल भागेगा।
अपने घर से तो लोग उस पर सीटियाँ बजायेंगे।

28

1 "वहाँ चाँदी की खान है जहाँ लोग चाँदी पाते है,
वहाँ ऐसे स्थान है जहाँ लोग सोना पिघला करके उसे शुद्ध करते हैं।
2 लोग धरती से खोद कर लोहा निकालते है,
और चट्टानों से पिघला कर ताँबा निकालते हैं।

3 लोग गुफाओं में प्रकाश को लाते हैं वे गुफाओं की गहराई में खोजा करते हैं,
गहरे अन्धेरे में वे खनिज की चट्टानें खोजते हैं।
4 जहाँ लोग रहते है उससे बहुत दूर लोग गहरे गढ़े खोदा करते हैं
कभी किसी और ने इन गढ़ों को नहीं छुआ।
जब व्यक्ति गहन गर्तो में रस्से से लटकता है, तो वह दूसरों से बहुत दूर होता है।
5 भोजन धरती की सतह से मिला करता है,
किन्तु धरती के भीतर वह बढ़त जाया करता है
जैसे आग वस्तुओं को बदल देती है।
6 धरती के भीतर चट्टानों के नीचे नीलम मिल जाते हैं,
और धरती के नीचे मिट्टी अपने आप में सोना रखती है।
7 जंगल के पक्षी धरती के नीचे की राहें नहीं जानते हैं
न ही कोई बाज यह मार्ग देखता है।
8 इस राह पर हिंसक पशु नहीं चले,
कभी सिंह इस राह पर नहीं विचरे।
9 मजदूर कठिन चट्टानों को खोदते हैं
और पहाड़ों को वे खोद कर जड़ से साफ कर देते हैं।
10 काम करने वाले सुरंगे काटते हैं,
वे चट्टान के खजाने को चट्टानों के भीतर देख लिया करते हैं।
11 काम करने वाले बाँध बाँधा करते हैं कि पानी कहीं ऊपर से होकर न वह जाये।
वे छुपी हुई वस्तुओं को ऊपर प्रकाश में लाते हैं।

12 "किन्तु कोई व्यक्ति विवेक कहाँ पा सकता है
और हम कहाँ जा सकते हैं समझ पाने को
13 ज्ञान कहाँ रहता है लोग नहीं जानते हैं,
लोग जो धरती पर रहते हैं, उनमें विवेक नहीं रहता है।
14 सागर की गहराई कहती है, 'मुझ में विवेक नहीं।'

और समुद्र कहता है, 'यहाँ मुझ में ज्ञान नहीं है।'
15 विवेक को अति मूल्यवान सोना भी मोल नहीं ले सकता है,
विवेक का मूल्य चाँदी से नहीं गिना जा सकता है।
16 विवेक ओपीर देश के सोने से
अथवा मूल्यवान स्फटिक से अथवा नीलमणियों से नहीं खरीदा जा सकता है।
17 विवेक सोने और स्फटिक से अधिक मूल्यवान है,
कोई व्यक्ति अति मूल्यवान सुवर्ण जड़ित रत्नों से विवेक नहीं खरीद सकता है।
18 विवेक मूंगे और सूर्यकांत मणि से अति मूल्यवान है।
विवेक मानक मणियों से अधिक महंगा है।
19 जितना उत्तम विवेक है कूश देश का पदमराग भी उतना उत्तम नहीं है।
विवेक को तुम कुन्दन से मोल नहीं ले सकते हो।

20 "तो फिर हम कहाँ विवेक को पाने जायें
हम कहाँ समझ सीखने जायें
21 विवेक धरती के हर व्यक्ति से छुपा हुआ है।
यहाँ तक की ऊँचे आकाश के पक्षी भी विवेक को नहीं देख पाते हैं।
22 मृत्यु और विनाश कहा करते है कि
हमने तो बस विवेक की बाते सुनी हैं।

23 "किन्तु बस परमेश्वर विवेक तक पहुँचने की राह को जानता है।
परमेश्वर जानता है विवेक कहाँ रहता है।
24 परमेश्वर विवेक को जानता है क्योंकि वह धरती के आखिरी छोर तक देखा करता है।
परमेश्वर हर उस वस्तु को जो आकाश के नीचे है देखा करता है।
25 जब परमेश्वर ने पवन को उसकी शक्ति प्रदान की

और यह निश्चित किया कि समुद्रों को कितना बड़ा बनाना है।
26 और जब परमेश्वर ने निश्चय किया कि उसे कहाँ वर्षा को भेजना है,
और बवण्डरों को कहाँ की यात्रा करनी है।
27 तब परमेश्वर ने विवेक को देखा था,
और उसको यह देखने के लिये परखा था कि विवेक का कितना मूल्य है, तब परमेश्वर ने विवेक का समर्थन किया था।
28 और लोगों से परमेश्वर ने कहा था कि
'यहोवा का भय मानो और उसको आदर दो।
बुराईयों से मुख मोड़ना ही विवेक है, यही समझदारी है।' "

29

अय्यूब अपनी बात जारी रखता है

1 अपनी बात को जारी रखते हुये अय्यूब ने कहा:

2 "काश! मेरा जीवन वैसा ही होता जैसा गुजरे महीनों में था।
जब परमेश्वर मेरी रखवाली करता था, और मेरा ध्यान रखता था।
3 मैं ऐसे उस समय की इच्छा करता हूँ जब परमेश्वर का प्रकाश मेरे शीश पर चमक रहा था।
मुझको प्रकाश दिखाने को उस समय जब मैं अन्धेरे से हो कर चला करता था।
4 ऐसे उन दिनों की मैं इच्छा करता हूँ, जब मेरा जीवन सफल था
और परमेश्वर मेरा निकट मित्र था।
वे ऐसे दिन थे जब परमेश्वर ने मेरे घर को आशीष दी थी।
5 ऐसे समय की मैं इच्छा करता हूँ, जब सर्वशक्तिशाली परमेश्वर अभी तक मेरे साथ में था
और मेरे पास मेरे बच्चे थे।

6 ऐसा तब था जब मेरा जीवन बहुत अच्छा था, ऐसा लगा करता था कि दूध—दही की नदियाँ बहा करती थी,
और मेरे हेतू चट्टाने जैतून के तेल की नदियाँ उँडेल रही हैं।

7 "ये वे दिन थे जब मैं नगर—द्वार और खुले स्थानों में जाता था,
और नगर नेताओं के साथ बैठता था।
8 वहाँ सभी लोग मेरा मान किया करते थे।
युवा पुरुष जब मुझे देखते थे तो मेरी राह से हट जाया करते थे।
और वृद्ध पुरुष मेरे प्रति सम्मान दर्शाने के लिये उठ खड़े होते थे।
9 जब लोगों के मुखिया मुझे देख लेते थे,
तो बोलना बन्द किया करते थे।
10 यहाँ तक की अत्यन्त महत्वपूर्ण नेता भी अपना स्वर नीचा कर लेते थे,
जब मैं उनके निकट जाया करता था।
हाँ! ऐसा लगा करता था कि
उनकी जिहवायें उनके तालू से चिपकी हों।
11 जिस किसी ने भी मुझको बोलते सुना, मेरे विषय में अच्छी बात कही,
जिस किसी ने भी मुझको देखा था, मेरी प्रशंसा की थी।
12 क्यों क्योंकि जब किसी दीन ने सहायता के लिये पुकारा, मैंने सहायता की।
उस बच्चे को मैंने सहारा दिया जिसके माँ बाप नहीं और जिसका कोई भी नहीं ध्यान रखने को।
13 मुझको मरते हुये व्यक्ति की आशीष मिली,
मैंने उन विधवाओं को जो जरुरत में थी,
मैंने सहारा दिया और उनको खुश किया।
14 मेरा वस्त्र खरा जीवन था,
निष्पक्षता मेरे चोगे और मेरी पगड़ी सी थी।

15 मैं अंधो के लिये आँखे बन गया
और मैं उनके पैर बना जिनके पैर नहीं थे।
16 दीन लोगों के लिये मैं पिता के तुल्य था,
मैं पक्ष लिया करता था ऐसे अनजानों का जो विपत्ति में पड़े थे।
17 मैं दुष्ट लोगों की शक्ति नष्ट करता था।
निर्दोष लोगों को मैं दुष्टों से छुड़ाता था।

18 "मैं सोचा करता था कि सदा जीऊँगा
ओर बहुत दिनों बाद फिर अपने ही घर में प्राण त्यागूँगा।
19 मैं एक ऐसा स्वस्थ वृक्ष बनूँगा जिसकी जड़े सदा जल में रहती हों
और जिसकी शाखायें सदा ओस से भीगी रहती हों।
20 मेरी शान सदा ही नई बनी रहेगी,
मैं सदा वैसा ही बलवान रहूँगा जैसे,
मेरे हाथ में एक नया धनुष।

21 "पहले, लोग मेरी बात सुना करते थे,
और वे जब मेरी सम्मत्ति की प्रतीक्षा किया करते थे,
तो चुप रहा करते थे।
22 मेरे बोल चुकने के बाद, उन लोगों के पास जो मेरी बात सुनते थे, कुछ भी बोलने को नहीं होता था।
मेरे शब्द धीरे—धीरे उनके कानों में वर्षा की तरह पड़ा करते थे।
23 लोग जैसे वर्षा की बाट जोहते हैं वैसे ही वे मेरे बोलने की बाट जोहा करते थे।
मेरे शब्दों को वे पी जाया करते थे, जैसे मेरे शब्द बसन्त में वर्षा हों।
24 जब मैं दया करने को उन पर मुस्कराता था, तो उन्हें इसका यकीन नहीं होता था।

फिर मेरा प्रसन्न मुख दु:खी जन को सुख देता था।
25 मैंने उत्तरदायित्व लिया और लोगों के लिये निर्णय किये, मैं नेता बन गया।
मैंने उनकी सेना के दलों के बीच राजा जैसा जीवन जिया।
check मैं ऐसा व्यक्ति था जो उन लोगों को चैन देता था जो बहुत ही दु:खी है।

30

1 “अब, आयु में छोटे लोग मेरा माजक बनाते हैं।
उन युवा पुरुषों के पित बिलकुल ही निकम्मे थे।
जिनको मैं उन कुत्तों तक की सहायता नहीं करने देता था जो भेंड़ों के रखवाले हैं।
2 उन युवा पुरुषों के पिता मुझे सहारा देने की कोई शक्ति नहीं रखते हैं,
वे बूढे हो चुके हैं और थके हुये हैं।
3 वे व्यक्ति मुर्दे जैसे हैं क्योंकि खाने को उनके पास कुछ नहीं है
और वे भूखे हैं, सो वे मरुभूमि के सूखे कन्द खाना चाहते हैं।
4 वे लोग मरुभूमि में खारे पौधों को उखाड़ते हैं
और वे पीले फूल वाले पीलू के पेड़ों की जड़ों को खाते हैं।
5 वे लोग, दूसरे लोगों से भगाये गये हैं
लोग जैसे चोर पर पुकारते हैं उन पर पुकारते हैं।
6 ऐसे वे बूढ़े लोग सूखी हुई नदी के तलों में
चट्टानों के सहारे और धरती के बिलों में रहने को विवश हैं।
7 वे झाड़ियों के भीतर रेंकते हैं।
कंटीली झाड़ियों के नीचे वे आपस में एकत्र होते हैं।
8 वे बेकार के लोगों का दल है, जिनके नाम तक नहीं हैं।
उनको अपना गाँव छोड़ने को मजबूर किया गया है।

9 “अब ऐसे उन लोगों के पुत्र मेरी हँसी उड़ाने को मेरे विषय में गीत गाते हैं।
मेरा नाम उनके लिये अपशब्द सा बन गया है।
10 वे युवक मुझसे घृणा करते हैं।
वे मुझसे दूर खड़े रहते हैं और सोचते हैं कि वे मुझसे उत्तम हैं।
यहाँ तक कि वे मेरे मुँह पर थूकते हैं।
11 परमेश्वर ने मेरे धनुष से उसकी डोर छीन ली है और मुझे दुर्बल किया है।
वे युवक अपने आप नहीं रुकते हैं बल्कि क्रोधित होते हुये मुझ पर मेरे विरोध में हो जाते हैं।
12 वे युवक मेरी दाहिनी ओर मुझ पर प्रहार करते हैं।
वे मुझे मिट्टी में गिराते हैं वे ढलुआ चबूतरे बनाते हैं,
मेरे विरोध में मुझ पर प्रहार करके मुझे नष्ट करने को।
13 वे युवक मेरी राह पर निगरानी रखते हैं कि मैं बच निकल कर भागने न पाऊँ।
वे मुझे नष्ट करने में सफल हो जाते हैं।
उनके विरोध में मेरी सहायता करने को मेरे साथ कोई नहीं है।
14 वे मुझ पर ऐसे वार करते हैं, जैसे वे दिवार में सूराख निकाल रहें हो।
एक के बाद एक आती लहर के समान वे मुझ पर झपट कर धावा करते हैं।
15 मुझको भय जकड़ लेता है।
जैसे हवा वस्तुओं को उड़ा ले जाती है, वैसी ही वे युवक मेरा आदर उड़ा देते हैं।
जैसे मेघ अदृश्य हो जाता है, वैसे ही मेरी सुरक्षा अदृश्य हो जाती है।

16 “अब मेरा जीवन बीतने को है और मैं शीघ्र ही मर जाऊँगा।
मुझको संकट के दिनों ने दबोच लिया है।
17 मेरी सब हड्डियाँ रात को दुखती हैं,
पीड़ा मुझको चबाना नहीं छोड़ती है।
18 मेरे गिरेबान को परमेश्वर बड़े बल से पकड़ता है,
वह मेरे कपड़ों का रूप बिगाड़ देता है।
19 परमेश्वर मुझे कीच में धकेलता है
और मैं मिट्टी व राख सा बनता हूँ।

20 “हे परमेश्वर, मैं सहारा पाने को तुझको पुकारता हूँ,
किन्तु तू उत्तर नहीं देता है।
मैं खड़ा होता हूँ और प्रार्थना करता हूँ,
किन्तु तू मुझ पर ध्यान नहीं देता।
21 हे परमेश्वर, तू मेरे लिये निर्दयी हो गया है,
तू मुझे हानि पहुँचाने को अपनी शक्ति का प्रयोग करता है।
22 हे परमेश्वर, तू मुझे तीव्र आँधी द्वारा उड़ा देता है।
तूफान के बीच में तू मुझको थपेड़े खिलाता है।
23 मैं जानता हूँ तू मुझे मेरी मृत्यु की ओर ले जा रहा है
जहाँ अन्त में हर किसी को जाना है।

24 “किन्तु निश्चय ही कोई मरे हुये को,
और उसे जो सहायता के लिये पुकारता है, उसको नहीं मारता।
25 हे परमेश्वर, तू तो यह जानता है कि मैं उनके लिये रोया जो संकट में पड़े हैं।
तू तो यह जानता है कि मेरा मन गरीब लोगों के लिये बहुत दु:खी रहता था।
26 किन्तु जब मैं भला चाहता था, तो बुरा हो जाता था।
मैं प्रकाश ढूँढता था और अंधेरा छा जाता था।

27 मैं भीतर से फट गया हूँ और यह ऐसा है कि
कभी नहीं रुकता मेरे आगे संकट का समय है।
28 मैं सदा ही व्याकुल रहता हूँ। मुझको चैन नहीं मिल पाता है।
मैं सभा के बीच में खड़ा होता हूँ, और सहारे को गुहारता हूँ।
29 मैं जंगली कुत्तों के जैसा बन गया हूँ,
मेरे मित्र बस केवल शतुर्मुर्ग ही है।
30 मेरी त्वचा काली पड़ गई है।
मेरा तन बुखार से तप रहा है।
31 मेरी वीणा करुण गीत गाने की सधी है
और मेरी बांसुरी से दुःख के रोने जैसे स्वर निकलते हैं।

31

1 "मैंने अपनी आँखो के साथ एक सन्धि की है कि
वे किसी लड़की पर वासनापूर्ण दृष्टि न डालें।
2 सर्वशक्तिमान परमेश्वर लोगों के साथ कैसा करता है
वह कैसे अपने ऊँचे स्वर्ग के घर से उनके कर्मो का प्रतिफल देता है
3 दुष्ट लोगों के लिये परमेश्वर संकट और विनाश भेजता है,
और जो बुरा करते हैं, उनके लिये विध्वंस भेजता है।
4 मैं जो कुछ भी करता हूँ परमेश्वर जानता है
और मेरे हर कदम को वह देखता है।

5 "यदि मैंने झूठा जीवन जिया हो
या झूठ बोल कर लोगों को मूर्ख बनाया हो,
6 तो वह मुझको खरी तराजू से तौले,
तब परमेश्वर जान लेगा कि मैं निरपराध हूँ।
7 यदि मैं खरे मार्ग से हटा होहूँ
यदि मेरी आँखे मेरे मन को बुरे की

ओर ले गई अथवा मेरे हाथ पाप से गंदे हैं।
8 तो मेरी उपजाई फसल अन्य लोग खा जाये
और वे मेरी फसलों को उखाड़ कर ले जायें।

9 "यदि मैं स्त्रियों के लिये कामुक रहा होहूँ,
अथवा यदि मैं अपने पड़ोसी के द्वार को उसकी पत्नी के साथ व्यभिचार करने के लिये ताकता रहा होहूँ,
10 तो मेरी पत्नी दूसरों का भोजन तैयार करे
और उसके साथ पराये लोग सोंये।
11 क्यों क्योंकि यौन पाप लज्जापूर्ण होता है
यह ऐसा पाप है जो निश्चय ही दण्डित होना चाहिये।
12 व्यभिचार उस पाप के समान है, जो जलाती और नष्ट कर डालती है।
मेरे पास जो कुछ भी है व्यभिचार का पाप उसको जला डालेगा।

13 "यदि मैं अपने दास—दासियों के सामने उस समय निष्पक्ष नहीं रहा,
जब उनको मुझसे कोई शिकायत रहीं।
14 तो जब मुझे परमेश्वर के सामने जाना होगा,
तो मैं क्या करूँगा जब वह मुझ को मेरे कर्मो की सफाई माँगने बुलायेगा तो मैं परमेश्वर को क्या उत्तर दूँगा
15 परमेश्वर ने मुझको मेरी माता के गर्भ में बनाया, और मेरे दासों को भी उसने माता के गर्भ में हीं बनाया,
उसने हम दोनों ही को अपनी—अपनी माता के भीतर ही रूप दिया है।

16 "मैंने कभी भी दीन जन की सहायता को मना नहीं किया।
मैंने विधवाओं को सहारे बिना नहीं रहने दिया।
17 मैं स्वार्थी नहीं रहा।

मैंने अपने भोजन के साथ अनाथ बच्चों को भूखा नहीं रहने दिया।
18 ऐसे बच्चों के लिये जिनके पिता नहीं है, मैं पिता के जैसा रहा हूँ।
मैंने जीवन भर विधवाओं का ध्यान रखा है।
19 जब मैंने किसी को इसलिये कष्ट भोगते पाया कि उसके पास वस्त्र नहीं हैं,
अथवा मैंने किसी दीन को बिना कोट के पाया।
20 तो मैं सदा उन लोगों को वस्त्र देता रहा,
मैंने उन्हें गर्म रखने को मैंने स्वयं अपनी भेड़ों के ऊन का उपयोग किया,
तो वे मुझे अपने समूचे मन से आशीष दिया करते थे।
21 यदि कोई मैंने अनाथ को छलने का जतन अदालत में किया हो
check यह जानकर की मैं जीतूँ,
22 तो मेरा हाथ मेरे कंधे के जोड़ से ऊतर जाये
और मेरा हाथ कंधे पर से गिर जाये।
23 किन्तु मैंने तो कोई वैसा बुरा काम नहीं किया।
क्यों क्योंकि मैं परमेश्वर के दण्ड से डरता रहा था।

24 “मैंने कभी अपने धन का भरोसा न किया,
और मैंने कभी नहीं शुद्ध सोने से कहा कि “तू मेरी आशा है!”
25 मैंने कभी अपनी धनिकता का गर्व नहीं किया
अथवा जो मैंने सम्पत्ति कमाई थी, उसके प्रति मैं आनन्दित हुआ।
26 मैंने कभी चमकते सूरज की पूजा नहीं की
अथवा मैंने सुन्दर चाँद की पूजा नहीं की।
27 मैंने कभी इतनी मूर्खता नहीं की
कि सूरज और चाँद को पूजूँ।
28 यदि मैंने इनमें से कुछ किया तो वो मेरा पाप हो और मुझे उसका दण्ड मिले।

क्योंकि मैं उन बातों को करते हुये सर्वशक्तिशाली परमेश्वर का
अविश्वासी हो जाता।

29 “जब मेरे शत्रु नष्ट हुए तो
मैं प्रसन्न नहीं हुआ,
जब मेरे शत्रुओं पर विपत्ति पड़ी तो,
मैं उन पर नहीं हँसा।
30 मैंने अपने मुख को अपने शत्रु से बुरे शब्द बोल कर पाप नहीं
करने दिया
और नहीं चाहा कि उन्हें मृत्यु आ जाये।
31 मेरे घर के सभी लोग जानते हैं कि
मैंने सदा अनजानों को खाना दिया।
32 मैंने सदा अनजानों को अपने घर में बुलाया,
ताकि उनको रात में गलियों में सोना न पड़े।
33 दूसरे लोग अपने पाप को छुपाने का जतन करते हैं,
किन्तु मैंने अपना दोष कभी नहीं छुपाया।
34 क्यों क्योंकि लोग कहा करते हैं कि मैं उससे कभी नहीं डरा।
मैं कभी चुप न रहा और मैंने कभी बाहर जाने से मना नहीं
किया
क्योंकि उन लोगों से जो मेरे प्रति बैर रखते हैं कभी नहीं डरा।

35 “ओह! काश कोई होता जो मेरी सुनता!
मुझे अपनी बात समझाने दो।
काश! शक्तिशाली परमेश्वर मुझे उत्तर देता।
काश! वह उन बातों को लिखता जो मैंने गलत किया था
उसकी दृष्टि में।
36 क्योंकि निश्चय ही मैं वह लिखावट अपने निज कन्धों पर रख
लूँगा
और मैं उसे मुकुट की तरह सिर पर रख लूँगा।

37 मैंने जो कुछ भी किया है, मैं उसे परमेश्वर को समझाऊँगा।
मैं परमेश्वर के पास अपना सिर ऊँचा उठाये हुये जाऊँगा, जैसे
मैं कोई मुखिया होऊँ।

38 "यदि जिस खेत पर मैं खेती करता हूँ उसको मैंने चुराया हो
और उसको उसके स्वामी से लिया हो जिससे वह धरती अपने
ही आँसुओं से गीली हो।
39 और यदि मैंने कभी बिना मजदूरों को मजदूरी दिये हुये,
खेत की उपज को खाया हो और मजदूरों को हताश किया हो,
40 हाँ! यदि इनमें से कोई भी बुरा काम मैंने किया हो,
तो गेहूँ के स्थान पर काँटे और जौ के बजाये खर—पतवार
खेतों में उग आयें।"

अय्यूब के शब्द समाप्त हुये!

32

एलीहू का कथन

1 फिर अय्यूब के तीनों मित्रों ने अय्यूब को उत्तर देने का प्रयत्न
करना छोड़ दिया। क्योंकि अय्यूब निश्चय के साथ यह मानता था
कि वह स्वयं सचमुच दोष रहित हैं। 2 वहाँ एलीहू नाम का एक
व्यक्ति भी था। एलीहू बारकेल का पुत्र था। बारकेल बुज़ नाम के
एक व्यक्ति के वंशज था। एलीहू राम के परिवार से था। एलीहू
को अय्यूब पर बहुत क्रोध आया क्योंकि अय्यूब कह रहा था कि
वह स्वयं नेक है और वह परमेश्वर पर दोष लगा रहा था। 3 एलीहू
अय्यूब के तीनों मित्रों से भी नाराज़ था क्योंकि वे तीनों ही अय्यूब
के प्रश्नों का युक्ति संगत उत्तर नहीं दे पाये थे और अय्यूब को ही
दोषी बता रहे थे। इससे तो फिर ऐसा लगा कि जैसे परमेश्वर ही

दोषी था। 4 वहाँ जो लोग थे उनमें एलीहू सबसे छोटा था इसलिए
वह तब तक बाट जोहता रहा जब तक हर कोई अपनी अपनी बात
पूरी नहीं कर चुका। तब उसने सोचा कि अब वह बोलना शुरु कर
सकता हैं। 5 एलीहू ने जब यह देखा कि अय्यूब के तीनों मित्रों के
पास कहने को और कुछ नहीं है तो उसे बहुत क्रोध आया। 6 सो
एलीहू ने अपनी बात कहना शुरु किया। वह बोला:

"मैं छोटा हूँ और तुम लोग मुझसे बड़े हो,
मैं इसलिये तुमको वह बताने में डरता था जो मैं सोचता हूँ।
7 मैंने मन में सोचा कि बड़े को पहले बोलना चाहिये,
और जो आयु में बड़े है उनको अपने ज्ञान को बाँटना चाहिये।
8 किन्तु व्यक्ति में परमेश्वर की आत्मा बुद्धि देती है
और सर्वशक्तिशाली परमेश्वर का प्राण व्यक्ति को ज्ञान देता है।
9 आयु में बड़े व्यक्ति ही नहीं ज्ञानी होते है।
क्या बस बड़ी उम्र के लोग ही यह जानते हैं कि उचित क्या है

10 "सो इसलिये मैं एलीहू जो कुछ मैं जानता हूँ।
तुम मेरी बात सुनों मैं तुम को बताता हूँ कि मैं क्या सोचता हूँ।
11 जब तक तुम लोग बोलते रहोगे, मैंने धैर्य सेप्रतिक्षा की,
मैंने तुम्हारे तर्क सुने जिनको तुमने व्यक्त किया था, जो तुमने चुन चुन कर अय्यूब से कहे।
12 जब तुम मार्मिक शब्दों से जतन कर रहे थे, अय्यूब को उत्तर देने का तो मैं ध्यान से सुनता रहा।
किन्तु तुम तीनों ही यह प्रमाणित नहीं कर पाये कि अय्यूब बुरा है।
तुममें से किसी ने भी अय्यूब के तर्कों का उत्तर नहीं दिया।

13 तुम तीनों ही लोगों को यही नहीं कहना चाहिये था कि तुमने ज्ञान
को प्राप्त कर लिया है।
लोग नहीं, परमेश्वर निश्चय ही अय्यूब के तर्को का उत्तर देगा।
14 किन्तु अय्यूब मेरे विरोध में नहीं बोल रहा था,
इसलिये मैं उन तर्को का प्रयोग नहीं करुँगा जिसका प्रयोग
तुम तीनों ने किया था।

15 "अय्यूब, तेरे तीनो ही मित्र असमंजस में पड़ें हैं,
उनके पास कुछ भी और कहने को नहीं हैं,
उनके पास और अधिक उत्तर नहीं हैं।
16 ये तीनों लोग यहाँ चुप खड़े हैं
और उनके पास उत्तर नहीं है।
सो क्या अभी भी मुझको प्रतिक्षा करनी होगी
17 नहीं! मैं भी निज उत्तर दूँगा।
मैं भी बताऊँगा तुम को कि मैं क्या सोचता हूँ।
18 क्योंकि मेरे पास सहने को बहुत है मेरे भीतर जो आत्मा है,
वह मुझको बोलने को विवश करती है।
19 मैं अपने भीतर ऐसी दाखमधु सा हूँ, जो शीघ्र ही बाहर उफन जाने
को है।
मैं उस नयी दाखमधु मशक जैसा हूँ जो शीघ्र ही फटने को है।
20 सो निश्चय ही मुझे बोलना चाहिये, तभी मुझे अच्छा लगेगा।
अपना मुख मुझे खोलना चाहिये और मुझे अय्यूब की
शिकायतों का उत्तर देना चाहिये।
21 इस बहस में मैं किसी भी व्यक्ति का पक्ष नहीं लूँगा
और मैं किसी का खुशामद नहीं करुँगा।
22 मैं नहीं जानता हूँ कि कैसे किसी व्यक्ति की खुशामद की जाती
है।

यदि मैं किसी व्यक्ति की खुशामद करना जानता तो शीघ्र ही
परमेश्वर मुझको दण्ड देता।

33

1 “किन्तु अय्यूब अब, मेरा सन्देश सुन।
उन बातों पर ध्यान दे जिनको मैं कहता हूँ।
2 मैं अपनी बात शीघ्र ही कहनेवाला हूँ, मैं अपनी बात कहने को
लगभग तैयार हूँ।
3 मन मेरा सच्चा है सो मैं सच्चा शब्द बोलूँगा।
उन बातों के बारे में जिनको मैं जानता हूँ मैं सत्य कहूँगा।
4 परमेश्वर की आत्मा ने मुझको बनाया है,
मुझे सर्वशक्तिशाली परमेश्वर से जीवन मिलता है।
5 अय्यूब, सुन और मुझे उत्तर दे यदि तू सोचता है कि तू दे सकता
है।
अपने उत्तरों को तैयार रख ताकि तू मुझसे तर्क कर सके।
6 परमेश्वर के सम्मुख हम दोनों एक जैसे हैं,
और हम दोनों को ही उसने मिट्टी से बनाया है।
7 अय्यूब, तू मुझ से मत डर।
मैं तेरे साथ कठोर नहीं होऊँगा।

8 “किन्तु अय्यूब, मैंने सुना है कि
तू यह कहा करता हैं,
9 तूने कहा था, कि मैं अय्यूब, दोषी नहीं हूँ, मैंने पाप नहीं किया,
अथवा मैं कुछ भी अनुचित नहीं करता हूँ, मैं अपराधी नहीं
हूँ।
10 यद्यपि मैंने कुछ भी अनुचित नहीं किया, तो भी परमेश्वर ने कुछ
खोट मुझमें पाया है।

परमेश्वर सोचता है कि मैं अय्यूब, उसका शत्रु हूँ।
11 इसलिए परमेश्वर मेरे पैरों में काठ डालता है,
मैं जो कुछ भी करता हूँ वह देखता रहता है।

12 "किन्तु अय्यूब, मैं तुझको निश्चय के साथ बताता हूँ कि तू इस विषय में अनुचित है।
क्यों क्योंकि परमेश्वर किसी भी व्यक्ति से अधिक जानता है।
13 अय्यूब, तू क्यों शिकायत करता है और क्यों परमेश्वर से बहस करता है तू क्यों शिकायत करता है कि
परमेश्वर तुझे हर उस बात के विषय में जो वह करता है स्पष्ट क्यों नहीं बताता है
14 किन्तु परमेश्वर निश्चय ही हर उस बात को जिसको वह करता है स्पष्ट कर देता है।
परमेश्वर अलग अलग रीति से बोलता है किन्तु लोग उसको समझ नहीं पाते हैं।
15 सम्भव है कि परमेश्वर स्वप्न में लोगों के कान में बोलता हो,
अथवा किसी दिव्यदर्शन में रात को जब वे गहरी नींद में हों।
16 जब परमेश्वर की चेतावनियाँ सुनते है
तो बहुत डर जाते हैं।
17 परमेश्वर लोगों को बुरी बातों को करने से रोकने को सावधान करता है,
और उन्हें अहंकारी बनने से रोकने को।
18 परमेश्वर लोगों को मृत्यु के देश में जाने से बचाने के लिये सावधान करता है।
परमेश्वर मनुष्य को नाश से बचाने के लिये ऐसा करता है।

19 "अथवा कोई व्यक्ति परमेश्वर की वाणी तब सुन सकता है जब वह बिस्तर में पड़ा हों और परमेश्वर के दण्ड से दु:ख भोगता हो।

परमेश्वर पीड़ा से उस व्यक्ति को सावधान करता है।
check वह व्यक्ति इतनी गहन पीड़ा में होता है, कि उसकी हड्डियाँ दु:खती है।
20 फिर ऐसा व्यक्ति कुछ खा नहीं पाता, उस व्यक्ति को पीड़ा होती है
इतनी अधिक की उसको सर्वोत्तम भोजन भी नहीं भाता।
21 उसके शरीर का क्षय तब तक होता जाता है जब तक वह कंकाल मात्र नहीं हो जाता,
और उसकी सब हड्डियाँ दिखने नहीं लग जातीं!
22 ऐसा व्यक्ति मृत्यु के देश के निकट होता है, और उसका जीवन मृत्यु के निकट होता है।
किन्तु हो सकता है कि कोई स्वर्गदूत हो जो उसके उत्तम चरित्र की साक्षी दे।
23 परमेश्वर के पास हजारों ही स्वर्गदूत हैं।
फिर वह स्वर्गदूत उस व्यक्ति के अच्छे काम बतायेगा।
24 वह स्वर्गदूत उस व्यक्ति पर दयालु होगा, वह दूत परमेश्वर से कहेगा:
'इस व्यक्ति की मृत्यु के देश से रक्षा हो!
इसका मूल्य चुकाने को एक राह मुझ को मिल गयी है।'
25 फिर व्यक्ति की देह जवान और सुदृढ़ हो जायेगी।
वह व्यक्ति वैसा ही हो जायेगा जैसा वह तब था, जब वह जवान था।
26 वह व्यक्ति परमेश्वर की स्तुति करेगा और परमेश्वर उसकी स्तुति का उत्तर देगा।
वह फिर परमेश्वर को वैसा ही पायेगा जैसे वह उसकी उपासना करता है, और वह अति प्रसन्न होगा।
क्योंकि परमेश्वर उसे निरपराध घोषित कर के पहले जैसा जीवन कर देगा।
27 फिर वह व्यक्ति लोगों के सामने स्वीकार करेगा। वह कहेगा:
'मैंने पाप किये थे,

भले को बुरा मैंने किया था,
किन्तु मुझे इससे क्या मिला!
28 परमेश्वर ने मृत्यु के देश में गिरने से मेरी आत्मा को बचाया।
मैं और अधिक जीऊँगा और फिर से जीवन का रस लूँगा।'

29 "परमेश्वर व्यक्ति के साथ ऐसा बार—बार करता है,
30 उसको सावधान करने को और उसकी आत्मा को मृत्यु के देश से बचाने को।
ऐसा व्यक्ति फिर जीवन का रस लेता है।

31 "अय्यूब, ध्यान दे मुझ पर, तू बात मेरी सुन,
तू चुप रह और मुझे कहने दे।
32 अय्यूब, यदि तेरे पास कुछ कहने को है तो मुझको उसको सुनने दे।
आगे बढ़ और बता,
क्योंकि मैं तुझे निर्दोष देखना चाहता हूँ।
33 अय्यूब, यदि तूझे कुछ नहीं कहना है तो तू मेरी बात सुन।
चुप रह, मैं तुझको बुद्धिमान बनना सिखाऊँगा।"

34

1 फिर एलीहू ने बात को जारी रखते हुये कहा:

2 "अरे ओ विवेकी पुरुषों तुम ध्यान से सुनो जो बातें मैं कहता हूँ।
अरे ओ चतुर लोगों, मुझ पर ध्यान दो।
3 कान उन सब को परखता है जिनको वह सुनता है,
ऐसे ही जीभ जिस खाने को छूती है, उसका स्वाद पता करती है।
4 सो आओ इस परिस्थिति को परखें और स्वयं निर्णय करें की उचित क्या है।

हम साथ साथ सीखेंगे की क्या खरा है।
5 अय्यूब ने कहा: 'मैं निर्दोष हूँ,
किन्तु परमेश्वर मेरे लिये निष्पक्ष नहीं है।
6 मैं अच्छा हूँ लेकिन लोग सोचते हैं कि मैं बुरा हूँ।
वे सोचते हैं कि मैं एक झूठा हूँ और चाहे मैं निर्दोष भी होऊँ
फिर भी मेरा घाव नहीं भर सकता।'

7 "अय्यूब के जैसा कोई भी व्यक्ति नहीं है
जिसका मुख परमेश्वर की निन्दा से भरा रहता है।
8 अय्यूब बुरे लोगों का साथी है
और अय्यूब को बुरे लोगों की संगत भाती है।
9 क्योंकि अय्यूब कहता है
'यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर की आज्ञा मानने का जतन करता है तो इससे उस व्यक्ति का कुछ भी भला न होगा।'

10 "अरे ओं लोगों जो समझ सकते हो, तो मेरी बात सुनो,
परमेश्वर कभी भी बुरा नहीं करता है।
सर्वशक्तिशाली परमेश्वर कभी भी बुरा नहीं करेगा।
11 परमेश्वर व्यक्ति को उसके किये कर्मो का फल देगा।
वह लोगों को जो मिलना चाहिये देगा।
12 यह सत्य है परमेश्वर कभी बुरा नहीं करता है।
सर्वशक्तिशाली परमेश्वर सदा निष्पक्ष रहेगा।
13 परमेश्वर सर्वशक्तिशाली है, धरती का अधिकारी, उसे किसी व्यक्ति ने नहीं बनाया।
किसी भी व्यक्ति ने उसे इस समूचे जगत का उत्तरदायित्व नहीं दिया।
14 यदि परमेश्वर निश्चय कर लेता कि
लोगों से आत्मा और प्राण ले ले,
15 तो धरती के सभी व्यक्ति मर जाते,

फिर सभी लोग मिट्टी बन जाते।

16 “यदि तुम लोग विवेकी हो
तो तुम उसे सुनोगे जिसे मैं कहता हूँ।
17 कोई ऐसा व्यक्ति जो न्याय से घृणा रखता है शासक नहीं बन सकता।
अय्यूब, तू क्या सोचता है,
क्या तू उस उत्तम और सुदृढ़ परमेश्वर को दोषी ठहरा सकता है
18 केवल परमेश्वर ऐसा है जो राजाओं से कहा करता है कि ‘तुम बेकार के हो।’
परमेश्वर मुखियों से कहा करता है कि ‘तुम दुष्ट हो।’
19 परमेश्वर प्रमुखों से अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक प्रेम नहीं करता,
और परमेश्वर धनिकों की अपेक्षा गरीबों से अधिक प्रेम नहीं करता है।
क्योंकि सभी परमेश्वर ने रचा है।
20 सम्भव है रात में कोई व्यक्ति मर जाये, परमेश्वर बहुत शीघ्र ही लोगों को रोगी करता है और वे प्राण त्याग देते हैं।
परमेश्वर बिना किसी जतन के शक्तिशाली लोगों को उठा ले जाता है,
और कोई भी व्यक्ति उन लोगों को मदद नहीं दे सकता है।

21 “व्यक्ति जो करता है परमेश्वर उसे देखता है।
व्यक्ति जो भी चरण उठाता है परमेश्वर उसे जानता है।
22 कोई जगह अंधेरे से भरी हुई नहीं है, और कोई जगह ऐसी नहीं है
जहाँ इतना अंधेरा हो कि कोई भी दुष्ट व्यक्ति अपने को परमेश्वर से छिपा पाये।
23 किसी व्यक्ति के लिये यह उचित नहीं है कि
वह परमेश्वर से न्यायालय में मिलने का समय निश्चित करे।

24 परमेश्वर को प्रश्नों के पूछने की आवश्यकता नहीं,
किन्तु परमेश्वर बलशालियों को नष्ट करेगा
और उनके स्थान पर किसी
और को बैठायेगा।
25 सो परमेश्वर जानता है कि लोग क्या करते हैं।
इसलिये परमेश्वर रात में दुष्टों को हरायेगा, और उन्हें नष्ट कर देगा।
26 परमेश्वर बुरे लोगों को उनके बुरे कर्मो के कारण नष्ट कर देगा
और बुरे व्यक्ति के दण्ड को वह सब को देखने देगा।
27 क्योंकि बुरे व्यक्ति ने परमेश्वर की आज्ञा मानना छोड़ दिया
और वे बुरे व्यक्ति परवाह नहीं करते हैं उन कामों को करने की जिनको परमेश्वर चाहता है।
28 उन बुरे लोगों ने गरीबों को दु:ख दिया और उनको विवश किया परमेश्वर को सहायता हेतू पुकारने को।
गरीब सहायता के लिये पुकारता है, तो परमेश्वर उसकी सुनता है।
29 किन्तु यदि परमेश्वर ने गरीब की सहायता न करने का निर्णय लिया तो
कोई व्यक्ति परमेश्वर को दोषी नहीं ठहरा सकता है।
यदि परमेश्वर उनसे मुख मोड़ता है तो कोई भी उस को नहीं पा सकता है।
परमेश्वर जातियों और समूची मानवता पर शासन करता है।
30 तो फिर एक ऐसा व्यक्ति है जो परमेश्वर के विरुद्ध है और लोगों को छलता है,
तो परमेश्वर उसे राजा बनने नहीं दे सकता है।

31 “सम्भव है कि कोई परमेश्वर से कहे कि
मैं अपराधी हूँ और फिर मैं पाप नहीं करूँगा।
32 हे परमेश्वर, तू मुझे वे बातें सिखा जो मैं नहीं जानता हूँ।

यदि मैंने कुछ बुरा किया तो फिर, मैं उसको नहीं करूँगा।
33 किन्तु अय्यूब, जब तू बदलने को मना करता है,
तो क्या परमेश्वर तुझे वैसा प्रतिफल दे,
जैसा प्रतिफल तू चाहता है यह तेरा निर्णय है यह मेरा नहीं है।
तू ही बता कि तू क्या सोचता है
34 कोई भी व्यक्ति जिसमें विवेक है और जो समझता है वह मेरे साथ सहमत होगा।
कोई भी विवेकी जन जो मेरी सुनता, वह कहेगा,
35 अय्यूब, अबोध व्यक्ति के जैसी बातें करता है,
जो बाते अय्यूब करता है उनमें कोई तथ्य नहीं।
36 मेरी यह इच्छा है कि अय्यूब को परखने को और भी अधिक कष्ट दिये जाये।
क्यों क्योंकि अय्यूब हमें ऐसा उत्तर देता है, जैसा कोई दुष्ट जन उत्तर देता हो।
37 अय्यूब पाप पर पाप किए जाता है और उस पर उसने बगावत की।
तुम्हारे ही सामने वह परमेश्वर को बहुत बहुत बोल कर कलंकित करता रहता है!"

35

1 एलीहू कहता चला गया। वह बोला:

2 "अय्यूब, यह तेरे लिये कहना उचित नहीं की
'मैं अय्यूब, परमेश्वर के विरुद्ध न्याय पर है।'
3 अय्यूब, तू परमेश्वर से पूछता है कि
'हे परमेश्वर, मेरा पाप तुझे कैसे हानि पहुँचाता है
और यदि मैं पाप न करूँ तो कौन सी उत्तम वस्तु मुझको मिल जाती है'

4 “अय्यूब, मैं (एलीहू) तुझको और तेरे मित्रों को जो यहाँ तेरे साथ हैं उत्तर देना चाहता हूँ।
5 अय्यूब! उपर देख
आकाश में दृष्टि उठा कि बादल तुझसे अधिक उँचें हैं।
6 अय्यूब, यदि तू पाप करें तो परमेश्वर का कुछ नहीं बिगड़ता,
और यदि तेरे पाप बहुत हो जायें तो उससे परमेश्वर का कुछ नहीं होता।
7 अय्यूब, यदि तू भला है तो इससे परमेश्वर का भला नहीं होता,
तुझसे परमेश्वर को कुछ नहीं मिलता।
8 अय्यूब, तेरे पाप स्वयं तुझ जैसे मनुष्य को हानि पहुँचाते हैं,
तेरे अच्छे कर्म बस तेरे जैसे मनुष्य का ही भला करते हैं।

9 “लोगों के साथ जब अन्याय होता है और बुरा व्यवहार किया जाता है,
तो वे मदद को पुकारते हैं, वे बड़े बड़ों की सहायता पाने को दुहाई देते हैं।
10 किन्तु वे परमेश्वर से सहायता नहीं माँगते।
हीं कहते हैं कि, ‘परमेश्वर जिसने हम को रचा है कहाँ है परमेश्वर जो हताश जन को आशा दिया करता है वह कहाँ है?’
11 वे ये नहीं कहा करते कि,
‘परमेश्वर जिसने पशु पक्षियों से अधिक बुद्धिमान मनुष्य को बनाया है वह कहाँ है’

12 “किन्तु बुरे लोग अभिमानी होते है,
इसलिये यदि वे परमेश्वर की सहायता पाने को दुहाई दें तो उन्हें उत्तर नहीं मिलता है।
13 यह सच है कि परमेश्वर उनकी व्यर्थ की दुहाई को नहीं सुनेगा।
सर्वशक्तिशाली परमेश्वर उन पर ध्यान नहीं देगा।

14 अय्यूब, इसी तरह परमेश्वर तेरी नहीं सुनेगा,
जब तू यह कहता है कि वह तुझको दिखाई नहीं देता
और तू उससे मिलने के अवसर की प्रतीक्षा में है,
और यह प्रमाणित करने की तू निर्दोष है।

15 "अय्यूब, तू सोचता है कि परमेश्वर दुष्टों को दण्ड नहीं देता है
और परमेश्वर पाप पर ध्यान नहीं देता है।
16 इसलिये अय्यूब निज व्यर्थ बातें करता रहता है।
अय्यूब ऐसा व्यवहार कर रहा है कि जैसे वह महत्वपूर्ण है।
check किन्तु यह देखना कितना सरल है कि अय्यूब नहीं जानता कि वह क्या कह रहा है।"

36

1 एलीहू ने बात जारी रखते हुए कहा:

2 "अय्यूब, मेरे साथ थोड़ी देर और धीरज रख।
मैं तुझको दिखाऊँगा की परमेश्वर के पक्ष में अभी कहने को और है।
3 मैं अपने ज्ञान को सबसे बाटूँगा।
मुझको परमेश्वर ने रचा है।
check मैं जो कुछ भी जानता हूँ मैं उसका प्रयोग तुझको यह दिखाने के लिये करूँगा कि परमेश्वर निष्पक्ष है।
4 अय्यूब, तू यह निश्चय जान कि जो कुछ मैं कहता हूँ, वह सब सत्य है।
मैं बहुत विवेकी हूँ और मैं तेरे साथ हूँ।

5 "परमेश्वर शक्तिशाली है
किन्तु वह लोगों से घृणा नहीं करता है।

परमेश्वर सामर्थी है
और विवेकपूर्ण है।
6 परमेश्वर दुष्ट लोगों को जीने नहीं देगा
और परमेश्वर सदा दीन लोगों के साथ खरा व्यवहार करता है।
7 वे लोग जो उचित व्यवहार करते हैं, परमेश्वर उनका ध्यान रखता है।
वह राजाओं के साथ उन्हें सिंहासन देता है और वे सदा आदर पाते हैं।
8 किन्तु यदि लोग दण्ड पाते हों और बेड़ियों में जकड़े हों।
यदि वे पीड़ा भुगत रहे हों और संकट में हो।
9 तो परमेश्वर उनको बतायेगा कि उन्होंने कौन सा बुरा काम किया है।
परमेश्वर उनको बतायेगा कि उन्होंने पाप किये है और वे अहंकारी रहे थे।
10 परमेश्वर उनको उसकी चेतावनी सुनने को विवश करेगा।
वह उन्हें पाप करने को रोकने का आदेश देगा।
11 यदि वे लोग परमेश्वर की सुनेंगे
और उसका अनुसरण करेंगे तो परमेश्वर उनको सफल बनायेगा।
12 किन्तु यदि वे लोग परमेश्वर की आज्ञा नकारेंगे तो वे मृत्यु के जगत में चले जायेंगे,
वे अपने अज्ञान के कारण मर जायेंगे।

13 “ऐसे लोग जिनको परवाह परमेश्वर की वे सदा कड़वाहट से भरे रहे है।
यहाँ तक कि जब परमेश्वर उनको दण्ड देता हैं, वे परमेश्वर से सहारा पाने को विनती नहीं करते।
14 ऐसे लोग जब जवान होंगे तभी मर जायेंगे।
वे अभी भ्रष्ट लोगों के साथ शर्म से मरेंगे।
15 किन्तु परमेश्वर दु:ख पाते लोगों को विपत्तियों से बचायेगा।

परमेश्वर लोगों को जगाने के लिए विपदाएं भेजता है ताकि
लोग उसकी सुने।

16 “अय्यूब, परमेश्वर तुझको तेरी विपत्तियों से दूर करके तुझे सहारा
देना चाहता है।
परमेश्वर तुझे एक विस्तृत सुरक्षित स्थान देना चाहता है
और तेरी मेज पर भरपूर खाना रखना चाहता है।
17 किन्तु अब अय्यूब, तुझे वैसा ही दण्ड मिल रहा है, जैसा दण्ड
मिला करता है दुष्टों को, तुझको परमेश्वर का निर्णय और
खरा न्याय जकड़े हुए है।
18 अय्यूब, तू अपनी नकेल धन दौलत के हाथ में न दे कि वह तुझसे
बुरा काम करवाये।
अधिक धन के लालच से तू मूर्ख मत बन।
19 तू ये जान ले कि अब न तो तेरा समूचा धन तेरी सहायता कर
सकता है और न ही शक्तिशाली व्यक्ति तेरी सहायता कर
सकते हैं।
20 तू रात के आने की इच्छा मत कर जब लोग रात में छिप जाने
का प्रयास करते हैं।
वे सोचते हैं कि वे परमेश्वर से छिप सकते हैं।
21 अय्यूब, बुरा काम करने से तू सावधान रह।
तुझ पर विपत्तियाँ भेजी गई हैं ताकि तू पाप को ग्रहण न करे।

22 “देख, परमेश्वर की शक्ति उसे महान बनाती है।
परमेश्वर सभी से महानतम शिक्षक है।
23 परमेश्वर को क्या करना है, कोई भी व्यक्ति सको बता नहीं
सकता।
कोई भी उससे नहीं कह सकता कि परमेश्वर तूने बुरा किया
है।
24 परमेश्वर के कर्मो की प्रशंसा करना तू मत भूल।

लोगों ने गीत गाकर परमेश्वर के कामों की प्रशंसा की है।
25 परमेश्वर के कर्म को हर कोई व्यक्ति देख सकता है।
दूर देशों के लोग उन कर्मों को देख सकते हैं।
26 यह सच है कि परमेश्वर महान है। उसकी महिमा को हम नहीं समझ सकते हैं।
परमेश्वर के वर्षो की संख्या को कोई गिन नहीं सकता।

27 "परमेश्वर जल को धरती से उपर उठाता है,
और उसे वर्षा के रूप में बदल देता है।
28 परमेश्वर बादलों से जल बरसाता है,
और भरपूर वर्षा लोगों पर गितरी हैं।
29 कोई भी व्यक्ति नहीं समझ सकता कि परमेश्वर कैसे बादलों को बिखराता है,
और कैसे बिजलियाँ आकाश में कड़कती हैं।
30 देख, परमेश्वर कैसे अपनी बिजली को आकाश में चारों ओर बिखेरता है
और कैसे सागर के गहरे भाग को ढक देता है।
31 परमेश्वर राष्ट्रों को नियंत्रण में रखने
और उन्हें भरपूर भोजन देने के लिये इन बादलों का उपयोग करता है।
32 परमेश्वर अपने हाथों से बिजली को पकड़ लेता है और जहाँ वह चाहता हैं,
वहाँ बिजली को गिरने का आदेश देता है।
33 गर्जन, तूफान के आने की चेतावनी देता है।
यहाँ तक की पशू भी जानते हैं कि तूफान आ रहा है।

37

1 "हे अय्यूब, जब इन बातों के विषय में मैं सोचता हूँ,
मेरा हृदय बहुत जोर से धड़कता है।

2 हर कोई सुनों, परमेश्वर की वाणी बादल की गर्जन जैसी सुनाई देती है।
सुनों गरजती हुई ध्वनि को जो परमेश्वर के मुख से आ रही है।
3 परमेश्वर अपनी बिजली को सारे आकाश से होकर चमकने को भेजता है।
वह सारी धरती के ऊपर चमका करती है।
4 बिजली के कौंधने के बाद परमेश्वर की गर्जन भरी वाणी सुनी जा सकती है।
परमेश्वर अपनी अद्भुत वाणी के साथ गरजता है।
जब बिजली कौंधती है तब परमेश्वर की वाणी गरजती है।
5 परमेश्वर की गरजती हुई वाणी अद्भुत है।
वह ऐसे बड़े कर्म करता है, जिन्हें हम समझ नहीं पाते हैं।
6 परमेश्वर हिम से कहता है,
'तुम धरती पर गिरो'
और परमेश्वर वर्षा से कहता है,
'तुम धरती पर जोर से बरसो।'
7 परमेश्वर ऐसा इसलिये करता है कि सभी व्यक्ति जिनको उसने बनाया है
जान जाये कि वह क्या कर सकता है। वह उसका प्रमाण है।
8 पशु अपने खोहों में भाग जाते हैं, और वहाँ ठहरे रहते हैं।
9 दक्षिण से तूफान आते हैं,
और उत्तर से सर्दी आया करती है।
10 परमेश्वर का श्वास बर्फ को रचता है,
और सागरों को जमा देता है।
11 परमेश्वर बादलों को जल से भरा करता है,
और बिजली को बादल के द्वारा बिखेरता है।
12 परमेश्वर बादलों को आने देता है कि वह उड़ कर सब कहीं धरती के ऊपर छा जाये और फिर बादल वहीं करते हैं जिसे करने का आदेश परमेश्वर ने उन्हें दिया है।

13 परमेश्वर बाढ़ लाकर लोगों को दण्ड देने अथवा धरती को जल
देकर अपना प्रेम दर्शाने के लिये बादलों को भेजता है।

14 “अय्यूब, तू क्षण भर के लिये रुक और सुन।
रुक जा और सोच उन अद्भुत कार्यो के बारे में जिन्हें परमेश्वर
किया करता हैं।
15 अय्यूब, क्या तू जानता है कि परमेश्वर बादलों पर कैसे काबू
रखता है क्या तू जानता है कि परमेश्वर अपनी बिजली को
क्यों चमकाता है
16 क्या तू यह जानता है कि आकाश में बादल कैसे लटके रहते हैं।
ये एक उदाहरण मात्र हैं। परमेश्वर का ज्ञान सम्पूर्ण है और ये
बादल परमेश्वर की अद्भुत कृति हैं।
17 किन्तु अय्यूब, तुम ये बातें नहीं जानते।
तुम बस इतना जानते है कि तुमको पसीना आता है और तेरे
वस्त्र तुझ से चिपके रहते हैं, और सब कुछ शान्त व स्थिर
रहता है, जब दक्षिण से गर्म हवा आती है।
18 अय्यूब, क्या तू परमेश्वर की मदद आकाश को फैलाने में और
उसे झलकाये गये दर्पण की तरह चमकाने में कर सकता
है

19 “अय्यूब, हमें बता कि हम परमेश्वर से क्या कहें।
हम उससे कुछ भी कहने को सोच नहीं पाते क्योंकि हम पर्याप्त कुछ
भी नहीं जानते।
20 क्या परमेश्वर से यह कह दिया जाये कि मैं उस के विरोध में
बोलना चाहता हूँ।
यह वैसे ही होगा जैसे अपना विनाश माँगना।
21 देख, कोई भी व्यक्ति चमकते हुए सूर्य को नहीं देख सकता।
जब हवा बादलों को उड़ा देती है उसके बाद वह बहुत उजला
और चमचमाता हुआ होता है।

22 और परमेश्वर भी उसके समान है।
परमेश्वर की सुनहरी महिमा चमकती है।
परमेश्वर अद्भुत महिमा के साथ उत्तर से आता है।
23 सर्वशक्तिमान परमेश्वर सचमुच महान है,
हम परमेश्वर को नहीं जान सकते परमेश्वर सदा ही लोगों के साथ न्याय और निष्पक्षता के साथ व्यवहार करता हैं।
24 इसलिए लोग परमेश्वर का आदर करते हैं,
किन्तु परमेश्वर उन अभिमानी लोगों को आदर नहीं देता है जो स्वयं को बुद्धिमान समझते हैं।”

38

1 फिर यहोवा ने तूफान में से अय्यूब को उत्तर दिया। परमेश्वर ने कहा:

2 “यह कौन व्यक्ति है
जो मूर्खतापूर्ण बातें कर रहा है?”
3 अय्यूब, तुम पुरुष की भाँति सुदृढ़ बनों।
जो प्रश्न मैं पूछूँ उसका उत्तर देने को तैयार हो जाओ।

4 अय्यूब, बताओ तुम कहाँ थे, जब मैंने पृथ्वी की रचना की थी
यदि तू इतना समझदार है तो मुझे उत्तर दे।
5 अय्यूब, इस संसार का विस्तार किसने निश्चित किया था
किसने संसार को नापने के फीते से नापा
6 इस पृथ्वी की नींव किस पर रखी गई है
किसने पृथ्वी की नींव के रूप में सर्वाधिक महत्वपूर्ण पत्थर को रखा है
7 जब ऐसा किया था तब भोर के तारों ने मिलकर गया
और स्वर्गदूत ने प्रसन्न होकर जयजयकार किया।

8 “अय्यूब, जब सागर धरती के गर्भ से फूट पड़ा था,
तो किसने उसे रोकने के लिये द्वार को बन्द किया था।
9 उस समय मैंने बादलों से समुद्र को ढक दिया
और अन्धकार में सागर को लपेट दिया था (जैसे बालक को चादर में लपेटा जाता है।)
10 सागर की सीमाऐं मैंने निश्चित की थीं
और उसे ताले लगे द्वारों के पीछे रख दिया था।
11 मैंने सागर से कहा, ‘तू यहाँ तक आ सकता है किन्तु और अधिक आगे नहीं।
तेरी अभिमानी लहरें यहाँ तक रुक जायेंगी।’

12 “अय्यूब, क्या तूने कभी अपनी जीवन में भोर को आज्ञा दी है
उग आने और दिन को आरम्भ करने की
13 अय्यूब, क्या तूने कभी प्रात: के प्रकाश को धरती पर छा जाने को कहा है
और क्या कभी उससे दुष्टों के छिपने के स्थान को छोड़ने के लिये विवश करने को कहा है
14 प्रात: का प्रकाश पहाड़ों
व घाटियों को देखने लायक बना देता है।
जब दिन का प्रकाश धरती पर आता है
तो उन वस्तुओं के रूप वस्त्र की सलवटों की तरह उभर कर आते हैं।
वे स्थान रूप को नम मिट्टी की तरह
जो दबोई गई मुहर की ग्रहण करते हैं।
15 दुष्ट लोगों को दिन का प्रकाश अच्छा नहीं लगता
क्योंकि जब वह चमचमाता है, तब वह उनको बुरे काम करने से रोकता है।

16 “अय्यूब, बता क्या तू कभी सागर के गहरे तल में गया है?

जहाँ से सागर शुरु होता है क्या तू कभी सागर के तल पर
चला है?

17 अय्यूब, क्या तूने कभी उस फाटकों को देखा है, जो मृत्यु लोक
को ले जाते हैं?
क्या तूने कभी उस फाटकों को देखा जो उस मृत्यु के अन्धेरे
स्थान को ले जाते हैं?

18 अय्यूब, तू जानता है कि यह धरती कितनी बड़ी है?
यदि तू ये सब कुछ जानता है, तो तू मुझकों बता दे।

19 "अय्यूब, प्रकाश कहाँ से आता है?
और अन्धकार कहाँ से आता है?

20 अय्यूब, क्या तू प्रकाश और अन्धकार को ऐसी जगह ले जा
सकता है जहाँ से वे आये है जहाँ वे रहते हैं?
वहाँ पर जाने का मार्ग क्या तू जानता है?

21 अय्यूब, मुझे निश्चय है कि तुझे सारी बातें मालूम हैं? क्योंकि तू
बहुत ही बूढ़ा और बुद्धिमान है।
जब वस्तुऐं रची गई थी तब तू वहाँ था।

22 "अय्यूब, क्या तू कभी उन कोठियारों में गया हैं?
जहाँ मैं हिम और ओलों को रखा करता हूँ

23 मैं हिम और ओलों को विपदा के काल
और युद्ध लड़ाई के समय के लिये बचाये रखता हूँ।

24 अय्यूब, क्या तू कभी ऐसी जगह गया है, जहाँ से सूरज उगता है
और जहाँ से पुरवाई सारी धरती पर छा जाने के लिये आती
है

25 अय्यूब, भारी वर्षा के लिये आकाश में किसने नहर खोदी है,
और किसने भीषण तूफान का मार्ग बनाया है

26 अय्यूब, किसने वहाँ भी जल बरसाया, जहाँ कोई भी नहीं रहता
है
27 वह वर्षा उस खाली भूमि के बहुतायत से जल देता है
और घास उगनी शुरु हो जाती है।
28 अय्यूब, क्या वर्षा का कोई पिता है
ओस की बूँदे कहाँ से आती हैं
29 अय्यूब, हिम की माता कौन है
आकाश से पाले को कौन उत्पन्न करता है
30 पानी जमकर चट्टान सा कठोर बन जाता है,
और सागर की ऊपरी सतह जम जाया करती है।

31 "अय्यूब, सप्तर्षि तारों को क्या तू बाँध सकता है
क्या तू मृगशिरा का बन्धन खोल सकता है
32 अय्यूब, क्या तू तारा समूहों को उचित समय पर उगा सकता है,
अथवा क्या तू भालू तारा समूह की उसके बच्चों के साथ
अगुवाई कर सकता है
33 अय्यूब क्या तू उन नियमों को जानता है, जो नभ का शासन करते
हैं
क्या तू उन नियमों को धरती पर लागू कर सकता है

34 "अय्यूब, क्या तू पुकार कर मेघों को आदेश दे सकता है,
कि वे तुझको भारी वर्षा के साथ घेर ले।
35 अय्यूब बता, क्या तू बिजली को
जहाँ चाहता वहाँ भेज सकता है
और क्या तेरे निकट आकर बिजली कहेगी, "अय्यूब, हम यहाँ
है बता तू क्या चाहता है"

36 "मनुष्य के मन में विवेक को कौन रखता है,

और बुद्धि को कौन समझदारी दिया करता है
37 अय्यूब, कौन इतना बलवान है जो बादलों को गिन ले
और उनको वर्षा बरसाने से रोक दे
38 वर्षा धूल को कीचड़ बना देती है
और मिट्टी के लौंदे आपस में चिपक जाते हैं।

39 "अय्यूब, क्या तू सिंहनी का भोजन पा सकता है
क्या तू भूखे युवा सिंह का पेट भर सकता है
40 वे अपनी खोहों में पड़े रहते हैं
अथवा झाड़ियों में छिप कर अपने शिकार पर हमला करने के लिये बैठते हैं।
41 अय्यूब, कौवे के बच्चे परमेश्वर की दुहाई देते हैं,
और भोजन को पाये बिना वे इधर—उधर घूमतें रहते हैं, तब उन्हें भोजन कौन देता है

39

1 "अय्यूब, क्या तू जानता है कि पहाड़ी बकरी कब ब्याती हैं?
क्या तूने कभी देखा जब हिरणी ब्याती है?
2 अय्यूब, क्या तू जानता है पहाड़ी बकरियाँ और माता हरिणियाँ कितने महीने अपने बच्चे को गर्भ में रखती हैं?
क्या तूझे पता है कि उनका ब्याने का उचित समय क्या है?
3 वे लेट जाती हैं और बच्चों को जन्म देती है,
तब उनकी पीड़ा समाप्त हो जाती है।
4 पहाड़ी बकरियों और हरिणी माँ के बच्चे खेतों में हृष्ट—पुष्ट हो जाते हैं।
फिर वे अपनी माँ को छोड़ देते हैं, और फिर लौट कर वापस नहीं आते।

5 "अय्यूब, जंगली गधों को कौन आजाद छोड़ देता है

किसने उसके रस्से खोले और उनको बन्धन मुक्त किया
6 यह मैं (यहोवा) हूँ जिसने बनैले गधे को घर के रूप में मरुभूमि
दिया।
मैंने उनको रहने के लिये रेही धरती दी।
7 बनैला गधा शोर भरे नगरों के पास नहीं जाता है
और कोई भी व्यक्ति उसे काम करवाने के लिये नहीं साधता
है।
8 बनैले गधे पहाड़ों में घूमते हैं
और वे वहीं घास चरा करते हैं।
वे वहीं पर हरी घास चरने को ढूँढते रहते हैं।

9 "अय्यूब, बता, क्या कोई जंगली सांड़ तेरी सेवा के लिये राजी
होगा
क्या वह तेरे खलिहान में रात को रुकेगा
10 अय्यूब, क्या तू जंगली सांड़ को रस्से से बाँध कर
अपना खेत जुता सकता है क्या घाटी में तेरे लिये वह पटेला
करेगा
11 अय्यूब, क्या तू किसी जंगली सांड़ के भरोसे रह सकता है
क्या तू उसकी शक्ति से अपनी सेवा लेने की अपेक्षा रखता है
12 क्या तू उसके भरोसे है कि वह तेरा अनाज इकट्ठा
तेरे और उसे तेरे खलिहान में ले जाये

13 "शुतुरमुर्ग जब प्रसन्न होता है वह अपने पंख फड़फड़ाता है किन्तु
शुतुरमुर्ग उड़ नहीं सकता।
उसके पर और पंख सारस के जैसे नहीं होते।
14 शुतुरमुर्ग धरती पर अण्डे देती है,
और वे रेत में सेये जाते हैं।
15 किन्तु शुतुरमुर्ग भूल जाता है कि कोई उसके अण्डों पर से चल
कर उन्हें कुचल सकता है,
अथवा कोई बनैला पशु उनको तोड़ सकता है।

16 शुतुरमुर्ग अपने ही बच्चों पर निर्दयता दिखाता है
जैसे वे उसके बच्चे नहीं है।
यदि उसके बच्चे मर भी जाये तो भी उसको उसकी चिन्ता नहीं है।
17 ऐसा क्यों क्योंकि मैंने (परमेश्वर) उस शुतुरमुर्ग को विवेक नहीं दिया था।
शुतुरमुर्ग मूर्ख होता है, मैंने ही उसे ऐसा बनाया है।
18 किन्तु जब शुतुरमुर्ग दौड़ने को उठती है तब वह घोड़े और उसके सवार पर हँसती है,
क्योंकि वह घोड़े से अधिक तेज भाग सकती है।

19 "अय्यूब, बता क्या तूने घोड़े को बल दिया
और क्या तूने ही घोड़े की गर्दन पर अयाल जमाया है?
20 अय्यूब, बता जैसे टिड्डी कूद जाती है क्या तूने वैसा घोड़े को कुदाया है?
घोड़ा घोर स्वर में हिनहिनाता है और लोग डर जाते हैं।
21 घोड़ा प्रसन्न है कि वह बहुत बलशाली है
और अपने खुर से वह धरती को खोदा करता है। युद्ध में जाता हुआ घोड़ा तेज दौड़ता है।
22 घोड़ा डर की हँसी उड़ाता है क्योंकि वह कभी नहीं डरता।
घोड़ा कभी भी युद्ध से मुख नहीं मोड़ता है।
23 घोड़े की बगल में तरकस थिरका करते हैं।
उसके सवार के भाले और हथियार धूप में चमचमाया करते हैं।
24 घोड़ा बहुत उत्तेजित है, मैदान पर वह तीव्र गति से दौड़ता है।
घोड़ा जब बिगुल की आवाज सुनता है तब वह शान्त खड़ा नहीं रह सकता।
25 जब बिगुल की ध्वनि होती है घोड़ा कहा करता है "अहा!"

वह बहुत ही दूर से युद्ध को सूँघ लेता हैं।
वह सेना के नायकों के घोष भरे आदेश और युद्ध के अन्य सभी शब्द सुन लेता है।

26 “अय्यूब, क्या तूने बाज को सिखाया अपने पंखो को फैलाना और दक्षिण की ओर उड़ जाना?
27 अय्यूब, क्या तू उकाब को उड़ने की
और ऊँचे पहाड़ों में अपना घोंसला बनाने की आज्ञा देता है?
28 उकाब चट्टान पर रहा करता है।
उसका किला चट्टान हुआ करती है।
29 उकाब किले से अपने शिकार पर दृष्टि रखता है।
वह बहुत दूर से अपने शिकार को देख लेता है।
30 उकाब के बच्चे लहू चाटा करते हैं
और वे मरी हुई लाशों के पास इकट्ठे होते हैं।”

40

1 यहोवा ने अय्यूब से कहा:

2 “अय्यूब तूने सर्वशक्तिमान परमेश्वर से तर्क किया।
तूने बुरे काम करने का मुझे दोषी ठहराया।
अब तू मुझको उत्तर दे।”

3 इस पर अय्यूब ने उत्तर देते हुए परमेश्वर से कहा:

4 “मैं तो कुछ कहने के लिये बहुत ही तुच्छ हूँ।
मैं तुझसे क्या कह सकता हूँ
मैं तुझे कोई उत्तर नहीं दे सकता।
मैं अपना हाथ अपने मुख पर रख लूँगा।

5 मैंने एक बार कहा किन्तु अब मैं उत्तर नहीं दूँगा।
फिर मैंने दोबारा कहा किन्तु अब और कुछ नहीं बोलूँगा।"

6 इसके बाद यहोवा ने आँधी में बोलते हुए अय्यूब से कहा:

7 अय्यूब, तू पुरुष की तरह खड़ा हो,
मैं तुझसे कुछ प्रश्न पूछूँगा और तू उन प्रश्नों का उत्तर मुझे देगा।

8 अय्यूब क्या तू सोचता है कि मैं न्यायपूर्ण नहीं हूँ
क्या तू मुझे बुरा काम करने का दोषी मानता है ताकि तू यह दिखा सके कि तू उचित है
9 अय्यूब, बता क्या मेरे शस्त्र इतने शक्तिशाली हैं जितने कि मेरे शस्त्र हैं
क्या तू अपनी वाणी को उतना ऊँचा गरजा सकता है जितनी मेरी वाणी है
10 यदि तू वैसा कर सकता है तो तू स्वयं को आदर और महिमा दे
तथा महिमा और उज्वलता को उसी प्रकार धारण कर जैसे कोई वस्त्र धारण करता है।
11 अय्यूब, यदि तू मेरे समान है, तो अभिमानी लोगों से घृणा कर।
अय्यूब, तू उन अहंकारी लोगों पर अपना क्रोध बरसा और उन्हें तू विनम्र बना दे।
12 हाँ, अय्यूब उन अहंकारी लोगों को देख और तू उन्हें विनम्र बना दे।
उन दुष्टों को तू कुचल दे जहाँ भी वे खड़े हों।
13 तू सभी अभिमानियों को मिट्टी में गाड़ दे
और उनकी देहों पर कफन लपेट कर तू उनको उनकी कब्रों में रख दे।
14 अय्यूब, यदि तू इन सब बातों को कर सकता है

तो मैं यह तेरे सामने स्वीकार करूँगा कि तू स्वयं को बचा
सकता है।

15 “अय्यूब, देख तू, उस जलगज को
मैंने (परमेश्वर) ने बनाया है और मैंने ही तुझे बनाया है।
जलगज उसी प्रकार घास खाती है, जैसे गाय घास खाती है।
16 जलगज के शरीर में बहुत शक्ति होती है।
उसके पेट की माँसपेशियाँ बहुत शक्तिशाली होती हैं।
17 जल गज की पूँछ दृढ़ता से ऐसी रहती है जैसा देवदार का वृक्ष
खड़ा रहता है।
उसके पैर की माँसपेशियाँ बहुत सुदृढ़ होती हैं।
18 जल गज की हड्डियाँ काँसे की भाँति सुदृढ़ होती है,
और पाँव उसके लोहे की छड़ों जैसे।
19 जल गज पहला पशु है जिसे मैंने (परमेश्वर) बनाया है
किन्तु मैं उस को हरा सकता हूँ।
20 जल गज जो भोजन करता है उसे उसको वे पहाड़ देते हैं
जहाँ बनैले पशु विचरते हैं।
21 जल गज कमल के पौधे के नीचे पड़ा रहता है
और कीचड़ में सरकण्ड़ों की आड़ में छिपा रहता है।
22 कमल के पौधे जलगज को अपनी छाया में छिपाते है।
वह बाँस के पेड़ों के तले रहता हैं, जो नदी के पास उगा करते
है।
23 यदि नदी में बाढ़ आ जाये तो भी जल गज भागता नहीं है।
यदि यरदन नदी भी उसके मुख पर थपेड़े मारे तो भी वह डरता
नहीं है।
24 जल गज की आँखों को कोई नहीं फोड़ सकता है
और उसे कोई भी जाल में नहीं फँसा सकता।

41

1 “अय्यूब, बता, क्या तू लिब्यातान (सागर के दैत्य) को
किसी मछली के काँटे से पकड़ सकता है?
2 अय्यूब, क्या तू लिब्यातान की नाक में नकेल डाल सकता है?
अथवा उसके जबड़ों में काँटा फँसा सकता है?
3 अय्यूब, क्या लिब्यातान आजाद होने के लिये तुझसे विनती करेगा
क्या वह तुझसे मधुर बातें करेगा?
4 अय्यूब, क्या लिब्यातान तुझसे सन्धि करेगा?
और सदा तेरी सेवा का तुझे वचन देगा?
5 अय्यूब, क्या तू लिब्यातान से वैसे ही खेलेगा जैसे तू किसी चिड़ियाँ से खेलता है?
क्या तू उसे रस्से से बांधेगा जिससे तेरी दासियाँ उससे खेल सकें
6 अय्यूब, क्या मछुवारे लिब्यातान को तुझसे खरीदने का प्रयास करेंगे?
क्या वे उसको काटेंगे और उन्हें व्यापारियों के हाथ बेच सकेंगे
7 अय्यूब, क्या तू लिब्यातान की खाल में और माथे पर भाले फेंक सकता है?

8 “अय्यूब, लिब्यातान पर यदि तू हाथ डाले तो जो भयंकर युद्ध होगा, तू कभी भी भूल नहीं पायेगा?
और फिर तू उससे कभी युद्ध न करेगा।
9 और यदि तू सोचता है कि तू लिब्यातान को हरा देगा
तो इस बात को तू भूल जा।
क्योंकि इसकी कोई आशा नहीं है।
तू तो बस उसे देखने भर से ही डर जायेगा।
10 कोई भी इतना वीर नहीं है,
जो लिब्यातान को जगा कर भड़काये।

तो फिर अय्यूब बता, मेरे विरोध में कौन टिक सकता है
11 मुझको (परमेश्वर को) किसी भी व्यक्ति कुछ नहीं देना है।
सारे आकाश के नीचे जो कुछ भी है, वह सब कुछ मेरा ही है।

12 अय्यूब, मैं तुझको लिब्यातान के पैरों के विषय में बताऊँगा।
मैं उसकी शक्ति और उसके रूप की शोभा के बारे में बताऊँगा।
13 कोई भी व्यक्ति उसकी खाल को भेद नहीं सकता।
उसकी खाल दुहरा कवच के समान हैं।
14 लिब्यातान को कोई भी व्यक्ति मुख खोलने के लिये विवश नहीं कर सकता है।
उसके जबड़े के दाँत सभी को भयभीत करते हैं।
15 लिब्यातान की पीठ पर ढालों की पंक्तियाँ होती है,
जो आपस में कड़ी छाप से जुड़े होते हैं।
16 ये ढ़ाले आपस में इतनी सटी होती हैं
कि हवा तक उनमें प्रवेश नहीं कर पाती है।
17 ये ढाले एक दूसरे से जुड़ी होती हैं।
वे इतनी मजबूती से एक दूसरे से जुडी हुई है कि कोई भी उनको उखाड़ कर अलग नहीं कर सकता।
18 लिब्यातान जब छींका करता है तो ऐसा लगता है जैसे बिजली सी कौंध गई हो।
आँखे उसकी ऐसी चमकती है जैसे कोई तीव्र प्रकाश हो।
19 उसके मुख से जलती हुई मशालें निकलती है
और उससे आग की चिंगारियाँ बिखरती हैं।
20 लिब्यातान के नथुनों से धुआँ ऐसा निकलता है,
जैसे उबलती हुई हाँडी से भाप निकलता हो।
21 लिब्यातान की फूँक से कोपले सुलग उठते हैं
और उसके मुख से डर कर दूर भाग जाया करते हैं।
22 लिब्यातान की शक्ति उसके गर्दन में रहती हैं,

और लोग उससे डर कर दूर भाग जाया करते हैं।
23 उसकी खाल में कही भी कोमल जगह नहीं है।
वह धातु की तरह कठोर हैं।
24 लिब्यातान का हृदय चट्टान की तरह होता है, उसको भय नहीं है।
वह चक्की के नीचे के पाट सा सुदृढ़ है।
25 लिब्यातान जागता है, बली लोग डर जाते हैं।
लिब्यातान जब पूँछ फटकारता है, तो वे लोग भाग जाते हैं।
26 लिब्यातान पर जैसे ही भाले, तीर और तलवार पड़ते है
वे उछल कर दूर हो जाते है।
27 लोहे की मोटी छड़े वह तिनसे सा
और काँसे को सड़ी लकड़ी सा तोड़ देता है।
28 बाण लिब्यातान को नहीं भगा पाते हैं,
उस पर फेंकी गई चट्टाने सूखे तिनके की भाँति हैं।
29 लिब्यातान पर जब मुगदर पड़ता है तो उसे ऐसा लगता है मानों वह कोई तिनका हो।
जब लोग उस पर भाले फेंकते हैं, तब वह हँसा करता है।
30 लिब्यातान की देह के नीचे की खाल टूटे हुऐ बर्तन के कठोर व पैने टुकड़े सा है।
वह जब चलता है तो कीचड़ में ऐसे छोड़ता है। मानों खलिहान में पाटा लगाया गया हो।
31 लिब्यातान पानी को यूँ मथता है, मानों कोई हँड़ियाँ उबलती हो।
वह ऐसे बुलबुले बनाता है मानों पात्र में उबलता हुआ तेल हो।
32 लिब्यातान जब सागर में तैरता है तो अपने पीछे वह सफेद झागों जैसी राह छोड़ता है,
जैसे कोई श्वेत बालों की विशाल पूँछ हो।
33 लिब्यातान सा कोई और जन्तु धरती पर नहीं है।
वह ऐसा पशु है जिसे निर्भय बनाया गया।
34 वह अत्याधिक गर्वीले पशुओं तक को घृणा से देखता है।

सभी जंगली पशुओं का वह राजा हैं।
मैंने (यहोवा) लिब्यातान को बनाया है।”

42

अय्यूब का यहोवा को उत्तर

1 इस पर अय्यूब ने यहोवा को उत्तर देते हुए कहा:

2 “यहोवा, मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है।
तू योजनाऐं बना सकता है और तेरी योजनाओं को कोई भी नहीं बदल सकता और न ही उसको रोका जा सकता है।
3 यहोवा, तूने यह प्रश्न पूछा कि “यह अबोध व्यक्ति कौन है जो ये मूर्खतापूर्ण बातें कह रहा है”
यहोवा, मैंने उन चीजों के बारे में बातें की जिन्हें मैं समझता नहीं था।
यहोवा, मैंने उन चीजों के बारे में बातें की जो मेरे समझ पाने के लिये बहुत अचरज भरी थी।

4 यहोवा, तूने मुझसे कहा, “हे अय्यूब सुन और मैं बोलूँगा।
मैं तुझसे प्रश्न पूछूँगा और तू मुझे उत्तर देगा।”
5 यहोवा, बीते हुए काल में मैंने तेरे बारे में सुना था
किन्तु स्वयं अपनी आँखों से मैंने तुझे देख लिया है।
6 अत: अब मैं स्वयं अपने लिये लज्जित हूँ।
यहोवा मुझे खेद है
धूल और राख में बैठ कर
मैं अपने हृदय और जीवन को बदलने की प्रतिज्ञा करता हूँ।”

यहोवा का अय्यूब की सम्पत्ति को लौटाना

7 यहोवा जब अय्यूब से अपनी बात कर चुका तो यहोवा ने तेमान
के निवासी एलीपज से कहा: “मैं तुझसे और तेरे दो मित्रों से क्रोधित
हूँ क्योंकि तूने मेरे बारे में उचित बातें नहीं कही थीं। किन्तु अय्यूब
ने मेरे बारे में उचित बातें कहीं थीं। अय्यूब मेरा दास है। 8 इसलिये
अब एलीपज तुम सात सात बैल और सात भेड़ें लेकर मेरे दास
अय्यूब के पास जाओ और अपने लिये होमबलि के रुप में उनकी
भेंट चढ़ाओं। मेरा सेवक अय्यूब तुम्हारे लिए प्रार्थना करेगा। तब
निश्चय ही मैं उसकी प्रार्थना का उत्तर दूँगा। फिर मैं वैसा दण्ड नहीं
दूँगा जैसा दण्ड दिया जाना चाहिये था क्योंकि तुम बहुत मूर्ख थे।
मेरे बारे मैं तुमने उचित बातें नहीं कहीं जबकि मेरे सेवक अय्यूब ने
मेरे बारे में उचित बातें कहीं थीं।”

9 सो तेमान नगर के निवासी एलीपज और शूह गाँव के बिल्दद
तथा नामात गाँव के निवासी सोपर ने यहोवा की आज्ञा का पालन
किया। इस पर यहोवा ने अय्यूब की प्रार्थना सुन ली।

10 इस प्रकार जब अय्यूब अपने मित्रों के लिये प्रार्थना कर चुका
तो यहोवा ने अय्यूब की फिर सफलता प्रदान की। परमेश्वर ने जितना
उसके पास पहले था, उससे भी दुगुना उसे दे दिया। 11 अय्यूब के
सभी भाई और बहनें अय्यूब के घर वापस आ गये और हर कोई जो
अय्यूब को पहले जानता था, उसके घर आया। अय्यूब के साथ उन
सब ने एक बड़ी दावत में खाना खाया। क्योंकि यहोवा ने अय्यूब
को बहुत कष्ट दिये थे, इसलिये उन्होंने अय्यूब को सान्त्वना दी।
हर किसी व्यक्ति ने अय्यूब को चाँदी का एक सिक्का और सोने की
एक अंगूठी भेंट में दीं।

12 यहोवा ने अय्यूब के जीवन के पहले भाग से भी अधिक उसके
जीवन के पिछले भाग को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। अय्यूब
के पास चौदह हजार भेड़ें छ: हजार ऊँट, दो हजार बैल तथा एक
हजार गधियाँ हो गयीं। 13 अय्यूब के सात पुत्र और तीन पुत्रियाँ

भी हो गयीं। 14 अय्यूब ने अपनी सबसे बड़ी पुत्री का नाम रखा
यमीमा। दूसरी पुत्री का नाम रखा कसीआ। और तीसरी का नाम
रखा केरेन्हप्पूक। 15 सारे प्रदेश में अय्यूब की पुत्रियाँ सबसे सुन्दर
स्त्रियाँ थीं। अय्यूब ने अपने पुत्रों को साथ अपनी सम्पत्ति का एक
भाग अपनी पुत्रियाँ को भी उत्तराधिकार में दिया।

16 इसके बाद अय्यूब एक सौ चालीस साल तक और जीवित
रहा। वह अपने बच्चों, अपने पोतों, अपने परपोतों और परपोतों की
भी संतानों यानी चार पीढ़ियों को देखने के लिए जीवित रहा। 17 जब
अय्यूब की मृत्यु हुई, उस समय वह बहुत बूढ़ा था। उसे बहुत अच्छा
और लम्बा जीवन प्राप्त हुआ था।

पवित्र बाइबल
The Holy Bible, Easy Reading Version, in Hindi

copyright © 1992-2010 World Bible Translation Center

Language: हिंदी (Hindi)

Translation by: World Bible Translation Center

License Agreement for Bible Texts World Bible Translation Center Last Updated: September 21, 2006 Copyright © 2006 by World Bible Translation Center All rights reserved. These Scriptures: • Are copyrighted by World Bible Translation Center. • Are not public domain. • May not be altered or modified in any form. • May not be sold or offered for sale in any form. • May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space). • May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included. • May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSIONTM © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSIONTM." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read VersionTM in English) must appear at the end of each quotation. Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com. World Bible Translation Center P.O. Box 820648 Fort Worth, Texas 76182, USA Telephone: 1-817-595-1664 Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE E-mail: info@wbtc.com WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

2019-11-15

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 8 Sep 2021 from source files dated 18 Aug 2021

7f0fcd5b-bc85-55f6-933a-0de82e7ef275